



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4
PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 5]

नई दिल्ली, बुधवार, मई 11, 1983/वैशाख 21, 1905

No. 5] NEW DELHI, WEDNESDAY, MAY 11, 1983/VAISAKHA 21, 1905

इस भाग में भिन्न पाँड संख्या वाली जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate
compilation

होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद्

अधिसूचना

नई दिल्ली, 11 मई 1983

संख्या : 7-1/83- सौ० सौ० एच :—केन्द्रीय सरकार
होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद अधिनियम, 1973 की धारा 20
की उपधारा (ii) और धारा 33 के खण्ड (अ) (ब)
और (ट) द्वारा प्रवत्त प्रक्रियों का प्रयोग करते हुए, और
केन्द्रीय सरकार की पूर्व मंजूरी से निम्नलिखित विनियम
बनाती, अर्थात् :—

भाग-1

प्रारंभिक

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ : (1) इन विनियमों का
संक्षिप्त नाम होम्योपैथी (डिग्री पाठ्यक्रम) विनियम 1980
है।

(2) ये भारत के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को
प्रवृत्त होंगे।

परिभाषाएँ : इन विनियमों में जब तक कि संदर्भ से
अस्थाया अपेक्षित न हो, —

- (i) “अधिनियम” से होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद अधिनियम,
1973 (1973 का 59) अभिप्रेत है;
- (ii) “पाठ्यक्रमों” से अभिप्रेत है होम्योपैथी में
पाठ्यक्रम, अर्थात्
- (क) डी० एच० एम० एस० (डिप्लोमा इन होम्यो-
पैथिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी) पाठ्यक्रम,
और
- (ख) बी० एच० एम० एस० (बेथलर आफ
होम्योपैथिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी);
- (iii) “डिप्लोमा” से अभिप्रेत है, होम्योपैथी (डिप्लोमा
पाठ्यक्रम) विनियम 1980 के विनियम 2 के
खण्ड (iii) में यथा परिभाषित होम्योपैथी
डिप्लोमा ;
- (iv) “डिग्री” से अभिप्रेत है, इन विनियमों के विनियम
3 में यथा उपबंधित होम्योपैथी डिग्री या

होम्योपैथी (श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 के विनियम 2 के खण्ड (iv) में यथा परिभाषित कोई डिग्री ;

- (v) “होम्योपैथी महाविद्यालय” से अभिप्रेत है, किसी बोर्ड या विश्वविद्यालय से सम्बद्ध और केन्द्रीय सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त कोई होम्योपैथी महाविद्यालय ;
- (vi) “निरीक्षक” से अभिप्रेत है, अधिनियम की धारा 17 की उरधारा (i) के अधीन नियुक्त कोई आयुर्विज्ञान निरीक्षक ;
- (vii) “अध्यक्ष” से केन्द्रीय परिषद का अध्यक्ष अभिप्रेत है ;
- (viii) “द्वितीय अनुसूची” और “तृतीय अनुसूची” से अधिनियम की क्रमांक द्वितीय और तृतीय अनुसूचियां अभिप्रेत हैं ;
- (ix) “पाठ्यविवरण” और “पाठ्यचर्चा” से अभिप्रेत है इन विनियमों, होम्योपैथी (डिप्लोमा पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 और होम्योपैथी (श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम) विनियम, 1980 के अधीन केन्द्रीय परिषद द्वारा यथा विनिर्दिष्ट विभिन्न पाठ्यक्रमों का पाठ्यविवरण और पाठ्यचर्चा ;
- (x) “अध्यापन अनुभव” से अभिप्रेत है, केन्द्रीय परिषद द्वारा मान्यताप्राप्त किसी होम्योपैथी महाविद्यालय या किसी अस्पताल में संबंधित विषय से अध्यापन अनुभव ;
- (xi) “परिदर्शक” से अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) के अधीन नियुक्त किया गया परिदर्शक अभिप्रेत है ।

भाग-2

3. पाठ्यक्रम :

- (i) बी० एच० एम० एस० होम्योपैथी (डिग्री) के डिग्री पाठ्यक्रम में ऐसा कोई पाठ्यक्रम समाविष्ट है जो इन विनियमों में उपलब्धित पाठ्यविवरण और पाठ्यचर्चा से मिलकर बना है तथा जो 5½ वर्ष में पूरा होता है । इसके अन्तर्गत अन्तिम डिग्री परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के पश्चात एक वर्ष की अन्तःशिक्षुता भी है ;
- (ii) अन्तःशिक्षुता, होम्योपैथी महाविद्यालय से सम्बद्ध अस्पताल में और अस्पताल में अपने सभी विद्यार्थियों के लिए अन्तःशिक्षुता की व्यवस्था नहीं हो तो ऐसे विद्यार्थी अन्तःशिक्षुता ऐसे अस्पताल या औषधालय में प्राप्त कर सकते हैं जिसका संचालन केन्द्रीय सरकार कोई राज्य सरकार या स्थानीय निकाय करता ही ;
- (iii) विनिर्दिष्ट अवधि की अन्तःशिक्षुता पूरी हो जाने और उस संस्था के जिसमें अन्तःशिक्षुता प्राप्त

की गई है, प्रधान की सिक्कारिस पर संबंधित राज्य बोर्ड या विश्वविद्यालय सफल अस्यर्थियों को डिग्री प्रदान करेगा ।

भाग-3

पाठ्यक्रम में प्रवेश

4. न्यूनतम अर्हता : ऐसे अस्यर्थी को ही बी० एच० एम० एस० (डिग्री) पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाएगा जिसने—
 - (क) अपने विषयों के रूप में भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान में इण्टरर्मीडिएट विज्ञान परीक्षा या समलूप्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है ;
 - (ख) उस वर्ष के 31 दिसम्बर को या उसके पूर्व, जिसने वह पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष में प्रवेश ले, 17 वर्ष की आयु पूरी कर ली हो ।

भाग-4

पाठ्यचर्चा

5. विषय : बी० एच० एम० एस० (डिग्री) पाठ्यक्रम के अध्यापन और परीक्षा के लिए विषय निम्नलिखित है, अर्थात्—

- (i) शरीर रचना विज्ञान,
- (ii) शरीर क्रिया विज्ञान,
- (iii) औषधि आर्गेन्टन,
- (iv) चिरकालिक रोग और होम्योपैथी दर्शन,
- (v) मनोविज्ञान और तर्कशास्त्र के मूल सिद्धांत
- (vi) रोगीवृत्त लैसा और होम्योपैथी रिपर्टरीकरण,
- (vii) होम्योपैथी भेषजी,
- (viii) होम्योपैथी मैटीरिया मैडिका,
- (ix) विकृति विज्ञान जीवाणु विज्ञान और परजीवी विज्ञान,
- (x) सामाजिक और निरीधक आयुर्विज्ञान जिसमें स्वास्थ्य शिक्षा और वंश आयुर्विज्ञान सम्मिलित है,
- (xi) व्यवहार आयुर्विज्ञान,
- (xii) आयुर्विज्ञान और बाल आयुर्विज्ञान का व्यवसाय
- (xiii) प्रसूति विज्ञान और स्त्रीरोग विज्ञान
- (xiv) शल्यक्रिया, जिसमें कर्ण नासिका कंठ और नेत्र विकृति सम्मिलित हैं,
- (xv) होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र और
- (xvi) आयुर्विज्ञान का इतिहास ।

भाग-3
पाठ्य-विवरण

6. सीधे डिग्री पाठ्यक्रम के लिए पाठ्यचयन : बी० एच० एम० एस० (सीधा डिग्री) पाठ्यक्रम के लिए पाठ्य-विवरण निम्नलिखित है अर्थात् :-

भूमिका

भारत में एक रूप होम्योपैथी शिक्षा का स्वरूप अन्ततः सीधा डिग्री पाठ्यक्रम ही होगा यद्यपि अनेक कारणोंबश डिप्लोमा पाठ्यक्रम और श्रेणीकृत डिग्री पाठ्यक्रम भी कुछ समय तक बने रहेंगे ।

जहां कहां संभव है सीधा डिग्री पाठ्यक्रम प्रारंभ किया जा रहा है । अतः यह संभव है कि शीघ्र ही वेश में सर्वन्न महाविद्यालय स्थापित हो जाएंगे । चूंकि इस पाठ्यक्रम से कुछ समय में ही भारत में होम्योपैथी शिक्षा और व्यवसाय के मानक निश्चित हो जाएंगे । अतः यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि इस उद्देश्य की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए, पाठ्य-विवरण तैयार किया जाए ।

परिणामतः निम्नलिखित पाठ्य-विवरण में यह सुनिश्चित करने का प्रयत्न किया गया है कि डिग्री महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों को अपेक्षित स्वरूप की शिक्षा प्रदान करें ।

बी० एच० एम० एस० प्रथम परीक्षा

होम्योपैथी भेषजी

सैद्धान्तिक

1. प्रस्तावना : होम्योपैथी भेषजी, उसकी विशिष्टता तथा मौलिकता, होम्योपैथी फार्मैकोपिया (भेषजशेष) ।

2. निम्नलिखित के संबंध में होम्योपैथी भेषजी का प्रविषय :—

- (1) औषधि आर्गेनन (सूत्र 264 से 285 औषधि आर्गेनन)
- (2) मैटीरिया मैडिका,
- (3) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था ।

3. होम्यो-मापनाम सहित भार और माप (डैसी० सेन्टी० मिली०) ।

4. होम्योपैथी फार्मस्युटिकल उपकरण और साधिक्षा ।

5. होम्योपैथी औषधियों के स्रोत, औषध-पश्चारों का संग्रहण, पहचान, शोधन, अनुरक्षण और शक्तिकृत औषधियों का अनुरक्षण ।

6. अनुपान :—

- (1) उनकी तैयारी और प्रयोग,
- (2) शोधन,
- (3) एल्कोहल की प्रमाण सामर्थ्य ।

7. कार्बनिक और रसायनों, अमूर्सम्पत्तियों पशुओं और पशु उत्पादों, रोगोत्पादों (नोसोडस) आदि से औषधियां बनाने कों पद्धतियां ।

(हेतीमन की शास्त्रीय पद्धतियां और आधुनिक पद्धतियां उनके गुण और अवगुण)

8. (क) मूल टिथर घोल शक्तिकृत औषधि और संपेषण बनाने की पद्धतियां ।

(ख) (1) डेसीमल (दशमलव) माप

(2) सेन्टीसिमल (सेन्टीसीमल) माप के अनुसार औषधियों का शक्तिकरण ।

9. प्रद्रावण (फ्लविसिवन शक्ति) —

—संपेषण के द्रव रूप में परिवर्तित करने की पद्धतियां

—सीधी शक्ति (स्ट्रेट पोटेंसी) ।

10. बाह्य प्रयोग —उसका प्रविषय —लौशन, लिनिमेंट ग्लिसैरोल और महत्व बनाने और उनके प्रयोग की पद्धतियां ।

11. नुस्खा —उसका अध्ययन, जिसमें उसके संभेपाक्षर भी हैं —नुस्खा लिखने और उसकी प्रमाणिकता के सिद्धान्त और पद्धति ।

12. भेषणगुण विज्ञान — औषधि सामर्थ्य —गैर भेषज शिक्षा विज्ञान —गति की शक्ति औषधि —पागोलोजी —उपचार ।

13. औषधियों और अनुपानों के मानकीकरण का संक्षिप्त अध्ययन ।

14. होम्योपैथी भेषजी संबंध विधान का सामान्य ज्ञान ।

15. सामान्य प्रयोगशाला पद्धतियां, घोल, तनसा, निस्तारण, निस्पन्दन अवक्षेपण, आसवन, क्रिस्टलन, उदासीकरण, (सब्लीमेशन), परिक्लवण आदि ।

16. कुछ महत्वपूर्ण औषध पदार्थों के जैव/भौतिक और/या रसायनिक गुणों का अध्ययन ।

17. होम्योपैथी औषधि पूर्विग प्रविधि ।

प्रयोगात्मक

1. होम्योपैथी फार्मस्युटिकल उपकरण और साधिक्षों की पहचान और प्रयोग तथा उनकी सफाई ।

2. महत्वपूर्ण होम्योपैथी औषधियों की पहचान । (संलग्न सूची देखिए)

(क) स्थूल (मेकासकोपिक) :—

- (i) कम से कम 30 श्रीष्ठि पदार्थ —20 वनस्पति क्षेत्र से और 10 खनिजों और रसायनों में से ।

(ii) वनस्पति संग्रह के लिए 30 औषधि पदार्थों का संग्रहण।

(iii) 3X शक्ति तक के दो संपैषणों का सूक्ष्म अध्ययन।

3. बाटरबाथ के साथ एक औषधि पदार्थ के आवृत्ति स्थिरांक (मोइस्पर कान्सटेंट) का अनुमान लगाना।

4. एथिल एल्कोहल, आमुत जल, दुग्ध शक्तरा की शुद्धता परीक्षण, जिसमें आमुत जल और एल्कोहल के अधिनिर्दिष्ट घनत्व का अवधारण सम्मिलित है।

5. ग्लोब्यूल के आकार का अनुमान —उसका औषध प्रयोग, दुग्ध शक्तरा और आमुत जल का औषध प्रयोग — खुराक तैयार करना।

6. औषधि योजन और तनु एल्कोहल थोल और तनु-करणों की तैयारी।

7. 3 पालीओस्टों के मूल टिचरों को तैयार करना।

8. 3X तक की 3 अपरिकृत औषधियों के संपैषणों की तैयारी।

9. उन औषधियों के, जो डी० सी० आई० के अनुरूप नहीं हैं, मूल टिचर तैयार करना।

10. 3 मूल टिचरों का डेसिमल माप और 3 का सेन्टी-सिमल माप तक शक्तिकरण।

11. 6X की 3 औषधियों का संपैषण और उनका द्रव शक्तियों में परिवर्तन।

12. बाह्य प्रयोग की औषधियां तैयार करना —प्रत्येक एक।

13. नुस्खे लिखना उनका औषधि योजन।

14. प्रयोगशाला पद्धतियाँ :-

(क) उवासीकरण,

(ख) आसवन,

(ग) नितारना (डिस्टीलेशन),

(घ) निस्पंदन (फिल्टरेशन),

(ड) फ्रिस्टलन,

(ज) परिमलण (परकोलेशन)।

15. बड़े पैमाने पर औषधियों के विनिर्माण के अध्ययन लिए होम्योपैथी प्रयोगशाला में जाना।

अभियान के लिए औषधियों की सूची

1. कोनाइट नैप
2. एरैरिक्स मसकैरियस
3. एण्टोमोनियम टार्ट
4. एपिस मेलिफिका
5. अजैंटम नाईट्रिकम
6. आनिका माण्ट
7. आर्सनिकम एल्ब
8. औरम भेटालिकम

9. बैफटीशिया
10. बैरापटा कार्ब
11. बैलाढोना
12. ब्रायोनियम एल्ब
13. फैक्टस ग्रेण्डी
14. कैलकेरिया कार्ब
15. कैलकेरिया फास
16. कैलेन्स्ला
17. कैम्फर
18. कैम्परिस
19. कार्यों वेजीटीलिस
20. कास्टिकम
21. कैमोमिला
22. चेलीडोनियम भैंजस
23. चायना
24. सिना
25. काकुलस इन्डिकस
26. कोल्चकम
27. कॉलोसिन्थ
28. कॉनिथम मैक
29. कूप्रम मैट
30. डिजीटेलिस पुरपुरा
31. छोसेरा
32. डलकामारा
33. ग्लोनायन
34. ग्रैफाइटीज
35. हीपर सल्फर
36. हायोसियामस नाइगर
37. हाइपैरिकम
38. हग्नेशिया
39. इपीकाकुआना
40. कैंली कार्ब
41. लैकेसिस
42. लाइकोपोडियम
43. भक्युरियस कर
44. मक्युरियस सल
45. मेजेरियम
46. नेट्रम म्यूर
47. नाईट्रिक एसिड
48. नक्स वॉमिका
49. ओपियम
50. फासफोरस
51. फासफोरिक एसिड
52. प्लैटिनम
53. प्लम्बम मैट
54. पल्सेटिला
55. रस्टोक्स
56. रुटा
57. सेम्बुक्स नाईप्रा
58. सैगुनेशिया कैनाडेन्सिस
59. सिकेशिकर
60. सीपिया
61. साइलोसिया
62. स्पाईजेलिया
63. स्पोजियाट
64. स्टैनम मैट
65. स्ट्रामोपियम
66. सल्फर
67. टैरेन्टुला हिस्पैनिया
68. थूजा आविसडैन्टेलिस
69. विरेट्रम एल्ब
70. विरेट्रम विरिडि
71. विकंम मैट

शरीर रखना विज्ञान और शरीर किया विज्ञान निवान पूर्व अध्ययन में सामान्य व्यक्ति का अध्ययन :

अध्ययन करने की दृष्टि से मानव शरीर रखना विज्ञान का अध्ययन सर्वाधिक जटिल है। मानव एक चेसनमन : जीव है और एक समिष्टि के रूप में कृत्यशील है। मानव ज्ञान इतना व्यापक हो गया है कि संपूर्ण मानव को निश्चित रूप में समझने के लिए, शरीर रखना विज्ञान, शरीर कियाविज्ञान और मनोविज्ञान जैसी विज्ञान की विभिन्न शाखाओं का हीना आवश्यक हो गया है यद्यपि ऐसा विभाजन समीकीन भाव है, मानव आज भी अधिक भाष्य है।

चेतना जीवन और उसकी गोचरता की व्याख्यान तो कोशिका किया विज्ञान या क्वाटम क्रियाविधि के रूप में की आ सकती है और न ही शरीर किया विज्ञान संबंधी

सिद्धान्तों के, रसायन—भौतिक सिद्धान्तों, पर आधारित हैं, आधार पर की जा सकती है।

यद्यपि अभी तक शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान का शिक्षण, पूर्णतः दो भिन्न भिन्न विषयों के रूप में किया जाता रहा है तथापि उन दोनों के बीच कोई निश्चित विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती है। रचना (शरीर रचना विज्ञान) और क्रिया (शरीर क्रिया विज्ञान) एक ही वस्तु के दो पहलू हैं और क्रिया-रसायन प्रक्रियाएं, जीवन जैसी व्याख्या आयोग्य गोचरता की बाह्य अभिव्यक्ति मरती हैं:-

अतः शरीर रचना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान का शिक्षण, निम्नलिखित उद्देश्यों को सामने रखकर किया जाना चाहिए, अर्थात् :-

- (1) आकृतिक, क्रियाजन्य और भनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को, जो एक क्रियार्थी इकाई के रूप में जीवधारी के आर्गेनिज्म का अवधारण करते हैं और उसे प्रभावित करते हैं, समझाना ;
- (2) मानव शरीर के रचनात्मक आर्गेनिज्म और सामान्य शरीर क्रिया को परस्पर संबद्ध करना और उनका निर्वचन करना, और तत्पश्चात् ऐसे निश्चित आधार प्रस्तुत करना जिनके आधार पर क्रियाओं में व्यवधान पड़ने की प्रत्याशा होती है ;
- (3) विद्यार्थी को इस बाबत समर्थ बनाना कि वह, शति, रोग और कुविकास के कारण उत्पन्न नैदानिक लक्षणों और संकेतों के रचनात्मक, क्रियात्मक और भनोवैज्ञानिक आधार को समझ सके ;
- (4) इसी प्रकार विद्यार्थी को वे कारण बताना जिनके आधार पर विकृतिजन्य प्रक्रियाएं पत्तपती हैं तथा उसके कारण उत्पन्न होने वाली संभावित जटिलताओं को समझाना ;
- (5) विद्यार्थियों को पूर्वनैदानिक विषयों का ऐसा ज्ञान कराना जिससे कि वह अन्ततः ऐसे ज्ञान के लिए आवश्यक परीक्षणों और उपचारों (शल्य चिकित्सा सहित) की सभी साधारण पद्धतियों का क्षमतापूर्वक और युक्तियुक्त रूप में, प्रयोग कर सकें, और
- (6) विद्यार्थी को इस योग्य बनाना कि वह होम्योपैथी पद्धति में “विष विष को मारता है” कि सिद्धान्त को लागू करने के प्रयोजन के लिए रोगी की औषधि निश्चित करने के लिए विशिष्ट व्याधि ज्ञापन (पैथोग्नोमोनिक) लक्षणों से उद्भूत, अपूर्व और असाधारण लक्षणों को विलग कर सके ।

शरीर रचना विज्ञान

शरीर रचना विज्ञान में शिक्षण इस प्रकार योजना-बद्ध रूप में किया जाए कि विद्यार्थी को मानव शरीर की रचना के बारे में साधारण कार्यकरण ज्ञान प्राप्त हो जाए। जो व्यौरा उसे याद रखने हों, वे न्यूनतम हों, अधिकतम महत्व जीवधारी की क्रियात्मक रचना, न कि शब्द की स्थायी रचना, को दिया जाना चाहिए और वाहसेरा, पेशियों, रक्त वाहिकाओं, तंत्रिकाओं और लसवाहिकाओं की सामान्य रचनात्मक स्थितियों और मुख्य संबंधों पर अधिक वल दिया जाना चाहिए। शब्द का अध्ययन तो इस लक्ष्य का साधन मान्य है। विद्यार्थियों पर सूक्ष्म रचनात्मक व्योरों का ओक्सीजन लादना उचित नहीं है क्योंकि उनका कोई नैदानिक महत्व नहीं है।

यद्यपि विद्यार्थी को नैदानिक अध्ययन के लिए तैयार करने के लिए यह आवश्यक है कि उसे सम्पूर्ण शरीर का विच्छेदन (डिसेक्शन) कार्य सिखाया जाए किंतु उसे ऐसे विच्छेदन कार्य से बोशिल नहीं करना चाहिए और रेखांकन संबंधी (टापोग्राफीकल) व्यौरों की मात्रा न्यूनतम करके बहुत सा समय बचाया जा सकता है। साथ ही निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए:-

आयुर्विज्ञान के विद्यार्थी को केवल ऐसे व्यौरे बताना चाहिए जिनका उसके लिए कोई व्यावसायिक या सामान्य शैक्षिक महत्व हो ।

2. विच्छेदन कार्य का प्रयोजन, तकनीकी दृष्टि से कुशल विच्छेदक पैदा करना न होकर विद्यार्थी को शरीर की क्रिया संबंधी जानकारी देना है और विच्छेदन कार्य इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर सिखाया जाना चाहिए, अर्थात्, यदि छोटी और नैदानिक दृष्टि से अमहत्वपूर्ण रक्त वाहिकाओं का विच्छेदन न बताया जाए तो विद्यार्थी को प्रमुख रचनाओं का विच्छेदन और आकृति तथा उनके पारस्परिक संबंध भली प्रकार समझने के लिए अधिक समय मिल जाएगा ।

3. आजकल अधिकतर जो कुछ विच्छेदन द्वारा सिखाया जा रहा है वह सब कुछ विच्छेदन निवर्ण (स्पेसीमन) द्वारा विखाया जा सकता है। ऐसा करना अधिक उपयोगी भी होगा ।

4. सामान्य विकिरण विज्ञान संबंधी शरीर रचना भी प्रयोगात्मक प्रशिक्षण का भाग हो सकती है। शरीर की रचना को क्रियात्मक पक्ष से संबद्ध रूप में, प्रस्तुत किया जाना चाहिए ।

5. वास्तविक विच्छेदन कार्य से पूर्व संबंधित अंग या तंत्र की सामान्य रचना की चर्चा की जाए और अन्त में उसके कार्यों के बारे में मौखिक रूप से बताया जाना चाहिए। इस प्रकार विद्यार्थी को उक्त रचनात्मक और क्रियात्मक ज्ञान, संबद्ध रूप में, कराया जा सकता है और शरीर रचना

तथा क्रियाओं का समस्त पाठ्यक्रम विद्यार्थी के लिए अधिक रोचक, जीवन्त और आवश्यक बनाया जा सकता है।

6. शरीर रचना की बाबत सैद्धांतिक लेक्चरों के एक बड़े भाग का स्थान प्रदर्शनों के साथ ट्यूटोरियल कक्षाएं ले सकती हैं।

पाठ्यक्रम के पश्चात् वर्ती भाग में नैदानिक और अनु-प्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान पर कुछ लेक्चरों या प्रदर्शनों की व्यवस्था की जा सकती है। अच्छा हो यह कार्य कली-निश्चयन करे। उसका उद्देश्य क्लीनीशियन को, भौतिक लक्षणों के रचनात्मक आधारों और रचनात्मक ज्ञान के महत्व को दर्शित करना हो।

विभिन्न विषयों को सम्बद्ध रूप में प्रस्तुत करने की दृष्टि से, कालिक रूप में, गोष्ठियों और सामूहिक चर्चाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।

औपचारिक क्लास रूम लेक्चरों को कम करके प्रदर्शनों और ट्यूटोरियलों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

संयुक्त अध्यापन एवं प्रदर्शन सत्र होने चाहिए जिनमें नैदानिक सामग्री की सहायता से, नैदानिक विषयों के संबंध में शरीर रचना के अनुप्रयुक्त पहलुओं का प्रदर्शन किया जाए। यह पन्द्रह दिन में एक बार किया जाना चाहिए और आवश्यकतानुसार यह आरंभिक लेक्चरों के श्रम का भाग रूप हो सकता है।

प्रत्येक मास शरीर क्रिया विज्ञान विभाग और जीव-रसायन विभागों की संयुक्त गोष्ठियां होनी चाहिए। स्थूल शरीर रचना विज्ञान, ऊतक विज्ञान, ध्रूण विज्ञान और आनुवंशिकी का शिक्षण पारस्परिक रूप में भली प्रकार समाकलित होना चाहिए। शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान, जिसमें जीव रसायन सम्मिलित है, के क्षेत्रों और पद्धतियों में शिक्षण यथासंभव समाकलित रूप में होना चाहिए।

सैद्धांतिक

भानव शरीर रचना विज्ञान का पूर्ण पाठ्यक्रम, जिसमें शारीरिक अंगों का साधारण कार्यकरण ज्ञान सम्मिलित है। बाइसेरा, पेशियों, रक्त वाहिकाओं, तंत्रिकाओं और संयाहिकाओं की सामान्य रचनात्मक स्थितियों और व्यापक संबंधों पर अधिक बल दिया जाना चाहिए। विद्यार्थियों पर प्रत्येक प्रकार के सूक्ष्म शारीरिक व्यौरों को, जिनका कोई नैदानिक महत्व नहीं है, बोझ लादना उचित नहीं है।

विद्यार्थियों को शरीर रचना-निर्देशों को पहचानना और हाल में किए गए विच्छेदनों से प्रकट रचनाओं का अभिज्ञान और उनसे संबंधित प्रश्नों का उसर देना, सिखाया जाना चाहिए। उन्हें अस्थियों और उनकी संधियों से जिनके अन्तर्गत कठोरका (वटेग्रा) भी है, खोपड़ी और लम्बी अस्थियों के अस्थीभवन की रीति की जानकारी होनी चाहिए।

सूक्ष्म व्यौरों पर बल उतना ही विद्या जाना चाहिए जिसना आयुर्विज्ञान और शल्य चिकित्सा को समझने या उस संबंध में उनका उपयोग करने के लिए आवश्यक हो। विद्यार्थियों से यह आमा की जाती है कि वे पेशियों के कार्य को भली प्रकार समझने के लिए उनके संलग्नों की जानकारी प्राप्त करें किंतु प्रत्येक पेशी के मूल और निवेशन के यथावत व्यौरों को जानना उनके लिए आवश्यक नहीं है। यह अपेक्षित नहीं है कि उन्हें हाथ, पैर, उनकी संधियों के अन्य व्यौरों की ओर खोपड़ी की छोटी अस्थियों के व्यौरों की जानकारी हो।

शरीर रचना विज्ञान की पाठ्य-वर्षा को निम्नलिखित शीर्षों में विभाजित किया जाना चाहिए :—

I. स्थूल शरीर रचना विज्ञान—निम्नलिखित खंडों में पढ़ाया जा सकता है —

- (क) प्रदर्शनों सहित आरंभिक लेक्चर,
- (ख) तंत्र संबंधी (सिस्टेमेटिक) ध्रुणला

अध्ययन के अन्तर्गत होना चाहिए डिडक्टिव लेक्चर, लेक्चर, प्रदर्शन, सतही और विकिरण संबंधी शरीर रचना विज्ञान, शब्द विच्छेदन और विच्छेदित निर्देश का अध्ययन। इस प्रकार प्राप्त ज्ञान तथा तथ्यों के पारस्परिक संबंध को, जीवन्त शरीर रचना में समाकलित कर दिया जाना चाहिए। उन भागों के अंग रेखांकन संबंधी व्यौरों पर बल विद्या जाना चाहिए जो सामान्य व्यवसाय के लिए महत्वपूर्ण हैं।

(i) उर्ध्व शाखा, आंतरिक शाखा, सिर, ग्रीवा, वक्ष, उदर और शोणि (पेल्विस) का प्रदेशानुसार और एक तंत्र के पश्चात् दूसरे तंत्र का अध्ययन किया जाना चाहिए (विशिष्टता: विकास और उसकी विषमताओं, प्रावेशिक तंत्रिका वितरण, ध्रुत्यशील समूहों या पेशियों-संधियों के संबंध में या अन्यथा-और अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान के प्रति विशेष निर्देश करते हुए)।

(ii) अन्तः स्त्रावी (एन्डोश्राइन) अंग—विकास और अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान के प्रति विशेष निर्देश किया जाए।

II. परिवर्धनजन्य शरीर (डेवलपमेंटल) रचना विज्ञान—सामान्य सिद्धांतों और परिवर्धन और धृद्धि के आनुवंशिक तथा पर्यावरणीय कारणों के प्रभाव पर लेक्चर दिए जाने चाहिए तथा चार्ट, भाइल और स्लाइड दिखाए जाने चाहिए।

III. तन्त्रिका-शरीर रचना (न्यूरो एनाटोमी)—मस्तिष्क और मेशदण्ड तथा प्रमुख तन्त्रिका पथ की स्थूल रचना। परिसरीय तंत्रिका, ऑनिकल तंत्रिका, उनके संबंध, पथ और वितरण।

स्वसंचालित तंत्रिका तंत्र — परिवर्धन और विषमताएं। अनुप्रयुक्त रचना।

अध्ययन के लिए, लेक्चर दिए जाने चाहिए, लेक्चर-प्रश्नान, मस्तिष्क और कार्ड का विच्छेदन और नैदानिक पारस्परिक संबंध, बताया जाना चाहिए।

टिप्पण :— शरीर किया तंत्रिका तंत्र के अध्ययन से पूर्व प्रायोगिक अध्ययन किया जाना चाहिए। प्रारंभ में ही नैवानिक पाठ्यक्रम से सहसंबंध स्थापित करना बांधनीय है।

IV. सूक्ष्म शरीर रचना विज्ञान (ऊतक विज्ञान) हिस्टोलॉजी—कोषिका, उपकला ऊतक, संयोजक ऊतक, पेशी ऊतक, तंत्रिका ऊतक की आधुनिक संकल्पनाएँ।

(अ) आरम्भिक लेखक

(क) कोषिका संघटकों की आधुनिक संकल्पना और उनके कार्य—क्यों कोषिकाएँ विभाजित होती हैं, कोषिका विभाजन उनके प्रकार और महत्व।

(ख) आनुवंशिक व्यक्तित्व (जेनेटिक इन्डिवीजुअलिटी)—

(i) प्राथमिक आनुवंशिकता—परिभाषा, स्वास्थ्य और रोग, जीव और उसके पर्यावरणों के बीच पारस्परिक क्रियाओं के परिणाम, होम्योपैथी की दृष्टि से इस ज्ञान की उपयोगिता।

(ii) मैन्डल के सिद्धांत और उनका महत्व।

(iii) अनुप्रयुक्त आनुवंशिकता।

(आ) परिवर्धन संबंध शरीर रचना विज्ञान—15 लेखक

(इ) सामान्य शरीर रचना और सूक्ष्म शरीर रचना—15 लेखक

(ई) प्रावेशिक शरीर रचना :

(क) ऊर्ध्व शाखा—15 लेखक

(i) ढांचा, संधियों की स्थिति और कार्य,

(ii) पेशी समूह तंत्रिका जालिका,

(iii) धमनी प्रदाय, विष निकासी, तंत्रिका वाहिका बन्डल, लसवाहिका और लसिका पर्व, तंत्रिकाओं का अस्थियों से संबंध।

(iv) संधियां—विशिष्टतः स्कंध एल्बो और कलाई संधियां, पेशियां, जो संचलन पैदा करती हैं, तंत्र अति के परिणाम।

(v) अस्थियों और संधियों का विकिरण, अस्थिभवन, आयु अवधारण।

(vi) अनुप्रयुक्त शरीर रचना।

(vii) प्रमुख धमनियों, तंत्रिकाओं का तल चिह्नांकन।

(ख) निम्नशाखा—15 लेखक

(i) ढांचा, संधियों की स्थिति और कार्य।

(ii) पेशी समूह, कटि (तंत्रिका) जालिका।

(iii) धमनी-प्रदाय, विष निकासी, तंत्रिका वाहिका बन्डल, लसवाहिका और लसिका पर्व।

(iv) संधियां, विशिष्टतः कटि सेफ्ली, मितम्ब, घुटने और टखने की संधियां, संचलन पैदा करने वाली पेशियां, तंत्र अति के परिणाम।

(v) अस्थियों और संधियों का विकिरण, अस्थिभवन, आयु अवधारण।

(vi) अनुप्रयुक्त शरीर रचना।

(vii) प्रमुख धमनियों, तंत्रिकाओं का तल चिह्नांकन।

(ग) वक्ष—15 लेखक

(j) वक्ष की पेशियों की संधियों का ढांचा—भित्ति—डायाक्राम, तंत्रिका वितरण—उदरीय और वक्ष प्रवसन, आयु के साथ अंतर। स्तनगण्ड लसिका निकासी।

(ii) प्लूरा और फेफड़े।

(iii) थेमीडायस्टीनम्, हृदय, हृदय-धमनी, बड़ी वाहिका, श्वास प्रणाल (द्रेशिया) ओसोफेंगस, लसिका पर्व, आदमस की व्यवस्था और रचना।

(iv) हृदय, महाधमनी, फेफड़े, श्वास-हृदय वालव,

(v) अनुप्रयुक्त शरीर रचना।

(vi) तल चिह्नांकन—प्लूरा, फेफड़े, हृदय-हृदय वालव, महाधमनी का बांडर, आर्च, अनु० बेनाकेव, श्वास प्रणाल का द्विविभाजन।

(घ) उदर और श्रेणि—25 लेखक

(j) उदरीय भित्ति-त्वचा और पेशियां तथा तंत्रिका वितरण, फौसिया, पेरिटोनम, रक्त वाहिकी, लसवाहिका, स्वचालित गंडिका, जालिका।

(ii) उदर, छोटी आंतें, उड्डुक, एपेन्डिक्स, बड़ी आंतें।

(iii) ड्यूडेनम्, अग्न्याशय (पेनक्रियाज), किडनी, गवीनी, सुपरा रीनल

(jv) जिगर और पित्ताशय

(v) श्रोणि, ढांचा और संधियां, श्रोणि पेशियां, पुरुष और स्त्री में बाह्य और आंतरिक जेनेन्शिय कटिलिक जालिका, वाहिकाएं, लसवाहिका, स्वचालित गंडिका, जालिका।

(vi) उदर और श्रोणी की रक्त वाहिका और तंत्रिका जालिका, प्रवेश डारा शिरा तंत्र।

(vii) निदिट पीड़ा की अनुप्रयुक्त रचना, प्रवेश डारा व्यवस्थित शावामिसन, पुरुष और स्त्री में मूक्राशय का कैथराइजेशन।

(viii) अंगों और रक्त वाहिकाओं का तल चिह्नांकन।

(ङ) सिर और ग्रीवा—25 लेखक।

(i) गिरोवल्क (स्काल्प)—तंत्रिका वितरण, वाहिका-कामय प्रदाय मध्य तानिका धमनी।

- (ii) आनन्द—आनन अभिव्यक्ति की मुख्य प्रेशियां, समूह प्रेशियां, चर्चण प्रेशियां, त्वचा तंत्रिका वितरण और क्षतिपूरक (रिपेयर) प्रेशियां, धाहिकामय प्रदाय, मरम्मत शिरोबल्क और आनन झुरियों के सिद्धांत ।
- (iii) फलकें, नेत्र गोलक, अश्रु साधित, नेत्र गोलक की संचालक प्रेशी ।
- (iv) नासा केविटी, नासाग्रसनी, पट, कंकाई, पैरानैसल साइनस, युस्टेशियन ट्यूब, लसिकाम जमूह ।
- (v) मुख केविटी और फैरिस ।
- (vi) स्वरयंत्र और फैरिस रचना के स्वरयंत्री भाग (कोई ब्यौरे नहीं), कार्य, तंत्रिका प्रदाय, लैरिंगो-स्कोपी रूप ।
- (vii) सिर और ग्रीवा की ग्रैव कशेलका (सर्विकल बटिक्रा) संधियां ।
- (viii) ग्रीवा, उर कर्णमूल (स्टनोमेस्टायड) ब्रेशियत प्लेक्सस, मुख्य धमनियों और शिराओं की रचना, लसिका पर्व (लिफ नोड) की स्ववृत्ति (डिस्पोजिशन), निकासी क्षेत्र, फेनिक तंत्रिका, थाइरायड ग्रन्थि और उसका रक्त प्रदाय, पराथायराइड, ट्रेशिया, सेसोफोगेस । सबमेन्डीब्लूलर और उपजिह्वा लाला (सेलिवरी) ग्रंथियां ।
- (ix) दन्त और डेन्टीटर
- (x) वाह्य, मध्य और आंतरिक कर्ण
- (xi) अनुप्रयुक्त रचना
- (xii) तल चिह्नांकन : कर्णपूर्व (पारोटिड) ग्रंथि, मध्य मस्तिष्क आवरण धमनी, थाइरायड ग्रंथि, सामान्य आंतरिक और वाह्य कैरोटिड धमनियां ।
- (xiii) तंत्रिका रचना—10 लेक्चर
- (i) मस्तिष्क आवरण—कार्य
- (ii) प्रमस्तिष्क (सेरेब्रम)—स्थान निर्धारण क्षेत्र, धाहिकामय प्रदाय (वास्कुलर स्प्लाई) आधारी गंडिका बेमल गेंगलिओन, आंतरिक केपसूल ।
- (iii) अनुमस्तिष्क (सेरेबेलम) कार्य
- (iv) पान्स, मेड्यूलर मध्य मस्तिष्क, करोटि तंत्रिका (फेनियल) अंगधात ।
- (v) (सेरो-स्पाइनल) मस्तिष्क मेस्तरन—बनना, परिचालन, कार्य अवशोषण ।
- (vi) करोटि तंत्रिका—मूल, कम (कम से कम रक्तमात्रमक ब्यौरों के साथ), वितरण क्षेत्र ।
- (vii) सुषुम्ना (स्पाइनल) आवरण खण्ड, कशेलका कालम से खण्ड का संबंध, भेद तंत्रिका वितरण ।
- (viii) अनुकम्पी और परा अनुकम्पी तंत्रिका तन्त्र, स्थिति, वितरण, कार्य ।
- (ix) कटिबेध की अनुप्रयुक्त रचना, निर्विष्ट (रेफर्ड) वर्द्ध, सुषुम्ना संवेदनाहरण (एनस्थेसिया), वर्धित आन्तर करोटि (इन्ट्राक्रेनियल) वाब ।

प्रयोगात्मक

एक मास/शैक्षणिक मासों में संपूर्ण मानव शरीर को विच्छेदन (डिसेक्शन) के लिए 160 घंटे दिए जाएंगे ।

- प्रत्येक विच्छेदन पूर्ण हो जाने पर वह डिमास्ट्रेटर को दिखाया जाएगा और अगली मद लेने से पूर्व उसकी अनुज्ञा लेना अनिवार्य है ।
- अंग आवंटन से पूर्व प्रत्येक विद्यार्थी को डिमास्ट्रेटर द्वारा लिए गए अंग की अस्थियों की आवत्स मौखिक परीक्षण उत्तीर्ण करना होगा ।
- प्रत्येक मान्यताप्राप्त महाविद्यालय द्वारा अनुसरण किए जाने वाले मार्गदर्शन के अनुसार प्रायोगिक शरीर रचना की कक्षा के लिए मुद्रित फार्म होने चाहिए ।

विच्छेदन के लिए मार्गदर्शन

नाम :

सत्र :

रोल नं०

वर्ष :

मस्तिष्क नेत्र गोलक

पूर्ण हो जाने पर प्रत्येक विच्छेदन एक डिमास्ट्रेटर को दिखाया जाएगा और अगली मद लेने से पूर्व उसकी अनुज्ञा लेना अनिवार्य है ।

अंग वितरण की तारीख :

अंग पूर्ण होने की तारीख :

टिप्पणियां :

डिमास्ट्रेटर

आचार्य,

शरीर रचना विज्ञान

मस्तिष्क नेत्र गोलक

मद	प्रारंभ की गई मद	अंक		परीक्षक
		विच्छेदन	मीखिक	
1	2	3	4	5
1.	मस्तिष्क और कुंड की कला (मैम्ब्रेन)			
2.	मस्तिष्क की उपरिस्थ (सुपरफिशल) रक्त आहिकाएं			
3.	उपरिस्थ शरीर रचना पार्श्विक (लेटरल) तल चिकित्सा तल मस्तिष्क आधार			
4.	प्रमस्तिष्क (सैरेब्रम) —			
	(क) विवर (फिशर) सुस्ती और गाहनी लोब मोटर और संवेदी क्षेत्र			
	(ख) (कार्पेस कालोसम) महा संयोजिका पार्श्विक निलय (लेटरल बेन्ड्रिकिल)			
	(ग) टेला कार्डिंग और तृतीय निलय			
	(घ) थैलामस और कार्पेस स्टैनेटम			
	(ङ) परियोजी, संगम और प्रक्षेपक तम्कु			
	(च) रिनामसेफेलान			
5.	मध्य मस्तिष्क —			
	प्रमस्तिष्क बूँदक (पेंडकल) पिंड चतुष्टि (क्वार्ट्रीजेमीना) दृष्टि पथ			
6.	मध्य मस्तिष्क —			
	(क) पोन और छोयी निलय (बेन्ड्रिकल)			
	(ख) सुषुम्ना धीर्घ			
	(ग) अमुमस्तिष्क (सैरिब्रैलम)			
7.	उत्तार और चढ़ाव पथ			
8.	कपाल रेखांकन (टोपोग्राफी)	योग	—	
		प्रतिशत	—	
9.	बाह्य (द्यूनिक) कंचुक —			
	स्कलीरा			
	कार्निया			
	कोराइड			
10.	आइरिस, सिलियरी वाडी — सिलियरी तंत्रिका और आहिकाएं			
11.	रीफरेक्टर माध्य —			
	नेत्रोव तारा			
	लॉस और उसके कैपसूल			
	विद्रियस खूमर रेटिना			
		योग	—	
		प्रतिशत	—	

1 2

3 4 5

सिर और ग्रीवा

नाम :

संत्र :

वर्ष :

रोल नं० :

पूर्ण हो जाने पर प्रत्येक विष्टेदन एक डिमास्ट्रेटर को दिखाया जायेगा और अगली मद लेने से पूर्व उसकी अनुज्ञा लेना अनिवार्य है।

डिमास्ट्रेटर

आचार्य,
शरीर रखना विज्ञान

1. शिरोबल्क और टैम्पोरल प्रदेश का उपरिस्थ विष्टेदन

2. मस्तिष्क निकालना—

- (i) कपाल तन्त्रिका की मूल
- (ii) कपाल-आधार
 - (क) अग्र (फोसा) खात
 - (ख) मध्य खात
 - (ग) पश्च खात

3. पश्च प्रदेश—

- (i) ग्रीवा उपरिस्थ विष्टेदन
- (ii) उप पश्च त्रिकोण

4. पीठ—

पेशियों की पहचान

5. मेरुदण्ड मज्जा, मैन्ड्रेन और स्नायु इलेवा

6. मुख और अश्रु साधित

7. आंखि

8. ग्रीवा त्रिकोण अग्र

9. ग्रीवा त्रिकोण पश्च—

- (i) कैलेटिड त्रिकोण
- (ii) पेशीय त्रिकोण
- (iii) ग्रीवा मध्य रेखा
- (iv) डाइजेस्टिक त्रिकोण
- (v) सद्रमेस्टिक्युलर प्रवेश

10. ग्रीवा गंभीर विष्टेदन

- (i) बाहिकाएं
- (ii) तन्त्रिका
- (iii) फेरबत की पार्श्वक भित्ति
- (iv) अनुकम्भी ट्रंक का ग्रेव (सर्विकल) भाग

11. कर्णपूर्व (पैरोटिड) प्रदेश

1

2

3

4

5

12. इनका कपाल प्रदेश

- (i) आधिक गेंगलिआन और कर्णपट : तंत्रिका
- (ii) भस्त्रिक आवरण-साइनस

13. मेण्डिबुलर संधि

14. प्रिवेन्टेब्रल प्रदेश

15. फ्रिनिक बर्टेब्रल और बर्टेब्रल संधि

16. मुख और फरिंक्स

17. नासा और उपांग साइनस

18. स्फेनों पैलेटाइन प्रदेश—

- (i) पैटरीगो—पैलेटाइन फोसा
- (ii) पैटरीगो—मैक्सिलेरी विद्वर
- (iii) मैक्सिलेरी तन्त्रिका और स्फेनों पैलेटाइन गेंगलिआन

19. लैरिंक्स

20. जीह्वा

21. श्वेण साधिक्ष

- (i) बाल कर्ण
- (ii) मध्य कर्ण, मास्टराइड एन्ट्री
- (iii) आम्तरिक कर्ण

योग	—
प्रतिशत	—

नाम :

संब्र. :

वर्ष :

रोल नं० :

धर्म

पूर्ण हो जाने पर प्रत्येक विच्छेदन एक डिमास्ट्रेटर को दिखा दिया जाये और अगली मद लेने से पूर्व उसकी अनु-
संति प्राप्त करना आवश्यक है।

अंग वितरण की तारीख :

अंग पूर्ण होने की तारीख :

टिप्पणियाँ :

आशार्य,
पारीर रक्षा विभाग

डिमास्ट्रेटर

मद	प्रारंभ की गई मद	अंक	परीक्षक	
			विच्छेदन	मौखिक
1. अग्र वक्तीय मिति				
2. इन्टरकोस्टल का विच्छेद				
3. स्थान और अन्तर्वर्त्तु				

1	2	3	4	5
---	---	---	---	---

4. अप्र संधि—

- (i) (उरोस्तिय जलुक स्टनॉ फ्लेथिकुलर)
- (ii) कान्डोस्टनैल
- (iii) इन्ट्राकेन्ड्रल संधि
- 3. फैकड़ों और फुसकुस प्लेक्सस की प्लूरा रुट
- 4. अप्र मीडियास्टिनम और सुपोरियर मीडिस्टिनम
- 5. मध्य मीडियास्टिनम तथा पैरीकार्डियम
- 6. प्रेनिक और वेगस संत्रिका हृदय प्लेक्सस
- 7. हृदय
- 8. पश्च मीडियास्टिम और उसकी अन्तर्वेस्तु
- 9. अनुकम्पी वक्ष भाग—उसकी शाखाएं और वितरण
- 10. पश्च वक्ष भित्ति-इन्टरकोस्टल वाहिकाएं
और तंत्रिका
- 11. डायफ्रेमम
- 12. कशेरुका (वर्टीब्रल) --कास्टो-कशेरुका संधियाँ
- 13. तल रचना

योग
प्रतिशत
उद्धर

नाम :

सन :

वर्ष :

रोज न०

पूर्ण हो जाने पर प्रत्येक विच्छेदन एक डिमास्ट्रेटर को विखाया जायेगा और अगली मद लेने से पूर्व उसकी अनुज्ञा लेना अनियार्य है।

अंग वितरण की तारीख :

अंग पूर्ण होने की तारीख :

टिप्पणियाँ :

डिमास्ट्रेटर

आचार्य,
शरीर की रक्षना

1. मूलाधार
2. बाणी जन्मांग
3. पश्च उदरीय भित्ति
सुपरस्ट्रैटिक कार्ड
रातुण्ड लिनामेंट
4. उदरीय केविटी
आशय की स्थिति और संबंध

1

2

3

4

5

5. पैरीटोनियम--
 मृहुत्तर सैक
 लच्छुत्तर सैक
6. मासेन्ट्रेश्वक वाहिकाएं
7. पेट, काकलायक एक्सिस और आन्त्र शिरा
8. छोटी आंते (जेजुनम और इलियम)
9. बड़ी आंते एलियाक कोलन तक
10. डयूडेनम, अग्न्याशय और तिल्ली
11. जिगर
12. वृक्क, सुपरारेनल ग्रन्थि और उदरीय भित्ति
13. डायफ्रेम
14. अनुकम्भी तन्त्र, कोइलियारक और महावागनो प्लेक्सेस
15. ओरेटर, इन्का वेनेकेवा, सामान्य आन्तरिक और बाह्य इलियाक वाहिकाएं
16. उदर का लसिका तन्त्र
17. तंत्रिका का लम्बर प्लेक्सस और लम्बर वाहिकाएं
18. श्रोणिका (पैलिक्स) -- विस्कोरा की स्थिति और संबंध
19. हाइपोगे द्विक वाहिकाएं और उनकी शाखाएं
20. पैलिक केरिंया और पैलिक मेशियाँ--
 गवीनी (यूरेटर) का श्रोणिका (पैलिक्स) भाग
21. अवग्रह मृद्घवायान्त्र (सिग्माइड कोलन), रेक्टम, एनल कैनाल
22. मूत्राशय, प्रास्ट्रेट और मूत्रभार्ग
23. डिव ग्रन्थि, गभरिय, गभरिय-ट्रूब, योनि
24. श्रोणि तंत्रिका
25. संधियाँ--
 लुम्बोक्रिय (सेरल)
 सेक्रो इलिएक
 सैक्षा काकीजील
 सिफासिस घ्यूविस

योग

प्रतिशत

तृपीरियर शाखा

नाम :

संख्या :

वर्ष :

रोल नं०

1

2

3

4

5

पूर्ण हो जाने पर प्रत्येक विचलेदन एक डिमास्ट्रेटर को दिखाया जाना चाहिये और अगली मद लेने से पूर्व उसकी अनुशा लेना अनिवार्य है।

अंग वितरण की तारीख :

अंग पूति की तारीख :

टिप्पणियाँ

आचार्य,
शासीर रखना विभाग

1. पीठ का उपरिस्थ विचलेदन
2. पैकटोरल प्रदेश और एकजीली फोसा
3. स्कंध और स्कैपुलर प्रदेश
4. क्यूबीटल फोसा
5. आहु-अग्र
6. आहु-पश्य
7. अग्रवाहु अग्र
8. हथेली-उपरिस्थ विचलेदन
9. हथेली-भौमीर विचलेदन
10. अग्रवाहु पश्य
11. हस्त पृष्ठ
12. स्कंध संधि
13. एल्बो और रेडियो अल्नर संधि
14. कलाई संधि और हस्त संधियाँ

योग _____

प्रतिशत _____

सिव्ह राष्ट्रा

नाम :

संत्र :

अर्प :

रोल नं० :

पूर्ण होने जाने पर प्रत्येक विचलेदन एक डिमास्ट्रेटर को दिखाया जायेगा और अगली मद लेने से पूर्व उसकी अनुशा लेना अनिवार्य है।

अंग वितरण की तारीख :

अंग पूति की तारीख :

टिप्पणियाँ :

डिमास्ट्रेटर

आचार्य,
शासीर रखना विभाग

1. सोल का उपरिस्थ विचलेदन
2. नितंय प्रदेश
3. जानुपृष्ठ (पापलीटील) फोसा

1	2	3	4	5
4. जानुपूष्ट (थाई)				
5. जानु के संपूर्ण अग्रभाग का उपरिस्थ विच्छेदन—				
क्यूटोनियस तंत्रिका				
क्यूटोनियस थाहिकाए				
गंभीर फेसाई				
6. गंभीर विच्छेदन				
(क) फेमोरल शीथ और फेमोरल हृतिंया				
(ख) एडक्टर प्रदेश				
(ग) एडक्टर केनल				
(घ) क्वांट्रीसिप्स पेशी				
7. अग्र टिबियोफाइब्रुलर प्रदेश, पद पृष्ठ				
8. पेरीनियल प्रदेश				
9. पश्य टिबियोफाइब्रुलर प्रदेश, उपरिस्थ और मध्य कक्ष				
10. सोल का गंभीर विच्छेदन				
11. नितम्ब संधि				
12. घुटना संधि				
13. टिबियोफाइब्रुलर संधि				
14. चाप सहित पद संधियाँ				

योग _____

प्रतिशत _____

शरीर रखना विज्ञान के लिखित प्रश्नपत्र निम्नलिखित रूप में विभाजित किये जायेंगे:-

प्रश्नपत्र I.—उपरिशाखा, सिर, मुख, ग्रावी और मस्तिष्क

प्रश्नपत्र II.—पोरेक्स, उदर, श्रोणि और निम्न शाखा

शरीर क्रिया विज्ञान

शरीर क्रिया विज्ञान के शिक्षण का प्रयोजन विद्यार्थी को सामान्य मानव के विभिन्न अंगों और संकीर्णों के कार्यों प्रक्रियाओं और पारस्परिक संबंधों को बताना है जिससे कि रोगप्रसंस्त हो जाने पर विद्यार्थी रोग के कारण होने वाली विकृतियों को सामान्य मानवों के निर्देश से समझ कर रोग का निदान और उपचार कर सके। होमोइोपैथी की दृष्टि में मानव-शरीर, जीवन और मस्तिष्क का एक समाकलित रूप है, यद्यपि जीवन में रसायनिक-भौतिक क्रियाएं भी होती हैं तथापि वह उनसे परे है। जब तक कि मानव में जीवन-शक्ति का एमीनीकरण नहीं होता, किसी रोग के लक्षण उत्पन्न नहीं हो सकते। उक्त विज्ञान के शिक्षण का उत्तर्य, महत्वपूर्ण घटनाओं और स्वस्थ रहने हुए उनमें विहित रसायनिक-भौतिक क्रियाओं, का वर्णन है।

विभिन्न पद्धतियों का शिक्षण विभिन्न विभागों के द्वारा निकट सहभाग से संपन्न किया जाना चाहिए। शरीर रखना विज्ञान और शरीर क्रिया विज्ञान के विभागों का संयुक्त पाठ्यक्रम होना चाहिए, जिससे कि इन विषयों की अव्याहन में अधिकतम समन्वय हो सके।

कालिक रूप में गोष्ठियों की जानी चाहिए और शरीर रखना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान तथा जीव रसायन के अध्यापक, विद्यार्थियों को यह समझाएं कि समाकलित कार्य-क्रम अधिक उपयोगी हैं। उद्धरण के लिए स्थूल और शूल रखनाओं का ज्ञान शरीर रखना विज्ञानी स्पष्ट करेगा और भयापचाकी (मेटाकोलिक) प्रक्रिया में उपकोशकीय कणों की भूमिका तथा उनके निर्धारण का छंग, जैव रसायनज्ञ स्पष्ट कर सकता है और अस्त में शरीर क्रिया विज्ञानी, विनिर्दिष्ट करनों में योग्यताम करने वाले विशिष्ट वैज-

रासायनिक और रचनात्मक संघटकों का सम्बन्ध स्पष्ट करते हुए, इकाई के रूप में कोशिकाओं के व्यवहार को समाकलित रीति में समझा सकता है। विद्युतियों को गोष्ठियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है और वहीं प्रयोगात्मक विषय समाकलित रीति में प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

संदर्भात्मक

1. प्रस्तावना :

जीवन की मूल घटनाएं। कोशिका और उसके विभेद। शरीर के ऊतक और अंग।

2. जैव रासायनिक सिद्धान्त :

प्रोटोप्लाज्म के प्राथमिक संघटक / प्रोटॉन कार्बोहाइड्रेट द्रव और द्रवों का रसायन, इन्जाइम।

3. जैव भौतिक सिद्धान्त :

सान्द्रण की इकाई—विलयों, आयनों, विद्युत अपघट्य (इलेक्ट्रोलेट) और विद्युत गैर-अपघट्य निष्पन्दन (फिल्टर-रेशन), विसरण अल्द्वा निष्पन्दन, डायलीसिस, तल तनाव, अवशोषण, जलानुवर्तन (हायड्रोइडासी), डोमन संतुलन, कोलायड, अम्ल, क्षार सान्द्रण एवं।

4. तांत्रिक वेशी क्रिया :

तांत्रिक में उत्सेजन प्रक्रिया और उत्सेजित होने पर तांत्रिक द्वारा प्रकट परिवर्तनों का प्रसार। तांत्रिक में ध्रुवण घटना। इलेक्ट्रोल्युक्स। विघटन की प्रतिक्रिया। तांत्रिक-पेर्श, पारेण। शरीर में विभिन्न प्रकार की वेशीय। उत्सेजन मिलने पर परिवर्तन और संकुचन प्रक्रिया। वेशीय श्रम की क्रिया। राशगर गुणावगुण।

5. रक्त रचना :

रक्त की माझा का विनियमन और उसका अवधारण, रक्त का विनियोगित घनत्व। रक्त की प्रतिक्रिया और उसका विनियमन। रक्त प्लाज्मा की रचना और कार्य। प्लाज्मा-प्रोटीन और उनके कार्य। अस्थि मज्जा, मूल रचना, वसा, रक्त के निमित तथ्य के कार्य, हीमोग्लोबिन-रसायन और उसके योगिक तथा अनुपस्थिति, रक्त स्कन्वन (कोघागुलेशन) हीमोलीसिस, रक्त समूह।

6. हृदयाहिका तन्त्र (कार्डियो वायूलर) :

हृदयेणी की रचना और गुण, हृदय साइकिल, वाल्वों की क्रिया, हृदय ध्वनि एपेक्स बीट, हृदय और हृदय (धमनी) परिसंचरण। विद्युत कार्डियोग्राम, हृदय-उत्पादन। हृदय आवेग का मूल और प्रसार। हृदय तांत्रिका विनियमन, हृदय रिफ्लेक्सेस रक्त पथ और परिसंचरण, धमनियों, कोशिकाओं और शिशुओं की रचना, भस्त्रिक की विचित्रताएँ, फूस-

फूसी, हेपाटिक, पोर्टल और रीफल परिसंचरण। पूर्ण परिसंचरण का समय, रक्त बहाव का वेग। नाड़ो, धमनी और शिशु, रक्त वाहिका, तांत्रिकाएं वितरण और परिसंचरण नियन्त्रण। रक्त चाप और उसका विनियमन। कोशिका परिसंचरण का नियन्त्रण।

7. रेटिक्यूल एन्डोथेलियल तन्त्र और लसीका (लिम्फ) :

उक्त तन्त्र (आर० ई० तन्त्र) पित्ती लसीका ग्रन्थियाँ, कोशिका द्रव और लसीका उडेमा।

8. श्वसन-तन्त्र :

श्वसन अंगों की रचना और सूक्ष्म संरचना, श्वसन संचलन की क्रियात्मक बनावट, स्पाइरोमीटरी, श्वसन रसायन निःवर्शन, श्वसित वायुकोष की वायु की रचना। श्वसन भागफल, आधारी चयापचय (मटावोलिज्म) रक्त में वायु और उससे तना। रक्त में O_2 और सी ऑ₂ का परिवहन। आत्मरिक और वायू श्वसन की क्रियाविधि। श्वसन का नियन्त्रण। चेनीज, स्टोक्स श्वसन। अश्वसन, कष्ट श्वास, अरुचि, साइनोसिस, श्वासावरोध, उच्छ और निम्न वायुमण्डलीय वायु का प्रभाव, घशानुकूलन, पर्वतीय रुणसा, फैसन रोग, कृत्रिम श्वसन, परिसंचरण पर श्वसन का प्रभाव।

9. पाचन तन्त्र :

चयापचय पोषण और आहार विज्ञान, सामान्य आहार, विटामिन, दूध और उसके गुण। पाचन अंग और उनकी रचना तथा कार्य, विभिन्न पाचक रस, क्रियाविधि और कार्य। जिगर, एलीमन्टरी केनाल का संचलन। खाद्य पदार्थ का विक्षेप (डिफक्शन), पाचन और अवशोषण तथा उसका चयापचय। प्रोटीन का जैविक मूल्य। रक्त शर्करा और उसका विनियम। खनिज चयापचय और क्षुधा के दौरान चयापचय। अवक्षिप्त का पोषण।

10. शानेन्द्रियाँ : साधारण लक्षण, वर्गीकरण, संबोधना, संवेदी-अंग और संवेदी-मार्ग।

(क) दृष्टि — नेत्र की रचना, अपवर्तन की भूलें और उनका सुधार। नेत्र गोलक के पटलों के समंजन (एकोमोडेशन), रचना और कार्यों की क्रियाविधि, नेत्र प्रतिवर्तन, दृष्टिप्रेत्र दृष्टिपथ। रंग दृष्टि, रंग अंधाता, घासानुकूलर दृष्टि।

(ख) श्रवण शक्ति : श्रवण साधित की रचना। ध्वनि तरंग आलन। हेलमाट का सिद्धात। कोचलियर अनुपूर्ति। वेस्टीबुलर साधित।

(ग) स्वाव और सुगंध : ग्रहण अंगों की रचना और कार्य -

(घ) त्वक् (क्लोनेस) और गंभीर संवदना—रसमा और कार्य और ग्रहण अंग।

11- स्वर और वाक् ; लैरिक्स की रचना, स्वर और वाक् की उत्पत्ति की क्रियाविधि।

12. अंतः स्थानी (एन्डोक्राइन) तंत्र :

13. प्रजनन : प्राथमिक और गैड़ लिंग, लिंग गुण। स्तन ग्रन्थि और प्रोस्ट्रेट। प्लेसेन्टा और उसके कार्य। गर्भ-श्वसन और परिसंचलन।

14. उत्सर्गी तंत्र : किडनी-मूत्र बनना और उसकी रासायनिक रचना। किडनी की रचना और कार्य। मूत्र के संघटक, सामान्य और असाधारण। मूत्र की मात्रा। मूत्रण की क्रिया [वृक्क, (रीनल)] दक्षता परीक्षण।

15. त्वचा तन्त्र : त्वचा की रचना और कार्य, पसीने और सेबम का बनना, स्थाय, संघटन। शरीर तापमान और उसका विनियमन।

16. तंत्रिका तंत्र : तंत्रिका तंत्र के विकास का इतिहास। सुषुम्ना (स्पाइनल कार्ड) और प्रतिवर्त तथा उसके गुण। प्रमस्तिष्ठक मेह तरल। सिनेप्टिक संधरण। उत्तेजित और संदर्भी स्थितियों पर नियंत्रण। दैहिक संबोधी ग्राहक और पथ टेलामस। परिमितिष्ठक कार्टेंक्स मोटर और संबद्ध क्षत्र पिरामिडल और एक्स्ट्रा पिरामिडल पथ, आधारिक गैगलिया। पाश्चात्य और लोकोमोशन। संबोधी और मोटर। पुरुष में मोटर बिन्दु, जालीय रचना। ई ई जी निंद्रा स्वचालित तंत्रिका तंत्र। हाइपोथेलामस और लिम्बिक तंत्र। कंडीशनल प्रतिवर्त, अनुमस्तिष्ठक (सेरीवेलम)

शरीर क्रिया (प्रयोगात्मक)

1. मूत्र तलछट के सामान्य और असामान्य संघटकों की परीक्षा। शर्करा, यूरिया, एल्ब्यूमन, एसीटोन और पित्त के लिए मानवात्मक (क्वार्टिटेटिव) परीक्षा।

2. लाल रक्त कणिका (आर० बी० सी०) और श्वेत रक्त कणिका, कुल गणना (काउण्ट) करना और रक्त धब्बा-फिल्म और श्वेतरक्त कण स्कॉदन का विभेदक गणना तथा रक्तस्त्राव समय, हीमोलोबीन आकलन। लाल रक्त कणों की भूंगरता और तलछट दर।

3. सामान्य शरीर क्रिया उपकरण और साधिकारों की पहचान और प्रयोग विधि।

4. ऊतकों (टिश्यू) और अंगों के ऊतक विज्ञानी निदशों (स्पेसिमैन) की पहचान, अर्थात्, जिगर, किडनी, फेफड़े, थाहाराइड, अग्न्याशय पनक्रियाज, तिल्ली, ट्रेशिया, ससोफेगस, आमाशय, जीह्वा, आंतें, बड़ी आंतें, टेस्टी, ओवरी, अस्थिस, वसा ऊतक शुपुम्ना, अधिवृक्क प्रथि, पैरोटिड, ग्रन्थि, अग्र पीयुषिका (पिंट्यूट्रेरी), स्लाइबरी प्रथि, त्वचा, पैराथाइराइड प्रथि, (सेरीब्रेलम) प्रमस्तिष्ठक कार्टेंक्स हृदपेशी। शरीर क्रिया विज्ञान के निखित प्रश्नपत्र निम्नलिखित रूप में बांदे जाएंगे अर्थात् :—

प्रश्नपत्र—1 जैव भौतिकी के तत्त्व, ऊतक विज्ञान, रक्त और लसिका, हृदवाहिका (कार्डियोवास्कुलर) तंत्र, रेटीक्यूरो एण्डोथेलियल तन्त्र, तिल्ली, श्वसन, मूत्र उत्सर्जन, त्वचा, शरीर के तापमान का विनियमन संबोधी अंग।

प्रश्नपत्र - 2 अंतः स्नावी अंग, तंत्रिका तंत्र, तंत्रिका पेशी, शरीर क्रिया। पाचन तंत्र और व्यापचय प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और द्रव एनजाइम का जैव-रसायन। पोषण।

प्रयोगात्मक परीक्षा

पूर्ण अंक 100

अंक

1. सामान्य और असामान्य मूत्र (मानवात्मक) के भौतिक और रसायनिक संघटकों की परीक्षा	20
2. रक्त (आर० बी० सी० और डब्ल्यू बी० सी०) की कुल सेल गणना या परिसरीय (परीफरल) रक्त के विभेदक (छिफरेन्शियल) गणना या हीमोग्लोबीन के प्रतिशत के आकलन की प्रगणना।	15
3. उपकरणों और साधिकारों के बारे में मौखिक परीक्षा	16
4. 2 ऊतक विज्ञानी स्लाइडों की पहचान	10
5. प्रयोगिक शरीर क्रिया विज्ञान	15
6. प्रयोगशाला नोटबुक	10
7. प्रयोगों के बारे में मौखिक परीक्षा	15

मनोविज्ञान

सामान्य मनोविज्ञान की प्रस्तावना

- (क) विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा और अन्य विज्ञानों से उसका अंतर
- (ख) मस्तिष्ठक की संकल्पना
- (ग) मेसमार और उसका सिद्धांत—चेतनता की हिप्नोटिज्म रचना।
- (घ) फ्रायड और उसका सिद्धांत—अचेनन की गतिशीलता कामलिप्सा का विकास
- (ङ०) मनोविज्ञान की अन्य समकालीन विचारधाराएं
- (च) स्वस्थ और रुग्न होने पर मस्तिष्ठक और शरीर के बीच संबंध
- (छ) प्रतिशत। कल्पना। आईडिएशन बुद्धि। सूति
- (ज) बोध, कोनेशन, अनुभव, सहजवृत्ति, व्यवहार।

होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका

होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका की रचना अन्य मेटीरिया मेडिकाओं की रचना से भिन्न है। होम्योपैथी का विचार है कि मानव-शरीर के पृथक-पृथक अंगों या तंत्रों पर अथवा पशु शरीर पर या उसके भिन्न-भिन्न हिस्सों पर औषधि क्रिया का अध्ययन, ऐसी क्रिया का जीवन प्रक्रिया पर प्रभाव के एक पक्ष का अध्ययन मात्र है। इसमें हम औषधि की क्रिया का समग्र रूप में भूलाकृत नहीं कर पाते हैं। और परिणामतः वह रूप हमारे अध्ययन से छूट जाता है।

2. औषधि किया का आवश्यक और संपूर्ण ज्ञान तभी हो सकता है जब स्वस्थ अवस्था पर मात्रात्मक सिनापिक औषधि का प्रयोग किया जाए। इसी पद्धति से हम व्यक्ति के सम्पूर्ण मन और शरीर से संबंधित विकारे हुए आंकड़ों को समझ सकते हैं और परिणामतः ऐसे समग्र मानव पर ही औषधि ज्ञान का प्रयोग किया जाना है।

3. होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका में ऐसी औषधि से उत्पन्न लक्षणों का कार्यप्रदर्शी (शिर्मैटिक) अवध्यात्मक वर्णित होता है उसमें उनके निवेदन या अंतरण -संबंध के बारे में कीई सिद्धांत या स्पष्टकीकरण नहीं दिया जाता है। प्रत्येक औषधि का संश्लिष्टात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए और इसी के आधार पर होम्यो-पैथी का विद्यार्थी ऐसी औषधियों का पृथक-पृथक और मनिष्ट रूप में अध्ययन करने और उपयुक्त नुस्खा लिखने में सफल हो सकेगा।

4. सर्वप्रथम, आम तौर से होने वाले रोगों पर अद्यता सामान्य औषधियों और पालीक्रेस्टों की चर्चा की जानी चाहिए जिससे कि विद्यार्थी नैदानिक (कलीनीकल) कक्षा में या आउटडोर ड्रूटी पर ऐसी औषधियों के प्रयोग से भली प्रकार परिचित हो जाए। उनकी विस्तृत और गम्भीरता पूर्वक व्याख्या की जानी चाहिए और इस संदर्भ में, विद्यार्थियों को ऐसी औषधियों का तुलनात्मक और पारस्परिक संबंध भी स्पष्ट किया जाना चाहिए। विद्यार्थी को औषधियों के प्रभाव क्षेत्र और सामूहिक संबंधों से पूर्णतः परिचित कराया जाना चाहिए।

कम सामान्य और असाधारण औषधियों की मात्रा की उपरेक्षा बताकर, उनके केवल विशिष्ट गुणों और लक्षणों के स्पष्टीकरण पर ही जोर दिया जाना चाहिए। तत्पश्चात् असाधारण औषधियों का अध्ययन कराया जाना चाहिए।

5. ट्रैट्यूटोरियल अवश्य होने चाहिए जिससे कि एक छोटी संख्या में विद्यार्थी, अध्यापक के निकट संपर्क में आ सके और रोगी के उपचार के संबंध में मेटीरिया मेडिका के प्रयोग का अध्ययन कर सकें और उसे समझ सकें।

6. चिकित्साशास्त्र पढ़ाते समय विद्यार्थी का ध्यान मेटीरिया मेडिका की ओर आकर्षित किया जाना चाहिए जिससे कि रोग लक्षणों को देखते ही संबंधित औषधि की पूर्ववर्ग से औषधि निश्चित की जा सके। विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे रोगों, में मेटीरिया मेडिका के व्यापक स्त्रोतों का उपयोग करें और विशिष्ट रोगों के लिए कुछ- औषधियों माल को रट कर अपने ज्ञान को सीमित न करें। हेनीमैन के इस दृष्टिकोण से विद्यार्थी न केवल प्रकट होने वाले रोग लक्षणों को ही उचित रूप में समझकर रूण अवस्था में उनके रोगहर मूल्य को जान सकेंगा अपितु औषधारिक परीक्षा संबंधी उसका बोझ भी कम हो जाएगा। अन्यथा वर्तमान रूख सो रोगों के प्रति एलोपैथिक दृष्टिकोण की ओर मुका हुआ है, जो आर्गेनन के तिद्वांतों के प्रतिकूल है।

मेटीरिया मेडिका का प्रयोग, आउटडोर और अस्पतालों के बाहरी में मौजूद रोगियों के संदर्भ में समझाया जाना चाहिए।

तुलनात्मक मेटीरिया मेडिका और चिकित्साशास्त्र पर लेक्चरों और ट्रैट्यूटोरियलों को यथासाध्य विभिन्न विभागों में नैदानिक आयुर्विज्ञान पर होने वाले लेक्चरों के साथ, संबद्ध दिया जाना चाहिए।

7. औषधियों के बारे में शिक्षण के लिए महाविद्यालय में हर्बेरियम शीटें और अन्य निदर्श विद्यार्थियों को प्रदर्शित किए जाने चाहिए। लेक्चरों को आकर्षक बनाया जाना चाहिए और पौधों तथा अन्य सामग्री के स्लाइड दर्शित करके संबंधित पक्ष को स्पष्ट किया जाना चाहिए।

8. (अ) प्रारंभिक लेक्चर : होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका के शिक्षण में निम्नलिखित विषयों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए, अर्थात् :—

(क) होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका का स्वरूप और प्रविष्ट्य

(ख) होम्योपैथी मेटीरिया मेडिका के स्त्रोत

(ग) मेटीरिया मेडिका के अध्ययन के अनेक ढंग

(आ) औषधियों का अध्ययन निम्नलिखित शीषों के अधीन किया जाना चाहिए, अर्थात् :—

(1) सामान्य नाम, प्रकृतिक ऋग, प्राकृतिक आकास, प्रयुक्त भाग, तैयारी

(2) औषधि पूर्विंग के स्त्रोत

(3) विशिष्ट लक्षणों और वृत्तियों पर जोर देते हुए औषधि की लाक्षणिकी (सिमटोमैटोलाजी)

(4) औषधियों का तुलनात्मक अध्ययन

(5) सदृश, विरोधी, प्रतिकारी और सुसंगत औषधियों

(6) उपचारार्थ प्रयोग (अनुप्रयुक्त मेटीरिया मेडिका)

(इ) शुश्लर की बायोकेमिक चिकित्सा पद्धति के अनुसार 12 टिप्प्यू दवाओं का अध्ययन।

परिशिष्ट 1

बी० एच० एम० एस० प्रथम परीक्षा के लिए मेटीरिया मेडिका के पाठ्य विषयण में सम्मिलित औषधियों की सूची

- | | |
|-------------------------|-------------------------|
| 1. एओटैनम | 2. एकोनाइट नैपिलस |
| 3. एसक्यूलस हिप | 4. इथूजा सिनापियम |
| 5. एलियम सेवा | 6. एलोसोकोइडाइना |
| 7. एमोनियम कार्ब | 8. एष्टीमोनियम नूड |
| 9. एष्टीमोनियम टाट्रिकम | 10. एपिस मेलिफिक |
| 11. अर्जेन्टम मेटालिकम | 12. अर्जेन्टम माइट्रिकम |

- | | | | |
|-----------------------|-------------------------|------------------------|-------------------------------|
| 13. आर्निक । माण्ट | 14. आर्सेनिकम एल्बम | 7. एमोनियम म्यूरिएटिकम | 8. एनाकाड्यम आरिएण्टे-
लिस |
| 15. आरम ट्रि | 16. आरम मेटालिकम | 9. एपोसाइनम कैन | 10. आर्सेनिकम आयोड |
| 17. शैपटीशिया टिन | 18. बेराइटा कार्ब | 11. बिस्मथ | 12. ब्रोमियम |
| 19. थेलाडोना | 20. बार्बेरिस बलर्गीरिस | 13. बोविस्टा | 14. कैक्टस ग्रैण्डी |
| 21. बोरेक्स | 22. कोरेक्स | 15. कैलकोरिया आर्से | 16. कैम्फर |
| 23. कैल्केरिया कार्ब | 24. कैलेन्हूला | 17. कैल्थरिस | 18. चैलीडोनियम मेजस |
| 25. कार्बोवेज | 26. कास्टिकम | 19. कोनियम मैकुलेटम | 20. डिजीटैलिस पर |
| 27. कैमोमिला | 28. सिना | 21. फैरम मैट | 22. कैली ब्रोम |
| 29. सिकोना आफ | 30. कल्विकम औटग | 23. कियोजोटम | 24. नैट्रम कार्ब |
| 31. कलोसिन्थ, | 32. ड्रोसेर | 25. नक्स मस्केटा | 26. ओपियम |
| 33. डल्कामारा | 34. यूफ्रेशिया | 27. पैट्रोलियम | 28. कासकोरस |
| 35. जैखसीमियम | 36. प्रेफाइटज | 29. फाइटोलैक्फा | 30. प्लाटिना मेट |
| 37. हीपर सल्फर | 38. हैलीबोरस | 31. सीपिया | |
| 39. ह्योसियामस | 40. इनेशिया | | |
| 41. इपीकाक | 42. फैलीबाइक्रोम | | |
| 43. कैलीकार्ब | 44. सैकेसिस | | |
| 45. लिडम पाल | 46. लाइकापोडियम | | |
| 47. मर्क्यूरियस कर | 48. मर्क्यूरियस सल | | |
| 49. नाइट्रिक ऐसिड | 50. नक्स बोमिका | | |
| 51. पाडोफाइलम | 52. पल्सेटिला | | |
| 53. रसटाक्स | 54. सिकेलीकर | | |
| 55. स्पार्जिया टोस्टा | 56. सल्फर | | |
| 57. थूंजा औषित्स | 58. बेराद्रम एल्ब | | |
| 59. कैलकेरिया फ्लोर | 60. कैलकेरिया फास | | |
| 61. कैलकेरिया सल्फ | 62. फेरम फास | | |
| 63. कैलीम्योर | 64. कैली फास | | |
| 65. कैली सल्फ | 66. मैगनेशिया फास | | |
| 67. नेट्रम म्पोर | 68. नेट्रम फास | | |
| 69. नेट्रम सल्फ | 70. साइलिशिया | | |

परिशिष्ट 2

बी० एच० एम० एस० त्रितीय परीक्षा के लिए मेटीरिया मेडिका का पाठ्य विवरण

बी० एच० एम० एस० प्रथम परीक्षा (परिशिष्ट—1) के लिए 70 औषधियों की सूची के अतिरिक्त, बी० एच० एम० एस० त्रितीय परीक्षा के लिए मेटीरिया मेडिका के पाठ्य-विवरण में निम्नलिखित अतिरिक्त औषधियां सम्मिलित की गई हैं :—

परीक्षा

- | | | | |
|------------------------|---------------------|-----------------|------------------------|
| 1. ऐसेटिक ऐसिड | 2. एकिट्या रेसिमोसा | 41. क्रोकस सेटा | 42. क्रोटेलस हारिडस |
| 3. एग्रिस्कस मस्केरियस | 4. एग्नस कैक्टस | 43. क्रोटन टिग | 44. क्रूप्रम मेट |
| 5. एल्युमिना | 6. अम्बा शीसिया | 45. माइक्सोमैन | 46. डायस्कोरिया विलोसा |

परिशिष्ट 3

बी० एच० एम० एस० त्रितीय और चतुर्थ परीक्षाओं के लिए मेटीरिया मेडिका का पाठ्य विवरण

बी० एच० एम० एस० प्रथम और द्वितीय परीक्षाओं (परिशिष्ट 1 और 2) के लिए औषधियों की सूची के अतिरिक्त बी० एच० एम० एस० त्रितीय और चतुर्थ परीक्षाओं के लिए मेटीरिया मेडिका के पाठ्य विवरण में निम्नलिखित अतिरिक्त औषधियां सम्मिलित की गई हैं :—

- | | | | |
|------------------------|----------------------|------------------------|------------------------|
| 1. एबिस कैन | 2. एबिस नायग्रा | 11. एस्टीरियस रबेस्स | 12. एबाना सेटाइवा |
| 3. एकासिफा इण्डिका | 4. एकिट्या स्पाइकेटा | 13. बैसीलीम | 14. बेराइटा म्पोर |
| 5. एबोनिस घर्नालिस | 6. एड्रिनेलिन | 15. बेलिसपिरेमिस | 16. बेन्जियोक एसिड |
| 7. एन्थ्रेसिनम | 8. एण्टोमोनियम आर्से | 17. ब्लाटा ओरिएन्टैनिस | 18. घूफो रैन्स |
| 9. आर्टेमिसिया बल्मैरि | 10. एसाकोटिङा | 19. फ्लेडियम | 20. कैनाबिस इण्डिका |
| 11. एस्टीरियस रबेस्स | 12. एबाना सेटाइवा | 21. कैनाबि सेटाइवा | 22. कैप्सिकम |
| 13. बैसीलीम | 14. बेराइटा म्पोर | 23. कार्बो एनीमैलिस | 24. कार्बोलिक एसिड |
| 15. बेलिसपिरेमिस | 16. बेन्जियोक एसिड | 25. कार्डिंगस मैरिएन्स | 26. कारसाइलोसिन |
| 17. ब्लाटा ओरिएन्टैनिस | 18. घूफो रैन्स | 27. कोलोफाइलम | 28. सिङ्गन |
| 19. फ्लेडियम | 20. कैनाबिस इण्डिका | 29. सियानोबस | 30. चिनिनम सल्फ |
| 21. कैनाबि सेटाइवा | 22. कैप्सिकम | 31. कोलस्टेटियम | 32. साइक्स्टा विरोसा |
| 23. कार्बो एनीमैलिस | 24. कार्बोलिक एसिड | 33. क्लैमेटिस | 34. कोका |
| 25. कार्डिंगस मैरिएन्स | 26. कारसाइलोसिन | 35. काकुलस इण्डिकस | 36. काफिया क्रूड |
| 27. कोलोफाइलम | 28. सिङ्गन | 37. कोलिन्सोनिया | 38. कान्डिउररंगो |
| 29. सियानोबस | 30. चिनिनम सल्फ | 39. कोरालियम | 40. फैटिगस |
| 31. कोलस्टेटियम | 32. साइक्स्टा विरोसा | 41. क्रोकस सेटा | 42. क्रोटेलस हारिडस |
| 33. क्लैमेटिस | 34. कोका | 43. क्रोटन टिग | 44. क्रूप्रम मेट |
| 35. काकुलस इण्डिकस | 36. काफिया क्रूड | 45. माइक्सोमैन | 46. डायस्कोरिया विलोसा |
| 37. कोलिन्सोनिया | 38. कान्डिउररंगो | 47. डिप्पेरिनम | 48. हकुइसिटम हाईगेल |
| 39. कोरालियम | 40. फैटिगस | 49. एरिगैरान | 50. यूपीटोरियम पक्की |

51. फ्लोरिक एसिड	52. ग्लोनायन
53. क्लोनियस	54. हाइड्रोस्टिट्स
55. हाइड्रोकोटाइल	56. हाइपेरिकम
57. आयोडिथम	58. कैलिमया लैटीफालिया
59. लैक केनाइनम	60. लैक छेफ
61. लिलियम टिग	62. लिथियम कार्ब
63. लोबेलिया इन्फ्लाटा	64. लिसिन
65. मैग्नीसिया कार्ब	66. मैग्नेसिया म्यूर
67. मैलेन्टिनम	68. मैड्हिरनम
69. मेकाइटिस	70. मेलिलोटस
71. मिनियैन्चिस	72. मर्कर्पूरियस सियानेट्स
73. मर्कर्पूरियस उलसिस	74. मर्कर्पूरियस सल्स
75. मिलीफोलियम	76. मेजेरियम
77. मस्कस	78. क्यूरेक्स
79. म्यूरियाटिक एसिड	80. नैजा
81. ओनासमोडियम	82. आकैलिक एसिड
83. पैसीफ्लोरा	84. पैट्रोलियम
85. फासफोरिक एसिड	86. फाइजस्टिट्मा
87. पिकरिक एसिड	88. प्लम्बम मैट
89. सोरिनम	90. पायरोजेनियम
91. रैडियम ब्रोम	92. रैनानक्यूलस
93. रैफनस	94. रैटेनहिया
95. रिजम	96. रडोडेंड्रम
97. रिउमैक्स	98. रुटा
99. सेबांडिला	100. सेवाल सेशेलेटा
101. सैब्राइना	102. सेम्बुक्स नाइग्रा
103. संगुइनेरिया कैनाडेन	104. सैनिकिउला
105. सासपिरिला	106. स्कुइला
107. स्पाइजेलिया	108. स्टेनम
109. स्टेफिसेप्तिया मेट	110. स्टिक्टा एल्मोरिस
111. सेलेनियम	112. सल्प्यूरिक एसिड
113. स्ट्रामोनियम	114. सिम्फाइटम
115. सिफिलीनम	116. सिमिजियम जैवो
117. टेबेकम	118. टेक्साकम
119. टंरीबिस्थिना	120. टेरेण्टुला
121. थेरीडियन	122. थैलस्पीबुरसा
123. थायरायडिनम	124. ड्रिलिउथ्रोपेन्डुलम
125. यूरेटिका यूरेन्स	126. आस्टिलागो
127. बेक्सीनियम	128. बेलेरिझाना
129. बेरियोलिनम	130. बेरेट्म विर
131. विका वाइनर	132. वाइपेरा
133. लाइबर्नम ओप्यूलस	134. एक्सरे
135. जिकम मेट	

होम्योपैथी वृश्णि का आर्गेन्नन और सिद्धांत बी० एच० एम० एस० प्रथम, छितीय और तृतीय

परीक्षाएं

हेनीमन का आर्गेन्नन आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कृति और एक संहिताबद्ध मौलिक रचना है। आर्गेन्नन

के अध्ययन तथा होम्योपैथी के इतिहास और उसके संस्थापक की जीवनी से यह ध्यान देता है कि होम्योपैथी, रोगी के उपचार और नैरोग्य जैसी एक महत्वम् मानवीय समस्या के समाधान के लिए तर्क प्रेरक तार्किक पद्धति के उपयोग का एक साधन है। अतः तर्क के, वियोजक और प्रेरक दोनों ही, मूल सिद्धांत की पूर्ण जानकारी अत्यावश्यक है। तदनुसार आर्गेन्नन इस रीति से पढ़ाया जाना चाहिए कि विद्यार्थी को उस तर्कपूर्ण सिद्धांत की जटिलताएं स्पष्ट हो जाएं जिस पर होम्योपैथी की आधारशिला रखी हुई है और जिसकी सहायता से होम्योपैथी को अपना वैज्ञानिक कार्य करने में आसानी और प्रथमेक रोगी का उपचार करने में सुविधा होती है।

व्यवहारिक पक्ष को भली प्रकार समझ और याद कर लिया जाना चाहिए जिससे कि चिकित्सक के रूप में व्यावहारिक कार्य को भली प्रकार किया जा सके।

बी० एच० एम० एस० प्रथम परीक्षा

प्रारंभिक लेवल—10

विषय

होम्योपैथी क्या है?

यह चिकित्साशास्त्र का कोई विशेष स्वरूप मात्र न होकर एक से पूर्ण चिकित्सा-पद्धति है। इसका जीवन, स्वास्थ्य, रोग उपचार और नैरोग्य के प्रति एक सुभिन्न दृष्टिकोण है।

—इसका पूर्णतः तर्कपूर्ण और वस्तुपरक आधार और वृष्टिकोण।

—होम्योपैथी अनन्यतः एक वस्तुपरक और युक्तिपूर्ण चिकित्सा पद्धति है।

—अभिगम और पद्धति की दृष्टि से होम्योपैथी पूर्णतः वैज्ञानिक है।

—यह संप्रेषित तथ्यों और आकड़ों पर तथा ऐसे संप्रेषित तथ्यों और आकड़ों से संबद्ध अपुरुक्तरणीय प्रेरक और वियोजक तर्क पर आधारित है।

—होम्योपैथी का सभी निदानपूर्वी और परानीदानिक और नीदानिक विषयों के प्रति सुभिन्न दृष्टिकोण है।

—सभी परानीदानिक और निदानपूर्वी विषयों के बारे में प्रारंभिक विचार। उनके पारस्परिक संबंध और संपूर्ण जीवधारियों के साथ संबंध।

—नैरोग्य और स्वास्थ्य के प्रयोजन के लिए होम्योपैथी के सिद्धांतों के कारण उपयोग के लिए उन विषयों के अत्यावश्यक तथ्यों के अध्ययन का महत्व।

—गतिशील भेषजगुण विज्ञान (प्रूषिग) और होम्योपैथी की फार्मासी के सुभिन्न तात्त्विक लक्षण।

2. हेनीमन का जीवन और होम्योपैथी के पथप्रदर्शक तथा उनका योगदान।

3. हेनीमन भेषजे आर्गेनन—सूत्र 1 से 70 तक

बी० एच० एम० एस० हितीय परीक्षा

1. हेनीमन की भेषज आर्गेनन, बी०एच०एम०एस० पाठ्यक्रम के दौरान समाप्त कर दी जानी चाहिए। परीक्षा, सूत्र 1 से 145 तक ही सीमित रहनी चाहिए।

2. भेषज आर्गेनन की प्रस्तावना (पांचवा और छठा संस्करण)

3. होम्योपैथी दर्शन (क) होम्योपैथी दर्शन पर कैट के लेक्चर, (ख) होम्योपैथी दर्शन पर स्टुर्ट क्लोज—लेक्चर्स एण्ड एसेज (दि जीनस आफ होम्योपैथी), (ग) आर्ट और क्योर बाई होम्योपैथी—एच०रार्बर्ट (घ) साइंस आफ थेराप्यूटिक्स—डनहम। होम्योपैथी दर्शन पर लेक्चरों के दौरान निम्नलिखित मदों की व्यवस्था की जानी चाहिए:—

- (i) होम्योपैथी का प्रविष्य।
- (ii) होम्योपैथी का तर्क।
- (iii) जीवन, स्वास्थ्य, रोग और अस्वास्थ्य।
- (iv) संवैद्यता, प्रतिक्रिया और अधिकार्यता।
- (v) गंभीर और चिकित्सक दोषों के होम्योपैथी सिद्धांत की साधारण विकृति।
- (vi) होम्योपैथी दर्शन।
- (vii) शक्तिकरण और अस्थन्त सूक्ष्म खुराक और औषधि तथा औषधि शक्ति।
- (viii) होम्योपैथी दृष्टिकोण के रोगी की परीक्षा
- (ix) सकल लक्षणों का महत्व और अटिलताएं।
- (x) लक्षण-मूल्य।
- (xi) होम्योपैथी रोगकूदि।
- (xii) उपचार (औषधि) के प्रभाव को देखकर पूर्वानुमान।
- (xiii) दूसरा नुस्खा।
- (xiv) कठिन और ठीक न होने वाले रोगी-उपशमन।

4. खुजेज की कृति, “प्रिसिपिल्स एण्ड प्रेक्टिस आफ होम्योपैथी” का प्रस्तावना संबंधी अध्याय। आर्गेनन पर प्रारंभिक लेक्चर देने वाले आचार्यों से यह निवेदन है कि वे विद्यार्थियों के मस्तिष्क में उन तक्तपूर्ण सिद्धांतों की जटिलताएं बैठाल देने जिन पर होम्योपैथी की आधारशिला रखी गई हैं। आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में होम्योपैथी के सभी पहलुओं की दृष्टि से उसका ठीक-ठीक स्थान निर्धारण करने के लिए विद्यार्थियों का परिचय, पश्चिम में आयुर्विज्ञान के विकास के इतिहास और हेनीमन के उसमें योगदान से भली प्रकार करा दें। हेनीमन के जीवन पर भी प्रकाश ढालें।

बी० एच० एम० एस० तृतीय परीक्षा

1. हेनीमन का औषधि आर्गेनन (पांचवा और छठा संस्करण)।

2. होम्योपैथी आयुर्विज्ञान का इतिहास—जैसा कि वह हेनीमन के समय में था; हेनीमन की प्रारंभिक जीवन, विद्यमान उपचार पद्धति से उत्पन्न उसकी निराशा, हेनीमन के “विष विष को मारता है” सिद्धांत की खोज, हेनीमन का पश्चात्थर्ता जीवनबृत्। विभिन्न वेशों में होम्योपैथी का प्रवेश। होम्योपैथी के प्रवर्तक और उनका योगदान। होम्योपैथी का अद्यतन विकास। होम्योपैथी के विकास की वर्तमान धारा। होम्योपैथी का अन्य चिकित्सा पद्धतियों पर प्रभाव।

3. होम्योपैथी दर्शन।

4. चिकित्सक रोगों पर हेनीमन की पुस्तक।

आर्गेनन का शीर्षों के अनुसार प्रध्ययन

अ. सैद्धांतिक पक्ष पर लेक्चर (सूत्र-1-70)

(क) चिकित्सक का लक्ष्य और सर्वोत्तम मैरोग्य आदर्श—सूत्र 1 और 2

(ख) चिकित्सक का ज्ञान—सूत्र 3 और 4

(ग) रोगों का ऐसा ज्ञान जिससे अनुमान लगाएं जाते हैं—सूत्र 5 से 15 तक

(घ) औषधि ज्ञान—सूत्र 19 से 21

(ङ) उपचार की अन्य पद्धतियों की तुलना में होम्योपैथी का मूल्यांकन—सूत्र 22 से 69 तक

(च) संक्षेप—नैरोग्य के लिए तीन शर्तें—सूत्र 70

आ. आर्गेनन के प्रयोगात्मक भाग को निम्नलिखित विषयों में विभाजित किया और पढ़ाया जाएगा, अर्थात्:—

(क) नैरोग्य और रोगीबूत लेने के लिए आधम्यक बातें—सूत्र 71 से 104 तक

(ख) औषधि की पेथोजेनेटिक शक्तियां, अर्थात्, औषधि प्रूविंग या किस प्रकार औषधि ज्ञान प्राप्त हो, सूत्र 105-145

(ग) किस प्रकार ठीक औषधि का चयन किया जाए—सूत्र 147-150, 153 और 155

(घ) ठीक खुराक—सूत्र 157, 160-164, 169, 171 और 173

(ङ) स्थानिक रोग—सूत्र 204, 206 और 208

(च) मानसिक रोग—सूत्र 210 से 230 तक

(छ) सविराम रोग—सूत्र 231, 232, 236, 238, 240-242

(ज) खुराक निर्णयन और औषधि देने के दंग—सूत्र 245, 248, 252, 253, 256, 262-263, 269, 270, 272, 275, 276, 280, 286, 289, 290 और 291।

प्रयोगात्मक

आर्गेनन ज्ञान का प्रयोगात्मक उपयोगः—

अंतरंग और बहिरंग दोनों विभागों में नैदानिक लक्षण—होम्योपैथी दृष्टिकोण से रोगी-परीक्षा:—

- (क) रोग अवधारण
- (ख) रोग वर्गीकरण
- (ग) लक्षण मूल्यांकन
- (घ) लक्षण श्रेणीकरण
- (ङ) औषधि और शक्ति का चयन] लक्षण मूल्यांकन
तथा खुराक की पुनरावृत्ति]
- (च) रोगवृद्धि या होम्योपैथी रोग वृद्धि
- (छ) दोषपरक (मियासमैटिक) निवान
- (ज) दूसरा नुस्खा
- (झ) उपचार के प्रभाव को देखकर पूर्वानुमान

बी० एच० एम० एस० तृतीय परीक्षा

बी० एच० एम० एस० तृतीय परीक्षा में आर्गेनन और होम्योपैथी दर्शन के सिद्धांत के प्रश्नपत्र निम्नलिखित रूप में विभाजित किए जाएंगे, अर्थात्:—

प्रश्नपत्र 1—आर्गेनन की प्रस्तावना (पांचवां और छठा संस्करण)---सूत्र 1—294 तक

- प्रश्नपत्र-2—(i) होम्योपैथी आयुर्विज्ञान का इतिहास।
(ii) होम्योपैथी दर्शन।
(iii) चिरकालिक रोग।

विहृति विज्ञान, जीवाणु विज्ञान और परिजीवी विज्ञान

(1) विहृति विज्ञान और जीव रसायन का अध्यापन बहुत सतर्कतापूर्वक और न्यायपूर्ण रूप में किया जाना चाहिए। एलौपैथी, ऊतक विकिस्ता विज्ञान और जीव रसायन को रुग्ण परिस्थितियों से संबद्ध करके यह समस्ता है कि जीवाणु, रोगों के परिस्थितिजन्य कारण हैं किन्तु होम्योपैथी रोगों को पूर्णतः प्राणशक्ति का गतिशील विक्षेप (डिस्ट्रैसेज) मानती है जिसकी अभिव्यक्ति ऐसी सचेत संवेदनाओं और कार्यों से होती है जिनके कारण व्यापक ऊतक परिवर्तन हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है। ऊतक-परिवर्तन स्वयं रोगों का आवश्यक भाग नहीं है और तबमुसार वह होम्योपैथी में औषधि देकर उपचार की विषयक स्तुति नहीं है।

(2) लुइस पेस्चर और राबट कोच की खोजों के पश्चात् से विकिस्ता क्षेत्र में इस सिद्धांत में विश्वास किया जाने लगा है कि “कीटाणुओं का नाश करके रोग को ठीक करो”। किन्तु पश्चात्कर्त्ता अनुभव से यह प्रकट हुआ है कि इसके अनावा एक ग्रामक तथ्य और भी है जिसके कारण रोग का संक्रमण और वास्तविक उत्पत्ति होती है। यह तथ्य है रोगी की सुआत्मता (एसटिबिलिटी) चूंकि होम्योपैथी मानव के विभिन्न अस्थास्थकर तथ्यों सूक्ष्म जीवी या

अन्यथा के प्रति प्रतिक्रियाओं से ही मुख्यतया संबंधित है अतः रोग उत्पत्ति में जीवाणु या विषाणु की भूमिका, होम्योपैथी के क्षेत्र में पूर्णतः गोण है।

(3) यद्यपि जीव रसायन का ज्ञान कुशल होम्योपैथी विकिस्ता के लिए आवश्यक है तथापि इसकी आवश्यकता, विकिस्ताशास्त्र के लिए न होकर निदान पूर्वानुमान रोगों की रोकथाम और सामान्य व्यवस्था के लिए है। इसी प्रकार विहृति विज्ञान का ज्ञान, रोग अवधारण पूर्वानुमान, रोगी और रोग के लक्षणों के बीच विभेद और उपयुक्त होम्योपैथी औषधि की खुराक और शक्ति का निश्चय करने के लिए आवश्यक है।

(4) विद्यार्थियों को विहृति विज्ञान का केवल छोटा मोटा आधारिक प्रशिक्षण ही, जिसका कोई विशेषज्ञीय भूलना चाहिए। विहृति विज्ञान के प्रशिक्षकों को यह नहीं भूलना चाहिए कि उनका उद्देश्य विकिस्ता व्यवसायियों को, विशिष्टतः होम्योपैथी विकिस्ता व्यवसायियों को प्रशिक्षण देना है न कि विहृति विज्ञान के प्रतिविधियों (टैकनीशियन) या विशेषज्ञों को प्रशिक्षित करना। जीवित न कि मृत रोगी ही इस विषय के अध्यापन का मुख्य लक्ष्य है।

(5) विहृति विज्ञान के अनुदेशन का प्रयोग यह है कि विद्यार्थी व्यक्तिपरक लक्षणों और वस्तु परक लक्षणों को सहबद्ध कर सके, वैज्ञानिक लक्षणों का निर्वचन कर सके और उनका पारस्परिक संबंध समझ सके, क्योंकि यही विहृति विज्ञान का प्रमुख आधार है।

प्रस्तावना: विहृति विज्ञान का ग्रन्थिय—पुरानी विचारधारा—नई विचारधारा (होम्योपैथी) किस प्रकार विहृति विज्ञान का अध्ययन किया जाए।

संदर्भात्मक

जीवाणु विज्ञान :

आकारकी जीवविज्ञान, विसंक्रमण, रसायन-विकिस्ता, कृत्रिम माध्य (मीडिया) संक्रमण, प्रतिरक्षा, प्रतिक्रिया, इम्यूनिटी अतिसंवेद्धता, त्वचा परीक्षण जीवाणु, स्वाभाव का व्यवस्थित अध्ययन—महत्व। सामान्य विकारी और अविकारी जातियों का आकारिक, सांकुलिक, जीव रसायनिक सीरसी और विषालु व्यवहार। रोग जीवाणुओं से उत्पन्न विहृति संबंधी परिवर्तन और उनका प्रयोगशाला निदान। स्टेफिलोकोकाई, स्प्टेटोकोकाई, डिप्लोकोकाई, नाहसीरिया, माहकोएकटेरियम क्षय (टाइप) माइकोकैटेरियम लेपरी, स्पाईरोकेटीज और विहृति संबंधी माइको बैक्टेरी के नाम और उनके बीच अंतर, कानीबैक्टीरियम डिप्थीरी, ऐरोबिक स्पोर युक्त बैक्टीरिया बैसीलस एन्थीस, अवायूजीव, रोगजनको (पैथोजेन) के साधारण और विशिष्ट लक्षण। कुछ महत्वपूर्ण गैर रोगजनकों के नाम। ग्राम निगेटिव और जीवाणु रोगजनक सालमोनेलिया विवरिक बैक्टेरियम, पास्टेररेना का वर्गीकरण पहचान। हीमोफीलिस, सूडोमोन, ब्रूसेला, रिकेटिस्या, प्रोटेयस,

स्पाइरोकेटीज का सामान्य ज्ञान—सामान्य ज्ञान, टैपोनेमा पैलिडम और लप्टोस्पाइरोकेटोरो हीमोरोगियास के ब्यौरे। वायरस—साधारण लक्षण, रोग वर्गीकरण, कुछ प्रमुखी वायरस रोगों से लेप्से, छोटी मात्रा, रेबीज, जीवाणुभौजी से प्रतिरक्षा के कुछ उपाय।

2. परजीवी विज्ञानः

प्रमुख राहजोपोडा के प्रोटीजोआ-वर्गीकरण नाम एण्ट हिस्टोलीटिक आकार की रोगजनन और रोगजनक विशिष्टताएं निदान, प्लास्मोडिया की एटिकोली स्पोरोजी से भिन्नता, जातियों का जीवनवृत्त और रोगजनन अन्तर।

मैस्टिगोफोरा—सामान्य स्थूल आकृतिक लक्षण, वर्गीकरण, रोगजनन, बैक्टर, कालाफर का विकृति विज्ञान, महत्वपूर्ण लक्षण स्रोत बैलेटीडियम कोलाइड को कारण रोग।

कृमि—कुछ पदों की परिभाषा, साधारण वर्गीकरण, नेमाटोड, सेस्टोड और ट्रैमाटोड के बीच अन्तर सेस्टोड और नेमाटोड महत्वपूर्ण जातियों के मुख्य विभेदक आकृतिक लक्षण और जीवनवृत्त तथा रोगजनन, जिगर, फेफड़ों, आंतों और रक्त का संक्रमण—सामान्य जीवनवृत्त—मिस्टोसोमों और अन्य ट्रैमाटोडों के बीच अन्तर।

3. विकृति विज्ञानः

(क) सामान्य विकृतिविज्ञान के सिद्धान्तः

क्षति शोष और निरोहण (रिपेयर) अपघटन (डिजन-रेशन), क्लाउडी सूजन और शब्दपरीक्षा, अपघटन। स्थिरीकरण के सिद्धान्त। फैटी परिवर्तन लिपाइड अपघटन। नेक्रोसिस और गैंग्रीन। पिगमेंट कैल्शियम और यूरिक अम्ल विक्षेप। चयापचय। अविटामिनता। अरक्तता। विकास में अव्यवस्था मोबाल्सेसिया, इनाप्सेसिया, एट्राफी, हाईपरट्राफी, एरीसिपेड्स, न्योप्लाज्म वर्गीकरण, बिनाइन और मैलिग्नेन्ट, प्रसार, मनोवैज्ञानिक तत्व, प्रायोगिक कैन्सरजनन, सिद्धांत, परिचालन, विघ्न, क्लोरिंग अनिद्रा, श्वासबोसिस, एम्बोलिज्म, इन्फेक्शन, हाइपरीमिया (शाक) जटके।

(ख) विकृति विज्ञान और विशेष अंग।

सामान्य अव्यवस्था में विकृत शरीर रचना (मैक्रोस्कोपिक)।

(ग) नैदानिक और रासायनिक विकृति विज्ञान।

रक्त—विभिन्न प्रयोजनों के लिए संग्रहण हीमोग्लोबीन आकलन लाल रक्त कणिकाओं, विभाणु, एम०सी०एच० एम०सी०वी०, एम०सी०एच०सी० की कुल संख्या, गणना, विभेदी श्वेत कोणिका गणना मलेरिया, परजीवी, लीसमेनिया, रेटीफेरल रक्त में ट्राइग्नोसोम, एरो या स्लीन पंक्तिर समग्री। लाल और श्वेत रक्त कणिकाओं का विकास। ल्यूकोमिया। एरीथ्रोइट तलछटीकरण, रक्त कल्पन। एल्डीहाइड और चापड़ा परोक्षण। रत्नाश और स्कन्दन समय। प्रोयोग्विन समय।

रक्त समूह रक्त शर्करा का आकलन, शर्करा संधारण परीक्षण। जिगर कार्ड परीक्षण, विशिष्टतः विलिरिविन।

बेनडेनबर्ग प्रतिक्रिया, पीलिया इन्डेक्स, प्रभागी प्रयोगाहार मूल-यूरिया आकलन, यूरिया समाप्ति परीक्षण, जल रोग, मूत्रिक जमाव केसेज, विभिन्न ओवा-विभेदीकरण वैसीलेरी अंत। अमीवी अंत। कंठ स्वाव, थूक, सी०एस०एच०, एसिटिक और प्लूरा तरलों की परीक्षा।

प्रयोगारम्भः

नैदानिक और रासायनिक विकृति विज्ञानः

हीमोग्लोबीन का आकलन (एसीडोमीटरी) द्वारा लाल और श्वेत रक्त कणिकाओं की संख्या। पतली और मोटी फिल्मों का स्टेनिंग। विभेदक गणना और परजीवी। इस्थिरो-साइट तलछटीकरण वर, मूत्र, भौतिक, रासायनिक, मूक्षमदर्शी एल्ब्यूमन और शर्करा की मात्रा, फेसेज-भौतिक रासायनिक (कोलट रक्त) और सूक्ष्म सूक्ष्मशर्शी—ओवा और प्रोटोजोआ के लिए।

विसंक्रमण की रीतियां भाष्य की तैयारी, सूक्ष्मदर्शी का प्रयोग। ग्राम और अग्नि फास्ट अभिरंजन स्टेन। माडिलिटी तैयारी। ग्राम पाजिटिव और नेगेटिव कोकी और बेसिली। कोरोनेक्टेरियम-ग्राम के लिए विशेष स्टेन और मवाद और थूक के फास्ट स्टेन।

हेकोकीज प्लेट—शर्करा प्रतिक्रियाएं-ग्राम अभिरंजन और ग्राम की चरता (मोटीलिटी), नेगेटिव आंत्र बैक्टेरिया। अदीप्त थ्रेन प्रकाशन द्वारा पास्चुरेला और स्पाइरोकोट्रैक का बाहुडंडल और प्रदर्शन—फेन्टानस का स्ट्रेन—लोबाइट्स अभिरंजन। नेक्रोबायोसिम के प्रदर्शन का ढंग।

विकारी ऊतक विज्ञानः

पैराफीन और हिमशीत संक्षणों के स्थिरीकरण, अन्तःस्थापन, कर्तन और अभिरंजन के ढंग की बाबत प्रयोगात्मक प्रशिक्षण। धूसर यकृतीभवन (ये हेपेटाइजेशन) गंभीर एपेन्डिसाइटिस, चिरकालिक एपेन्डिसाइटिस, सेप्टिक जिगर फोड़। कणांकुर (ग्रेनूलेशन) ऊतक केफड़े का क्षय, पोर्टल सिरोंसिस, केटी जिगर, मलेरोजिगर, एथिरीमा, पेपीलोमा, फ़ाइब्रोएडीनोमा, तन्तुपेशीआवृद्ध (फाइब्रोमायोमा), स्क्वेयर सेल्ड और बेसल सेल्ड कार्सिनोमा, एडोनोकार्सिनोमा कठोर, कार्सिनोमा, एमसेफलाइड कार्सिनोमा, लसिका ग्रंथि में गौड़ कार्सिनोमा, गोल और तर्कु मिन्निडल कोशकीय सार्कोमा।

व्यवहार आयुर्विज्ञान और विषविज्ञानः

होम्योपैथी आयुर्विज्ञान के विद्यार्थी के लिए यह विषय व्यावहारिक महत्व का है क्योंकि होम्योपैथी के चिकित्सकों को सरकार ऐसे क्षेत्रों में नियुक्त करना चाहती है जहां उनको चिकित्सा-विधिक मामले देखने होते हैं, शब्द परीक्षा करनी होती है और ऐसे मामलों में साक्ष्य देनी होती है। इन उद्देश्यों की पूर्ति की दृष्टि से व्यवहार आयुर्विज्ञान में जो प्रशिक्षण आजकल दिया जा रहा है वह अपर्याप्त है।

उक्त पाठ्यक्रम के लिए अनेक लेक्चर और प्रदर्शन किए जाने चाहिए। जिनके अन्तर्गत निम्नलिखित विषय भी पढ़ाए जायें अर्थात्:—

1. विधिक प्रक्रिया

व्यवहार आयुर्विज्ञान (मेडीकल ज्यूरिस्पॉडेम्स) की परिभाषा स्थापालय और उनका अधिकार क्षेत्र।

2. चिकित्साचार (मेडीकल इंजिनियरिंग)

चिकित्सक रजिस्ट्रीकरण संबंधी विधि और चिकित्सक तथा राज्य के पारस्परिक संबंध। होम्योपैथी केंद्रीय परिषद् अधिनियम, 1973 और उसके अधीन आचार संहिता, चिकित्सक और रोगी व्यावसायिक गोपनीयता संबंधी अनाचार चिकित्सक और विभिन्न कानून (अधिनियम) — प्रातीय और केंद्रीय, जैसे कर्मकार प्रतिकर अधिनियम, लोक स्वास्थ्य अधिनियम, क्षति अधिनियम, बाल विवाह, रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, विद्यालय अधिनियम, चिकित्साय गर्भ समाप्ति अधिनियम, पागलपन अधिनियम, भारतीय साक्ष्य अधिनियम आदि।

3. व्यवहार आयुर्विज्ञान

जीवित और मृत व्यक्तियों की परीक्षा और पहचान अंग, अस्थियाँ, धब्बे आदि, स्वास्थ्य, चिकित्सा-विधिक, शवपरीक्षा चिह्न, प्रक्रम और परिणाम, पूर्तिभवन (प्यूटी-फिकेशन), मरीभवन, साकुनीकरण, मृत्यु के प्रकार, कारण, माध्यम, प्रारंभ आदि। हमले, ब्रण, क्षतियाँ और हिंसा के कारण मृत्यु। श्वासावरोध के कारण मृत्यु, रक्त परीक्षा, रक्त धब्बे, शक्ति धब्बे, जलना, गरम तरल से जलना, विद्युत के फटके आदि। भूखा रहना, गमधीन, प्रसव, गर्भस्नास, शिशुवध, लैंगिक अपराध, राज्य जीवन के संबंध में उन्मत्तता और दुर्घटना बीमा।

विषयविज्ञान

सामान्य विपाक्तता विभिन्न विषयों के लक्षण और उपचार, शब्द-स्वरूप और परीक्षण के बारे में लेक्चरों का पृष्ठक पाठ्यक्रम होना चाहिए। निम्नलिखित विषयों का अध्ययन:—

खनिज अम्ल संक्षारक सब्लीमेंट आर्सेनिक और उसके मिश्र एल्कोहॉल अफीम और उसके भार, कार्बोलिक अम्ल, कार्बन मोनोक्साइड, कार्बन डाइआक्साइड। मिट्टी का तेल केनेबिस, ईडिका, कोकीन, बैलेडोना, स्ट्रीकिन और नक्स थोमिका, एकोनाइट, ओलेन्डर, सर्पविष, प्रूसिक अम्ल, सीसा-विष देना।

4. चिकित्सा-विधिक शब्द परीक्षा

शब्द स्वल्प अभिलेखन सामग्री, रासायनिक परीक्षक को भेजना। रासायनिक परीक्षक और प्रयोगशाला निष्कर्षों का निर्वचन। व्यवहार आयुर्विज्ञान में लेक्चर-पाठ्यक्रम पूरा करने वाले विद्यार्थियों को चाहिए कि वे व्यावहारिक आयुर्विज्ञान के आचार्य द्वारा की जाने वाली चिकित्सा-विधिक शब्द परीक्षा को देखने और समझने के लिए सभी संभव प्रयास करें। ऐसी आशा की

जाती है कि प्रत्येक विद्यार्थी कम से कम दस शब्द परीक्षाएं देखे और समझे।

5. प्रदर्शन

- (1) अस्त्र
- (2) कार्बनी और अकार्बनी विष
- (3) विषालू पौधे
- (4) चिकित्सा-विधिक विषयक चार्ट, चित्र, माडेल, एक्सरे फिल्म आदि।

निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान तथा परिवार कल्याण

(स्वास्थ्य शिक्षा और अनुबंधी आयुर्विज्ञान)

यह पाठ्यक्रम आयुर्विज्ञान अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों को लेक्चरों, प्रदर्शनों और फील्ड अध्ययन द्वारा अध्ययन के तृतीय वर्ष में सिखाया जाना चाहिए। यह विषय सर्वोत्तम महत्व का है और आयुर्विज्ञान-अध्ययन के बीचारन विद्यार्थियों का ध्यान, निरोधक आयुर्विज्ञान के महत्व और सकारात्मक स्वास्थ्य के प्रोत्तर्यन के लिए उपायों की ओर सदैव आकर्षित किया जाना चाहिए।

उसका कार्य, रोगहर प्रयोजनों के लिए होम्योपैथी औषधियों निश्चित करने मात्र तक सीमित न होकर समाज में एक व्यापक भूमिका अदा करना भी है। उसे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों की राष्ट्रीय स्वास्थ्य समस्याओं का ज्ञान होना चाहिए जिससे कि वह, न केवल रोगहरण बरत परिक्षेत्र कल्याण सहित निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में भी, कारगर भूमिका निभाने का दायित्व संभाल सके।

1. सामाजिक और निरोधक आयुर्विज्ञान संबंधी सिद्धांतों की प्रस्तावना, व्यक्ति और समाज, निरोधक और सामाजिक आयुर्विज्ञान का सक्ष्य और प्रशिक्षण, रोगों के सामाजिक कारण और रोगी की सामाजिक समस्याएं। स्वास्थ्य और रुग्णता के संबंध में आर्थिक तत्वों और पर्यावरण का पारस्परिक संबंध।

2. शरीरक्रिया संबंधी स्वास्थ्य विज्ञान :

(क) भोजन और पोषण—स्वास्थ्य और रोग के संदर्भ में भोजन। संतुलित आहार। पोषण कमियाँ और पोषण संबंधी पर्यवेक्षण। भोजन तंत्रावार करना, दुग्ध का पासचुरीकरण। खाद्य अपमिश्रण और निरीक्षण।

खाद्य विपाक्तता—

(ख) वायु, प्रकाश और धूप

(ग) जलवायु का प्रभाव—अद्वाना तापमान, दाव और अन्य मौसमी परिस्थितियाँ-सुखशेत्र-सघन आबादी का प्रभाव।

(घ) वैश्विक स्वास्थ्य—(सफाई-आराम-निद्रा, कार्य) — शारीरिक कसरत और प्रशिक्षण, पोषण (ट्राफिक) में स्वास्थ्य प्रशिक्षण।

पर्यावरणीय संपर्क :

- (क) परिभ्रान्ता और महत्व;
- (ख) वायुमण्डलीय दूषण-वायु शुद्धिकरण, वायु विसंक्रमण/वायुजनिक रोग।
- (ग) जलप्रदाय-स्रोत और प्रयोग। अशुद्धताएं और शुद्धिकरण। नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक जल प्रशाय। पैदल के मानक, जलजन्य रोग।
- (घ) मध्यवर्ती-शहरी और कस्बों तथा ग्रामों में मलबन का लंग, सैटिक टैंक, शुष्क ग्रीनाल्फ - जेल वलोंजेट। मन निपटारा, रोग समाधित, कुट्टाकरण फिक्शना, भस्मीकरण।
- (इ) मेलों और उत्सवों में नफाई।
- (ख) विसंक्रमण-विसंक्रमक, इयॉडरैन्ट, एन्टीसैटिक, क्रोटन-जी, विसंक्रमण और निर्जीवाणकरण।
- (छ) कीट-कीटनाशी और विसंक्रमण रोग और कीट संबंध। कीट नियन्त्रण।
- (ज) प्रोटोजोडल और क्रमि रोग-प्रोटोजोडल और क्रमि का जीवन चक्र, उनका निरोध।

5. आयूर्वेदानिक सांख्यिकी:- संचारी रोगों के निरोध और नियन्त्रण के सामान्य मिद्दलन। लेग, हैजा, चेचक, डिपथीरिया, कुप्त, क्षयरोग, मलेशिया, कालाजर, फाइलैरिया, सामान्य वायरल रोग, अश्रु सामान्य टण्डी ख्रसग, छोटी मात्रा, पांचियो, मंक्रामक हैपीटाइटिस, कृपि संक्रमण, एन्टरिक ज्वर और पैचिण पशुरोग जो मानव को लगा नकरे हैं। उनका वर्णन और सम्पर्क या विन्दूक ढाग उनके फैलने को रोकने की रीति। पर्यावरणीय वाहकों में संक्रमण (जल, श्वेत, खाद्य कीट, पशु, फाउल्डीय आदि)। रोगनिरोध और दीक्षा लगाने के बारे में हैं होमियोपैथिक दृष्टिकोण। रोगों का प्राकृतिक डितिहास।

7. मानृ और ब्रात स्वास्थ्य, विद्यालय स्वास्थ्य मेवाएं, स्वास्थ्य गिराव, गार्वानिक स्वास्थ्य-प्राथमिक मिड्लन्ट, विद्यालय आयुर्विज्ञान, उसके उद्देश्य और रीति।

8. पर्यावरण-डेमोग्राफी-संचरण मारणी, गप्टीय परिवार कल्याण कार्यक्रम, ज्ञान, गर्भनिरोधकों के प्रयोग के बारे में दृष्टिकोण। जनसंख्या और उमस्की वृद्धि-नियन्त्रण।

9. गार्वानिक स्वास्थ्य प्रणाली और अन्तर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य संबंध।

टिप्पण-फ़िल्ड प्रदर्शन-जल शुद्धिकरण संयंत्र, संक्रमक रोग अस्पताल आदि।

शान्तिकार्य, जिसके अन्तर्गत होमियोपैथी चिकित्सागार स्वी है।

जब औषधि निएकत हो जाती है तो शल्यक्रिया की भूमिका प्रारम्भ होती है। बाहरी भागों की विषु अवस्था ही,

जिसमें यांत्रिक कौशल की आवश्यकता होती है, शल्य चिकित्सा का विषय है किन्तु जब क्षति इसनी व्यापक या गंभीर हो कि उसमें अंगों में तीव्र प्रतिक्रिया उत्पन्न हो जाए तो औषधियों की सहायता में तत्काल उपचार आवश्यक है।

शल्यक्रिया रोगों के अन्य उत्पादों (एड्ड प्रोडक्ट) को हटा देती है किन्तु शल्यक्रिया के पूर्ववर्ती और पश्चात्वर्ती उपचार की आवश्यकता मूल विकृति को ठीक करने और अनुगमों (सीक्सेल) या जेटिलताओं की रोकथम करने के लिए होती है।

चूंकि होमियोपैथी में अनेक परिस्थितियों में आन्तरिक औषधि प्रयोग हो सकता है, अतः औषधि प्रयोग की भूमिका शल्यक्रिया की भूमिका से अधिक व्यापक है। इस दृष्टि से शल्यक्रिया का विस्तार सीमित है। किन्तु औषधि के अनुप्रयोग के स्पष्ट में शल्यक्रिया का भी होमियोपैथी में एक विशिष्ट स्थान है। इसलिए शल्यक्रिया का अध्यापन भी तदनुरूप होना चाहिए।

(क) शल्यक्रिया के सिद्धान्तों का क्रमबद्ध रूप म अध्यापन पाठ्यक्रम।

(ख) नैदानिक प्रशिक्षण के प्रारंभिक मासों के दौरान, विद्यार्थी को, जब उसे रोगियों का भारसाधन नहीं सौंपा जाता है, नैदानिक परीक्षा के मूल सिद्धान्त बताए जाने चाहिए। इनके अन्तर्गत शारीरिक लक्षण, सामान्य उपकरणों का प्रयोग, बावों पर सेपसिस और एण्टीसेपसिस पट्टी बांधना आदि हैं।

(ग) शल्यक्रिया-पद्धति, जिसमें भौतिक चिकित्सा सम्मिलित है, में प्रायोगिक अनुदेशन।

(घ) प्राणी की लघु शल्यक्रिया का शिक्षण।

(ङ) निम्नलिखित विषयों में अनुदेशन:

(i) विकिरण विज्ञान और विद्युत चिकित्सा विज्ञान तथा शल्यक्रिया में उनका उपयोग।

(ii) रतिज रोग।

(iii) विकलांग विज्ञान

(iv) वन्तररोग।

(v) गैश्वावस्था और बालावस्था के शल्यक्रिया-रोग।

(ष) सुविधा की दृष्टि से यह सुझाव है कि शल्यक्रिया के नैदानिक पाठ्यक्रम के दौरान निम्नलिखित रूप में शिक्षण किया जाना चाहिए।

बी०ए४०ए८०ए८० द्वितीय

1. साधारण:-अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान और अनुप्रयुक्त शरीर क्रिया विज्ञान। सामान्य शल्यक्रिया प्रक्रिया। शोष, संक्रमण, अविनिदिष्ट संक्रमण, विनिश्चिट संक्रमण, पूर्णीभवन (सप्तरेशन), कीटविज्ञान और शल्य रोग, इम्यूनिटी, धतियां नील, ब्रण, रक्तमात्र, शटका, जलना और तप्त तरक दाह, द्यूमर और सिस्ट, त्वचा और उपत्वक ऊतक, अल्पर होना और

गेंगीन, रक्त वाहिकाओं और लगिका तत्व के रोग, अस्थि-शृंग मंधि अति अंग अति, तेलिम अति, अस्थि और काटिलेज रोग और द्रुमर, मंधिरोग। पृथक-पृथक मंधि के रोगों का नैदानिक प्रकटीकरण। अंग विकृति। अगीछेतन। कृत्रिम अंग। तनिका और रोग। पेशी टन्डन। बर्मा।

2. सामान्य रोग।

3. दन्त शल्यक्रिया।

4. पट्टी बांधने और अन्य शल्यक्रिया उपकरणों पर लेक्चर और प्रदर्शन।

बी० एच० एच० एस० तृतीय

1. साधारण—स्काल्प और स्कल की धनियां और रोग, मस्तिष्क और उसकी मेम्ब्रन, चेहरा, अंग, मुख, जबड़ा, जिब्दा, स्लाबी ग्रन्थियां, ग्रीदा, थाइराइड, पराथाइराइड और थाइमस, वक्ष, स्तन और थोरेमिय बाइसेरा, स्पाइन, उदरीय परजीवी और पेरीटोनियम, पेट, ड्योडनम, जिगर, गालब्लेडर और पिन्नाशय, पेनक्रिया और बृक्षक, आंत्र, रेक्टम और एनल केनाल। आंत्र अवरोध, ह्रस्त्रिया, किडनी, पूरेटरा, ब्लेडर यूरेथ्रा और जननांगों की अति। और रोग अधिवृक्त और स्वसंचालित तंत्रिका तत्व के रोग।

2. कर्ण, नासा, कंठ विज्ञान (ई०एन०टी०) कर्ण, नासा और कंठ के सामान्य रोगों और दुर्घटनाओं का ज्ञान। इसमें श्वास-प्रणाली-श्वसनी वृक्ष और ग्रास नली मम्भीमलिन हैं। साथ ही शरीर रक्षना, भारीर क्रिया, विकृति उपचार और सामान्य आपरेटिव उपायों का ज्ञान।

3. नेत्र विज्ञान—नेत्र की नैदानिक परीक्षा—नेत्र की अक्तिपरक और वस्तुप्रस्तक प्राथमिक रचना, पलकें, अवृसाधित, नेत्रश्लेषमला (कंजकटाइवा) कोनिया, स्कलेरा आइग्निस, रोमक आड़ी और लेन्स ग्लूकोमा, आबिटल सेल्युलाइटिम नेत्रोन्सेध, अन्ननेत्रशोध, सर्वेनेत्र शोध, रेटीना और नेत्र तन्त्रिका के सामान्य रोग जो साधारण स्थितियों से संबंधित हैं। नेत्र पलकों और नेत्रलालक की अतियां। नेत्र का प्राथमिक अपवर्तन। ऐंग आपरेटमेंट्सकोपी नेत्र का सामान्य आपरेशन और उसके उपाय।

4. एक्सरे लेक्चर-प्रदर्शन।

5. शैशवावस्था और शालावस्था के रोगों की शल्यक्रिया

टिप्पणी—1. इस विषय के अध्यापकों को चाहिए कि वे संपूर्ण अध्ययन काल के दौरान विद्यार्थी का ध्यान उसके नरोधक पक्ष की और आकर्षित करें।

2. आर्युष्मान की इन शाखाओं के शिक्षण का उद्देश्य यह होना चाहिए कि विद्यार्थी को सामान्य परिस्थितियों के अभिज्ञान तथा होम्योपैथी उपचार की जानकारी के सिए पर्याप्त ज्ञान प्राप्त हो जाए।

3. बी० एच० एम० एम० द्वितीय और तृतीय कालों में मे प्रत्येक में हर विद्यार्थी 30 पूर्ण रोगीशुल प्रस्तुत करेगा।

शल्यक्रिया के विविध प्रणालों को निम्नलिखित में मेविभाजित किया जाएगा, अर्थात्—

प्रश्नपत्र 1

साधारण शल्यक्रिया—शोध विनिष्ट और अविनिष्ट संकेतण, रक्तश्व लेटका (शाक), जलता, अन्धर और गैंग्रीन। द्रुमर और मिट्टम। नैत्रिका रोग और अतियां, पेशी टेण्डन और ब्रसां। लमिका रोग वाहिका तंत्र तथा निल्ली—

मिर और ग्रीवा शल्यक्रिया जिसमें थाइराइड वक्ष की शल्यक्रिया मम्मिलिम है और जन्मजात विषमताएं।

उदरीय शल्यचिकित्सा जिसके अन्तर्गत गेस्ट्रोइन्टेस्टाइनल तंत्र है। अस्थि और मंधि शल्यक्रिया। स्पाइन की अतियां और रोग।

अंग विकृतियां।

योगाइक शल्यक्रिया और होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र।

प्रश्नपत्र 2

कर्ण, नेत्र, कंठ विज्ञान सामान्य रोग नेत्र विज्ञान। दन्त और होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र और होम्योपैथी में शल्यक्रिया।

प्रसूति विज्ञान, स्वीरोग विज्ञान तथा शिशु स्वास्थ्य जिनके अन्तर्गत होम्योपैथिक चिकित्सा शास्त्र भी है।

होम्योपैथी का इन विषयों को बाबत ही दृष्टिकोण है जो उसका अधिग्रहण और शल्यक्रिया के मम्बन्ध में है किन्तु प्रमूलि विज्ञान और स्वीरोग विज्ञान के अध्ययन के दौरान होम्योपैथी चिकित्सक को स्थानिक परिस्थितियों का निदान करने या जीवनशक्ति उपाय के रूप में या यान्त्रिक रूपावट को दूर करने के लिए शल्यक्रिया करना आवश्यक हो वहां, विशिष्ट वैज्ञानिक अव्यैषण पद्धति समझाने का प्रयत्न किया जाए।

स्त्री की पारिवारिक विकृति दूर करने या ऐसे बैज्ञानिक विकृत गर्भ को ठीक करने के लिए मर्वोन्टम उपयुक्त समय गर्भकाल ही है और इस बात पर विशिष्टितः जोर दिया जाना चाहिए।

विद्यार्थियों को नवजात शिशु की बाबत भी शिक्षित किया जाना चाहिए। यह तथ्य कि माना और बालक एक ही

जैविक इकाई है और यह विचित्र निकटवर्ती क्रियात्मक संबंध बाल्यकाल के प्रथम दो वर्ष तक विद्यमान रहता है, भली प्रकार समझाया जाना चाहिए।

प्रसूति विज्ञान और स्त्रीरोग विज्ञान तथा शिशु स्वास्थ्य जिसमें गर्भकाल की अनुप्रयुक्त शरीर रचना और क्रिया तथा प्रसव सम्बन्धित हैं के सिद्धान्तों और पढ़ति का क्रमबद्ध अनुदेशन।

बी०एच०एम०एस० तृतीय पाठ्यक्रम

प्रसूतिविज्ञान :—अनुप्रयुक्त शरीर रचना विज्ञान डिब का विकास। गर्भ और उसके अनुषंगी, संगर्भता-सामान्य संगर्भता ऐतूक देखभाल असामान्य संगर्भता की प्रस्तावना। प्रसव-सामान्य, असामान्य प्रसव की प्रस्तावना। पुरपूरियम्, सामान्य पुरपूरियम्। प्रसवोत्तर देखभाल।

स्त्रीरोग विज्ञान :—शरीर रचना और शरीरक्रिया, स्त्री रोग संबंधी परीक्षा। स्त्री जननांगों में विषमताओं का विकास सैक्स हर्मोन विकारायुक्त कार्य अतु साक्ष संबंधी विषयताएँ। विस्थापन (डिस्प्लैसमेंट)।

शिशु-स्वास्थ्य : नवजात शिशु की देखभाल।

बी०एच०एम०एस० तृतीय पाठ्यक्रम

प्रसूति विज्ञान :—संगर्भता—असामान्य संगर्भता, गर्भस्वाव मोत्तर संगर्भता, गर्भशय ब्राह्मण संगर्भता, प्लेसेन्टा और मेन्ट्रन के रोग। संगर्भता के टोनसेमिया। एप्टेपार्टम गर्भस्वाव। जननांगी पथ का विकार, रेट्रोवर्जन, प्रापलेप्स आदि। बहुसंगर्भता। मन्द संगर्भता। संगर्भता से सम्बद्ध सामान्य विकार, प्रसव असामान्य उपस्थापन और स्थिति यमन (ट्रिब्यून)। काढ़ और अंगों का प्रंश (प्रोलेप्स)। गर्भाशय की क्रियाओं में असामान्यताएँ। मुटुअंगों की असामान्य स्थिति पेल्विस संकुचन। अवरुद्ध प्रसव जन्म केनाल की क्षतियाँ। समान्य प्रसूति-आप्रेशन प्रसूतकाल असाधारण प्रसूतकाल, संक्षण। अन्य सामान्य विकार।

स्त्री रोग विज्ञान :—शोथ अल्सर होना और स्त्री जननांगों के अभिवातज विक्षण, नवोत्पत्ति सामान्य स्त्री रोग सम्बन्धी आपरेशन और विकिरण-चिकित्सा।

शिशु स्वास्थ्य :—स्तम्भान-क्लिमपान अपरिपक्वता की व्यवस्था, श्वासावरोध जन्म क्षतिया और नवजात शिशु के सामान्य विकार।

टिप्पणि :—1. अध्ययन के दौरान इस विषय पर लेखरों के माध्यम से विद्यार्थी का ध्यान उसके निरीक्षक पक्ष की और सदैव आकर्षित किया जाना चाहिए।

2. आयुर्विज्ञान की इस शाखा में अनुदेशन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होना चाहिए कि विद्यार्थी को सामान्य स्थितियों, उनके अभिज्ञान और उपचार की जानकारी का पर्याप्त ज्ञान हो जाए।

3. प्रत्येक विद्यार्थी 20 पूर्ण-रोगीवस्त तैयार करके प्रस्तुत करेगा वह बी०एच०एम०एस० वित्तिथ और तृतीय में से प्रत्येक कक्षा में दस-दस रोगीवस्त तैयार करके प्रस्तुत करेगा।

प्रसूति विज्ञान और स्त्रीरोग विज्ञान के लिखित प्रश्नपत्र निम्नलिखित रूप में विभाजित किए जाएंगे अर्थात्—

प्रश्नपत्र 1—प्रसूति विज्ञान नवजात शिशु, शिशु स्वास्थ्य और होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र।

प्रश्नपत्र 2—स्त्रीरोग विज्ञान और होम्योपैथी चिकित्सा-शास्त्र।

आयुर्विज्ञान जिस के अन्तर्गत होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र भी है।

होम्योपैथी का रोग के प्रति एक सुभिन्न दृष्टिकोण है। वह रोग की पहचान न तो उसके प्रसुख लक्षणों से और न शरीर के किसी अगं या भाग के लक्षणों से करती है। वह रोगी का समग्र रूप में उपचार करती है। रोगी के कुल लक्षणों से जो कुछ प्रकट होता है उसके अनुसार वह उपचार करती है। अतः रोगी के केवल रोग का नाम होम्योपैथी के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं।

होम्योपैथी का यह आधारभूत सिद्धान्त कि वह रोगी का उपचार करती है रोग का नहीं, विद्यार्थियों के सम्बन्ध में भली प्रकार बैठा दिया जाना चाहिए। अतः तभी सच्चे होम्योपैथी बन सकेंगे जब उक्त दृष्टिकोण उनमें समर्विष्ट कर दिया जाएगा।

आयुर्विज्ञान मूलत : एक प्रयोगात्मक विज्ञान है और उसे रोगी की शय्या के निकट न कि कक्षा में, अधिक समझा जा सकता है। अतः इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि महाविद्यालय में विद्यार्थियों के अध्ययन के उत्तरार्थ भाग में उन्हें विस्तृत नैदानिक प्रशिक्षण दिया जाए।

(क) आयुर्विज्ञान के सिद्धान्तों और अवधारणा में अनुदेशन का पाठ्यक्रम।

(ख) नैदानिक काल के प्रथम तीन मासों में विद्यार्थी को, जब उसे रोगी का भारसाधन नहीं सींपा जाता है, नैदानिक परीक्षा, जिसके अन्तर्गत शारीरिक लक्षण, स्टेथेस्कोप

आपथेलमास्कोप आदि जैसे सामान्य उपकरणों का प्रयोग भी है, के प्राथमिक तरीकों का ज्ञान कराया जाना चाहिए।

ग. होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र और नुस्खा लिखने की शिक्षा।

घ. सुविधा की दृष्टि से यह सुझाव है कि आयुर्विज्ञान के नैदानिक पाठ्यक्रम के दो वर्षों के द्वारा निम्नलिखित रीति में अनुदेशन किया जाना चाहिए।

बी०एच०एम०एस० द्वितीय

अनुप्रयुक्त शरीर रचना और शरीर किया विज्ञान। श्वसन तन्त्र के रोग।

पाचनतंत्र और पेरीटोनियम के रोग। रक्त तिल्ली और लसिका ग्रन्थियों के रोग। फुसफुस क्षय रोग। अन्तःजलवी तन्त्र के विकार। अनुप्रयुक्त मेटीरिया मेडिका होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र।

बी०एच०एम०एस० तृतीय और चतुर्थ संक्रमण रोग।

हृद बाहिका तन्त्र के रोग।

जनन-मूत्रिक तंत्र के रोग।

स्त्रीको मोटर तंत्र के रोग।

कुष्ट सहित त्वचा रोग।

मनोवैज्ञानिक आयुर्विज्ञान।

द्रापीकल रोग।

शिशु और बाल रोग।

अनुप्रयुक्त मेटीरिया मेडिका होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र।

टिप्पण :

1. शिक्षक को चाहिए कि वह अध्ययन काल के द्वारा न विद्यार्थी का ध्यान उसके निरीक्षक पक्ष की महता की ओर ही आकर्षित करें।

2. चिकित्साशास्त्र की इन शाखाओं के शिक्षण का उद्देश्व इस बाबत पर्याप्त ज्ञान कराना हो कि विद्यार्थी सामान्य स्थितियों, उनके अभिज्ञान और होम्योपैथिक उपचार से भली प्रकार परिचित हो जाए।

3. प्रत्येक विद्यार्थी 20 पूर्ण रोगीकृत तैयार करके प्रस्तुत करेगा। इनमें से 10 बी० एच० एम० एस० द्वितीय में, 10 बी० एच० एम० एस० चतुर्थ कक्षा में तैयार और प्रस्तुत किए जाएंगे।

आयुर्विज्ञान के लिखित प्रश्न पत्र निम्नलिखित रूप में विभाजित किए जाएंगे :—

प्रश्न पत्र —

संक्रमक रोग, अन्तःस्त्री ग्रन्थि तन्त्र के विकार, चयापचय के रोग और न्यूनतम रोग। पाचन सत्त्व पेरिटो-

नियम के रोग और श्वसन तन्त्र के रोग, रक्त रोग, तिल्ली और लसिका ग्रन्थियों के रोग, द्रापीकल रोग। होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र।

प्रश्नपत्र 2

लोकोमोटर तन्त्र के रोग, हृद-बाहिका तन्त्र के रोग, मूत्र-जननतंत्री तन्त्र के रोग, शाल रोग, तन्त्रिका तन्त्र रोग, मनोवैज्ञानिक चिकित्सा, सामान्य त्वचा रोग, होम्योपैथी चिकित्साशास्त्र।

होम्योपैथि रिपर्टरी

होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका लक्षणों का एक विश्वकोण है। सभी औषधियों के सभी लक्षणों को और उनके विशिष्ट श्रेणीकरण को याद करना किसी के लिए संभव नहीं है। रिपर्टरी एक अनुक्रमणिका है, मैटीरिया मेडिका के लक्षणों का एक सूचीपत्र है और व्यवहार की दृष्टि से सुधृत्यस्थित है। उसमें औषधियों का पारस्परिक श्रेणीकरण भी उपदर्शित किया गया है। उसमें उपयुक्त औषधि के शोध ज्यवन में, अत्यधिक सुविधा होती है। रिपर्टरियों की सहायता के बिना होम्योपैथि व्यवसाय करना असंभव है और स्वैक्षण्य रिपर्टरी बही है जो स्वयं में पूर्ण है। इस प्रकार होम्योपैथी मैटीरिया मैडिका और रिपर्टरी दो यमल (द्विवन) हैं।

औषधियों और रूप स्थितियों के बीच अनिवार्य संबंध जात करने के विभिन्न तरीके और कोटियाँ हैं और इसी कारण रिपर्टरियों भी अनेक प्रकार की हैं। उपयुक्त औषधि (सिमिलियम) बोंज निकालने में प्रत्येक का अपना अपना महत्व है।

रोगीवृत्त लेना :

चिरकालिक रोगी का वृन्त लेने में कठिनाईयाँ। वृत्त अभिलिखित करना और अभिलेख रखने की उपयोगिता।

लक्षणों का समग्र रूप : नुस्खा लिखने के लिए लक्षण असामान्य, विशिष्ट और विचित्र लक्षण साधारण और वैयक्तिक लक्षण/विलेपन (एलीमिनेटिंग) लक्षण रोग विश्लेषण सामान्य और असामान्य लक्षण मानसिक लक्षणों की महता साधारण लक्षणों के प्रकार और स्त्रोत अनुषंगिक लक्षण।

1. रिपर्टरियों का इतिहास।
2. रिपर्टरियों के प्रकार।
3. रोगीवृत्तों का प्रदर्शन जो बोहिंगसेन पठति पर तैयार किए गए हों।
4. केट रिपर्टरी—केट प्रदर्शन के साथ व्यापक अध्ययन
5. बोगसे बोहिंगसेन रिपर्टरी—रिपर्टरी के लिए उसका योगदान।
6. 5 केसों के प्रदर्शन के साथ काढ़ रिपर्टरी/काढ़ रिपर्टरी से साधा प्रदर्शनों सहित प्रयोगात्मक लेनदेन।

प्रयोगात्मक

विद्यार्थी और मैटीरिया

- (i) केंट के अनुमार 15 मंधित केम।
- (ii) 10 चिकित्सकीय केम (केंट के अनुमार दीर्घ केम)।
- (iii) 5 केमों की क्राम चैकिंग।

भाग 6

परीक्षा

बी० एच० एम० एम० प्रथम परीक्षा

7. परीक्षा में प्रवेश, स्कीम परीक्षा की स्कीम आदि:

(i) किसी भी अन्डरग्रेजुएट को बी० एच० एम० एम० प्रथम परीक्षा में प्रवेश दिया जा सकता है परन्तु यह तब जब उसने परीक्षा विषयों में निम्नलिखित शिक्षा पाठ्यक्रम, सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक, किसी होम्योपैथी महाविद्यालय में ऐसे विद्यालय के प्रधान को समाधान प्रद रूप में, नियमित रूप में पूरा किया हो।

संवधित विषयों में लैक्चरों / प्रदर्शनों/प्रयोगात्मक/नैदानिक कक्षाओं/गोष्ठियों आदि की न्यूनतम संख्या निम्नलिखित रूप में होगी, अर्थात् :—

विषय	सैद्धान्तिक लैक्चर/प्रदर्शन/प्रयोग/द्यूटीस्ट-यन की कक्षाओं की संख्या	
*प्रस्तावना, जिसमें मैटीरिया 150 मेडिका और होम्योपैथी + 100	250 घंटे	50 घंटे
दर्शन सम्मिलित है		
शरीर रचना विज्ञान	200 घंटे	450 घंटे
जीव रसायन सहित शरीरशिक्षा		
विज्ञान	250 घंटे	400 घंटे
होम्योपैथी भेदजी	50 घंटे	100 घंटे

*होम्योपैथी के प्रादुर्भाव के प्रति विशेष निर्देश करते हुए विद्यार्थियों को सामान्यतया, आयुष्विज्ञान के इतिहास के बारे में प्रारम्भिक लैक्चर दिए जाने चाहिए। आयुष्विज्ञान के थोक में हेनीमन के सामान्य योगदान, हेनीमन की जीवनी, भारत में होम्योपैथी के विकास के इतिहास, होम्योपैथी में विभिन्न विचारधाराओं और उनके नक्पूर्ण मूल्यांकन, विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों के मौलिक सिद्धान्तों के तुलनात्मक अध्ययन, शरीर रचना विज्ञान, शरीर शिक्षा विज्ञान, शरीर विकृति विज्ञान जैसे आधारिक आयुष्विज्ञानों की प्रस्तावना, उनके पारस्परिक संबंधों और नैदानिक विषयों के लिए उनकी सुझावस्त्रा, होम्योपैथी आवधाय में जीव रसायन और विकृति विज्ञान के महत्व (उदाहरणार्थ, नैदानिक भास्त्रियों

ता प्रश्नेन), होम्योपैथिक दर्शन की रूपरेखा, स्वस्थ और रुग्ण होने पर समग्र भानव के अध्ययन, सामान्यतया प्रयुक्त बुद्ध महत्वपूर्ण अधिकारियों के अधिक-स्वरूपों के उदाहरणों महिने मैटीरिया मैडिका के दर्शन की प्रस्तावना तथा उसके अध्ययन, चिकित्सीय, शल्य चिकित्सीय और स्त्री रोग विज्ञान मध्यमी रोगों के प्रति समाकृति दृष्टिकोण, कुछ आम प्रयोग की आधुनिक अधिकारियों के भौपतिक प्रश्नाव के परिचय, जिसमें विद्यार्थियों को उन आधुनिक अधिकारियों से होने वाले चिकित्साजन्य रोगों के बारे में कुछ ज्ञान हो जाए, जीव-सांख्यिकी की प्रस्तावना, तर्क मनोविज्ञान और मनोविकार चिकित्सा के संक्षिप्त अध्ययन, परिवर्तनशील समाज में चिकित्सक की भूमिका, राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण की आवश्यकताओं स्था उनके कार्यशालाओं के बारे में भी विद्यार्थियों को प्रारम्भिक लैक्चर दिए जाने चाहिए।

महत्वपूर्ण अधिकारियों के अधिक-स्वरूपों तथा होम्योपैथी दर्शन की सहायता से होम्योपैथी मैटीरिया मैडिका की शिक्षा पर विशेष बल दिया जाना चाहिए।

बी० एच० एम० एम० प्रथम परीक्षा बी० एच० एम० एम० प्रथम पाठ्यक्रम के 16 मास के पश्चात् परीक्षा ली जानी चाहिए।

(ii) परीक्षा, लिखित, मौखिक और प्रयोगात्मक होगी।

(क) होम्योपैथी भेदजी की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक प्रयोगात्मक परीक्षा तथा एक मौखिक परीक्षा होगी।

(ख) शरीर रचना विज्ञान की परीक्षा में दो सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक प्रयोगात्मक परीक्षा और एक मौखिक परीक्षा होगी।

(ग) शरीर क्रिया विज्ञान की परीक्षा में दो सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र एक प्रयोगात्मक परीक्षा और एक मौखिक परीक्षा होगी।

(घ) मैटीरिया मैडिका और होम्योपैथी दर्शन की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र और एक मौखिक परीक्षा होगी।

प्रत्येक विषय के सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र के लिए तीन घंटे का समय दिया जाएगा।

(iii) जो अध्यर्थी किसी विषय में 75 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त करेगा उसे उस विषय में विशेष योग्यता (आनंद) प्राप्त घोषित किया जाएगा परन्तु यह तब जब उसने परीक्षा एक बार में उत्तीर्ण कर ली हो।

(iv) बी० एच० एम० एम० प्रथम परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए अध्यर्थी को सभी परीक्षा विषयों में उत्तीर्ण होना होगा।

(v) होम्योपैथी और संबंध सभी चिकित्सा विषयों में उत्तीर्ण-अंक प्रत्येक परीक्षा में (लिखित, मौखिक और प्रयोगात्मक) 50 प्रतिशत होगे।

(vi) प्रत्येक विषय के लिए पूर्णक और उत्तीर्ण होने के लिए आवश्यक न्यूनतम अंक निम्नलिखित होंगे।

विषय	विवित	भौतिक	प्रयोगात्मक	योग	
				पूर्णक उत्तीर्ण	
भैषजी (फार्मेसी)	100 50	150 25	50 25	200	100
शरीर रचना विज्ञान	200 100	100 50	100 50	400	200
शरीर क्रिया विज्ञान और जीवरसायन					
मैटीरिया मेडिका और होम्योपैथी	200 100	100 50	100 50	400	200
दर्शन (परिशिष्ट 1 से 29 पौलीकैस्ट)	100 50	50 25	- -	200	100
आधिकारिक प्रवक्षित है, आर्गेन्नन					
सुन्न 1 से 145 तक)					

बी० एच० एस० द्वितीय परीक्षा :

8. (i) किसी भी अध्यर्थी को बी० एच० एस० एस० द्वितीय परीक्षा में प्रवेश तभी दिया जाएगा जब उसने—

(क) बी० एच० एस० एस० प्रथम परीक्षा कम से कम एक वर्ष पूर्व उत्तीर्ण कर ला हो ; और

(ख) बी० एच० एस० एस० प्रथम परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् किसी मान्यताप्राप्त होम्योपैथी महाविद्यालय में उस महाविद्यालय के प्रधान को समाधान-प्रद रूप में , सभी परीक्षा विषयों में, कम से कम एक वर्ष का निम्नलिखित पाठ्यक्रम, सैद्धान्तिक और प्रयोगात्मक, नियमित रूप में पूरा किया हो।

(ii) संबंधित विषयों में लेक्चरों, प्रश्नों और प्रयोगात्मक/निदानिक कक्षाओं की न्यूनतम संख्या निम्नलिखित होगी अर्थात्—

विषय	सैद्धान्तिक प्रयोगात्मक/निदानिक/ट्रिप्टोट्रियल कक्षाएं	(1)	(2)	(3)
विकृति विज्ञान, जीवाणु विज्ञान और परजीवी विज्ञान	150	50		
व्यवहार आयुर्विज्ञान और विषय विज्ञान	50	20		
सामाजिक और निरोधक आयुर्विज्ञान				
(जिसमें स्वास्थ्य शिक्षा और आनु-अंशिक आयुर्विज्ञान सम्मिलित है)	150	100		
मैटीरिया मेडिका	50	70		
आर्गेन्नन और होम्योपैथी दर्शन	125	100		

(iii) बी० एच० एस० एस० द्वितीय परीक्षा, बी० एच० एस० एस० गठशक्ति के ढाई वर्ष की समाप्ति पर ली जाएगी।

(iv) परीक्षा, इसमें बनाए गए रूप में विवित, मौखिक, प्रयोगात्मक और या नीशनिक होगी, प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए तीन घंटे का समय दिया जाएगा।

(v) विकृति विज्ञान, जीवाणुविज्ञान और परजीवी विज्ञान की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक प्रयोगात्मक प्रश्नपत्र और एक मौखिक परीक्षा होगी जिसमें सूक्ष्म दर्शी और सूक्ष्मदर्शी-निर्देशों पर प्रश्न भी सम्मिलित होंगे।

(vi) स्वास्थ्य शिक्षा और आनुवंशिक आयुर्विज्ञान सहित सामाजिक और निरोधक आयुर्विज्ञान की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा और एक निर्दर्श स्पार्टिंग तथा पहचान के बारे में परीक्षा होगी।

(vii) व्यवहार आयुर्विज्ञान और विष विज्ञान की परीक्षा में, एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र, एक मौखिक परीक्षा और एक निर्दर्श—स्पार्टिंग तथा अभिभावन संबंधी परीक्षा होगी।

(viii) होम्योपैथी मैटीरिया मेडिका की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक प्रयोगात्मक परीक्षा और एक मौखिक परीक्षा होगी।

(ix) आर्गेन्नन की परीक्षा में, एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा और एक प्रयोगात्मक परीक्षा होगी।

(x) जो अध्यर्थी किसी भी विषय में 75 प्रतिशत या उसमें अधिक अंक प्राप्त करेगा उसे उस विषय में विशेष योग्यता (आनर) प्राप्त घोषित किया जाएगा परन्तु यह तब जब उसने परीक्षा एक बार में उत्तीर्ण करली हो।

(xi) बी० एच० एस० एस० द्वितीय परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए अध्यर्थी को सभी परीक्षा विषयों में उत्तीर्ण होना होगा।

(12) दूर्मार्गी और गंबद तारी निषिद्ध विषयों में उच्चीण-अंक, प्रत्येक परीक्षा में (विश्वित, मौखिक और प्रयोगात्मक) 50 प्रतिशत होंगे।

(13) प्रत्येक विषय में १०० और उच्चीण-हाँस के लिए आवश्यक न्यूनतम अंक निम्नलिखित होंगे, अर्थात्:—

विषय	लिखित	मौखिक	प्रयोगात्मक	योग
	पूर्णांक	उच्चीण-हाँस		
विकृत विज्ञान-व्यवहार आयुर्विज्ञान और विष-विज्ञान	100	50	50 25	200 100
सामाजिक और निरोधक आयुर्विज्ञान (स्वास्थ्य शिक्षा और और आनुवंशिक आयुर्विज्ञान सहित)	100	50	50 25	200 100
मैटीरिया मैडिका	100	50	50 25	200 100
आर्गेनन और होम्योपैथिक दर्शन	100	50	50 25	200 100

बी०ए०ए०ए०ए० तृतीय परीक्षा

9. (1) किसी अध्यार्थी को बी०ए०ए०ए०ए०ए० तृतीय परीक्षा में तीन प्रत्रेष दिया जाएगा जब उसने:—

(क) बी०ए०ए०ए०ए०ए० छठीय परीक्षा कम से कम एक वर्ष पूर्व उच्चीण करली हो; और

(म) बी०ए०ए०ए०ए०ए० प्रथम परीक्षा उच्चीण करने के पश्चात् किसी मान्यताप्राप्त होम्योपैथी महाविद्यालय में उस महाविद्यालय के प्रधान को भवान्धानप्रब स्पष्ट में भवी परीक्षा विषयों में कम से कम दो वर्ष का निम्नलिखित पाठ्यक्रम-संस्कृति की प्रयोगात्मक-नियमित रूप भौ पूरा किया हो।

(2) संबंधित विषयों में लेक्चरों, प्रदर्शनों और प्रयोगात्मक नैदानिक कक्षाओं की न्यूनतम संख्या निम्नलिखित होंगी, अंतिः:—

विषय

1. शल्य क्रिया, जिसमें कणी, नासा, कंठ, नेत्र, (दो वर्षों में) दन्त और होम्योपैथी चिकित्सा आदि	200	150-शल्य क्रिया आदि और नीन-नीन मास के दो सत्र।
2. प्रत्युत्तिविज्ञान और स्वीरोग विज्ञान, शिशु स्वास्थ्य और होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र।	200	150-प्रत्युत्तिविज्ञान और स्वीरोग विज्ञान वाई तथा बहिरंग विभाग में होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र में तीन तीन मास के दो सत्र।
3. मैटीरिया मैडिका।	200	75 (दो वर्षों में)
4. आर्गेनन और दर्शन	250	100 (दो वर्षों में)

(3) बी०ए०ए०ए०ए० तृतीय परीक्षा, बी०ए०ए०ए०ए०ए० प्रयोगात्मक के साथ तीन वर्ष की समाप्ति परली जाएगी।

(4) परीक्षा, इसमें उपबन्धित स्पष्ट में लिखित, मौखिक, प्रयोगात्मक और या नैदानिक होंगी। प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए तीन घंटे का समय दिया जाएगा:

(5) शल्यक्रिया की परीक्षा के दो मैदानिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा और एक नैदानिक परीक्षा होंगी। प्रत्येक विद्यार्थी को नैदानिक परीक्षा के लिए कम से कम एक घंटे का समय दिया जाएगा जिसमें वह किसी विशिष्ट रोगी के मामले में शल्यक्रिया संबंधी उपचार की आवश्यकता तथा होम्योपैथी चिकित्सा शास्त्र के प्रविष्टव के प्रति विशिष्ट निर्देश करते हुए, अपने रोगियों की परीक्षा करेगा और उनकी रिपोर्ट देगा।

(6) प्रयोगात्मक परीक्षा, जिसमें शल्यक्रिया संबंधी उपकरणों तथा अन्य साधिकों के प्रयोग पर प्रश्न ऐसी परीक्षा के विशेष भाग होंगे।

(7) प्रसूति विज्ञान, स्वीरोग विज्ञान और शिशु स्वास्थ्य की, जिसमें नवजात के रोग सम्मिलित है, परीक्षा में दो मैदानिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा जिसमें शरीर विकृति संबंधी निर्दर्शन, मौदीत और एक्स्प्रेस फिल्मों पर नया उपकरणों एवं लाक्रियों पर भी, प्रश्न पूछे जाएग और एक नैदानिक परीक्षा होंगी जिसके लिए प्रत्येक विद्यार्थी को कम से कम एक घंटे का समय दिया जाएगा जिसमें वह होम्योपैथी दृष्टिकोण में अधिक व्यक्तिगत विज्ञान और चिकित्सा शास्त्रीय निदान के प्रति निर्देश करते हुए, अपने रोगियों की (एक प्रसूति रोग का और एक स्वीरोग का) परीक्षा करेगा और उनकी रिपोर्ट देगा।

(8) मेटोरिया मैडिका की परीक्षा में, एक मैदानिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा और एक प्रयोगात्मक परीक्षा होंगी। इस प्रयोगात्मक परीक्षा में विद्यार्थी एक एक करके दो नैदानिकों की परीक्षा करेगा। प्रत्येक रोगी के लिए कम से कम आधे घंटे का समय दिया जाएगा जिसमें विद्यार्थी उसकी परीक्षा करेगा और उस पर अपनी रिपोर्ट देगा।

(9) आर्गेनन की परीक्षा में, दो मैदानिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा और शयायास्त प्रयोगात्मक परीक्षा होंगी। प्रयोगात्मक परीक्षा दोषकालिक रोगी की बाबत होंगी।

जिसमें, रोगीवृत्त लेने, लक्षणों का सूच्यांकन करने और उपचारधर्म मार्गदर्शन के लिए, आर्गेनन के निदानों को लागू किया गया हो, ऐसे रोगी की परीक्षा करने और उस पर रिपोर्ट देने के लिए, कम से कम दो घटे का समय दिया जाएगा।

(10) जो अध्यर्थी किसी विषय में 75% या उससे अधिक और प्राप्त करेगा उसे उस विषय में विशेष योग्यता (आनंद) प्राप्त घोषित किया जाएगा परन्तु यह नंबर जब उसने परीक्षा एक बार से उत्तीर्ण कर ली हो।

विषय	लिखित		मांस्त्रिक		प्रयोगात्मक		योग	
	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक
जल्दीक्रिया	200	100	100	50	100	50	400	200
प्रसूति विज्ञान और स्वीरोग विज्ञान	200	100	100	50	100	50	400	200
आर्गेनन और होम्यो० इर्णन	200	100	100	50	100	50	400	200
मेटीरिया मेडिका	100	50	100	50	100	50	300	150

बी०एच०एम०एम० चतुर्थ परीक्षा।

10. (1) किसी अध्यर्थी को बी०एच०एम०एम० चतुर्थ परीक्षा में नक्षी प्रवेश किया जाएगा जब उसने,—

(क) बी०एच०एम०एम० नूसीय परीक्षा कम से कम एक बर्धे पूर्ण उत्तीर्ण कर ली हो, और

(ख) बी०एच०एम०एम० प्रथम परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् निनो मान्यताप्राप्त होम्यो०थी महाविद्यालय में, उस महाविद्यालय के प्रभान को समाधानप्रद स्पष्ट में, सभी परीक्षा विषयों में कम से कम तीन वर्षों का निम्नलिखित पाठ्यक्रम मैदानिक और प्रयोगात्मक-निर्धारित रूप में पूर्ण किया हो।

(2) मंचनित विषयों में लेक्चरों, प्रदर्शनों और प्रयोगात्मक/पैदानिक कक्षाओं की न्यूनतम मंदिर, निम्नलिखित होगी, अवधि—

विषय	मंचनित	प्रयोगात्मक/नैशानिक/ट्रायटोरियल कक्षाएँ
(1)	(2)	(3)
1. आपरिय अध्यात्म (प्रैक्टिशन अफ मेडिसिन)	250 (तीन वर्षों में)	400 (होम्यो०पैथी बाल, और बहिर्गंग विभाग, जिसके अंतर्गत बाल, मानसिक और त्वचा-रोग विभाग भी है, में तीन तोन मास के तीन वर्ष)
बाल रोग	40	
मानसिक रोग और	40	

(11) बी०एच०एम०एम० तृतीय परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए अध्यर्थी को सभी परीक्षा-विषयों में उत्तीर्ण होना होगा।

(12) होम्यो०पैथी और मंबद्ध सभी चिकित्सा विषयों में उत्तीर्ण अंक प्रत्येक परीक्षा में (लिखित, मौखिक और प्रयोगात्मक) 50% होगे।

(13) प्रत्येक विषय के लिए पूर्णांक और उत्तीर्ण होने के लिए आवश्यक-न्यूनतम अंक, निम्नलिखित होंगे, अवधि—

	1	2	3
त्वचा रोग (होम्यो०चिकित्सा शास्त्र समिति)	20		
2. होम्यो०पैथी मेटीरिया मेडिका (एक वर्ष में)	200	125	
3. रिपर्टरी (तीन वर्षों में)	100	150	

(iii) बी०एच०एम०एम० चतुर्थ परीक्षा, बी०एच०एम०एम० पाठ्यक्रम के $4\frac{1}{2}$ वर्ष की समाप्ति पर तीन वर्षों में

(iv) परीक्षा, इसमें बताए गए रूप में, लिखित, मौखिक प्रयोगात्मक या नैदानिक होगी। प्रत्येक प्रश्नपत्र के लिए तीन वर्षों का समय दिया जाएगा।

(v) चिकित्सा परीक्षा (जिसमें बाल, मानसिक और त्वचा चिकित्सा सम्मिलित है) के दो प्रश्नपत्र होंगे—एक मौखिक परीक्षा और एक शायागत प्रयोगात्मक परीक्षा। प्रयोगात्मक परीक्षा में दो साधारण रोगियों का रोगवृत्त लेकर और होम्यो०पैथी दृष्टिकोण से रोगवर्गीकरण और चिकित्सीय निदान का अवधारण किया जाएगा। प्रत्येक रोगी के लिए आधे घंटे का समय दिया जाएगा।

(vi) मेटीरिया मेडिका की परीक्षा में दो मैदानिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा और एक शायागत प्रयोगात्मक परीक्षा होंगी। प्रयोगात्मक परीक्षा में रोगी की परीक्षा करने और उस पर अपनी रिपोर्ट देने के लिए कम से कम दो घंटे का समय दिया जाएगा।

(vii) रिपर्टरी की परीक्षा में एक सैद्धान्तिक प्रश्नपत्र, एक मौखिक परीक्षा और रिपर्टरी कार्य संबंधी दो रोगियों के बारे में एक-प्रयोगात्मक परीक्षा होगी।

(viii) जो अध्यर्थी किसी विषय में 75% या उससे अधिक अंक प्राप्त करेगा उसे उस विषय में विशेष योग्यता (आनंद) प्राप्त अध्यर्थी घोषित किया जाएगा परन्तु यह तब जब उसने परीक्षा एक बार में उत्तीर्ण कर सी हो।

(ix) बी०एच०एम०एस० तृतीय परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए अध्यर्थी को सभी परीक्षा विषयों में उत्तीर्ण होना होगा।

(x) सभी विषयों में होम्योपैथी और अन्य संबद्ध विषयों में—उत्तीर्ण अंक (विषय के प्रलेक भाग में) 50% होंगे।

(xi) प्रत्येक विषय में पूर्णांकों तथा उत्तीर्ण होने के लिए न्यूनतम अंकों की संख्या निम्नलिखित होगी, अर्थात् :—

विषय	लिखित		मौखिक		प्रयोगात्मक		योग	
	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक	पूर्णांक	उत्तीर्णांक
औषधि	200	100	100	50	100	50	400	200
होम्योपैथी, मैटीरिया, मेडिका	200	100	100	50	100	50	400	200
रिपर्टरी	100	50	50	25	50	25	200	100

(xii) परीक्षाकल और पुनः प्रवेश : (i) परीक्षा में प्रवेश के लिए प्रत्येक विद्यार्थी परीक्षा के प्रारंभ की तारीख से कम से कम 21 दिन पूर्व, संबंधित प्राधिकारी को परीक्षा फीस सहित विहित प्रलृप में अपना आवेदन पढ़ भेजेगा;

(ii) परीक्षा निकाय परीक्षा के पश्चात् यथा सम्भव शीघ्र सफल विद्यार्थियों की निम्नलिखित रीति से क्रमबद्ध एक सूची प्रकाशित करेगा अर्थात् :—

(क) योग्यताक्रम में प्रथम दस विद्यार्थियों के नाम और रोल नम्बर, और

(ख) अन्य विद्यार्थियों के क्रमबद्ध रोल नम्बर।

(iii) प्रत्येक विद्यार्थी को परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर संबंधित परीक्षा निकाय द्वारा विहित प्रलृप में एक प्रमाणपत्र दिया जाएगा।

(iv) यदि कोई विद्यार्थी परीक्षा में बैठता है किन्तु किसी विषय या विषयों में अनुत्तीर्ण हो जाता है तो उसे प्रथम परीक्षाकल के प्रकाशन की तारीख से छह सप्ताह के पश्चात् परीक्षा के उस भाग के विषय या विषयों में, जिनमें वह उत्तीर्ण नहीं हो पाया है अनुपूरक परीक्षा देने की अनुमति दी जासकती है। इसके लिए उसे विहित परीक्षा फीस और प्रलृप में आवेदन देना होगा।

(v) यदि अनुपूरक या पश्चात्वर्ती परीक्षा में विद्यार्थी उस विषय या विषयों में उत्तीर्ण-अंक (पास मार्क्स) प्राप्त कर लेता है तो उसे संपूर्ण परीक्षा में उत्तीर्ण घोषित कर दिया जाएगा।

(vi) यदि वह ऐसी अनुपूरक परीक्षा में संबंधित विषय या विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है तो वह अगली वार्षिक परीक्षा में उस विषय या उन विषयों में पुनः बैठ सकता है, किन्तु यह तब जब वह इस भाव का प्रमाणपत्र (विनियमों के अधीन अपेक्षित प्रमाणपत्र के अतिरिक्त) प्रस्तुत करे कि उसने अनुत्तीर्ण हुए विषय या विषयों में आगामी शैक्षिक वर्ष के दौरान अतिरिक्त अध्ययन पाठ्यक्रम प्रधानाचार्य को समाधान-प्रद रूप में पूरा कर लिया है: परन्तु शर्त यह है कि परीक्षा

के सभी भाग उस तारीख से जिसको संपूर्ण परीक्षा पढ़ली जाए होई थी चार बार में (अनुपूरक सहित) उत्तीर्ण कर लिए जाएं।

(vii) यदि कोई विद्यार्थी विहित चार बार में सभी विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो पाता है तो उसे महाविद्यालय के प्रधान की संतोषप्रद रूप में सभी भागों के सभी विषयों में एक वर्ष का अतिरिक्त अध्ययन पाठ्यक्रम पूरा करना होगा तथा सभी विषयों की परीक्षा देनी होगी।

परन्तु बी०एच०एम०एस० चतुर्थ परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थी को विहित बारी के अंत में केवल एक विषय ही उत्तीर्ण करना हो तो उसे उस विशिष्ट विषय में आगामी परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जाएगी और उसे यह परीक्षा इस विशेष बारी में पूरी करनी होगी।

(viii) साधारणतया सभी परीक्षाएं ऐसी तारीखों को, स्थानों और समयों पर की जाएंगी जो परीक्षा प्राधिकारी निश्चित करें।

(ix) परीक्षा प्राधिकारी, असाधारण परिस्थितियों में, अपने द्वारा ली गई किसी भी परीक्षा को पूर्णतः या भागतः रद्द कर सकता है किन्तु यह तब जब वह इसकी सूचना होम्योपैथी केन्द्रीय परिषद् को दें और उन विषयों में पुनः परीक्षा की व्यवस्था ऐसे रद्दकरण की तारीख से तीस दिन के भीतर कर दे।

9. परीक्षक : (1) ऐसे किसी व्यक्ति को जिसके पास चार वर्ष के अध्ययन के पश्चात् प्राप्त होम्योपैथी में डिप्लोमा या कोई डिग्री नहीं है अथवा ऐसे व्यक्ति को जिसके पास तृतीय अनुसूची में उल्लिखित अर्हताएं नहीं हैं किसी भी बी०एच०एम०एस० (श्रेणीकृत डिग्री) पाठ्यक्रम की वृत्तिक परीक्षा के आयोजन के लिए आंतरिक या बाह्य परीक्षक के रूप में या प्रश्नपत्र सेटर के रूप में नियुक्त नहीं किया जाएगा :

परन्तु—

- (क) किसी भी व्यक्ति की आंतरिक परीक्षक के रूप में नियुक्त नहीं किया जाएगा यदि उसे संबंधित विषय में तीन वर्ष का अध्यापन अनुभव नहीं है,
- (ख) आंतरिक परीक्षक के रूप में ऐसे व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया जाएगा जो डिग्री स्तर की किसी संस्था में संबंधित विषय का उपाचार्य (रीडर) सहायक आचार्य (असिस्टेंट प्रोफेसर) की पंक्ति से नीचे का है,
- (ग) किसी भी व्यक्ति को किसी संबद्ध चिकित्सा विषय के बाह्य परीक्षक के रूप में नियुक्त तभी किया जाएगा जब उसके पास होम्योपैथी (शिक्षा के न्यूनतम मानक) विनियम 1980 के उपानंध 'ख' के अनुसार किसी शिक्षक पद पर नियुक्ति के लिए यथा अपेक्षित मान्यताप्राप्त चिकित्सीय अर्हताएँ हैं,
- (घ) बाह्य परीक्षक केवल होम्योपैथी महाविद्यालयों और आधुनिक आयुर्विज्ञान महाविद्यालयों के शिक्षकों में से ही लिए जाएंगे,
- (इ) बाह्य परीक्षकों में से कम से कम एक शिक्षक बाह्य परीक्षक होम्योपैथी या आधुनिक औषधियों में चिकित्सा वृत्ति करने वाले ऐसे चिकित्सकों में से लिए जाएंगे, जो परीक्षा प्राधिकारी की राय में ख्यातिप्राप्त चिकित्सक हैं और जिन्होंने भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद् अधिनियम 1956 के अधीन मान्यताप्राप्त कोई होम्योपैथी अर्हता या आयुर्विज्ञान अर्हता प्राप्त कर ली है,
- (झ) जो व्यक्ति सरकारी नियोजन में हैं उन्हें भी बाह्य परीक्षकों के रूप में नियुक्ति के लिए विधार में लिया जा सकता है परन्तु यह तब जब उनके पास ऊपर उप-विनियम (ङ) में विनिर्दिष्ट आयुर्विज्ञान-अस्त्र हो ,
- (ञ) किसी प्रश्नपत्र सेटर को आंतरिक या बाह्य परीक्षक के रूप में नियुक्त किया जा सकता है ।
- (ii) प्रश्नपत्रों के परिनियमन (माइरेशन) के लिए परीक्षा निकाय केवल एक या तीन से अनधिक परिनियामक नियुक्त कर सकता है ।
- (iii) मौखिक और प्रयोगात्मक परीक्षाएँ संबंधित आंतरिक और बाह्य परीक्षक पारस्परिक सहयोग से लेंगे । उनमें से प्रत्येक को पूर्ण अंकों में से 50 प्रतिशत तक अंक देने का हक होगा तथा वे परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों को, परीक्षा में साबित हुई योग्यताओं के अनुसार इन्हीं अंकों में से अंक आवंटित करेंगे । इस प्रकार तीव्रार की गई अंक तालिका पर दोनों परीक्षक हस्ताक्षर करेंगे । प्रत्येक परीक्षक को अलग से तीव्रार की गई और स्व हस्ताक्षरित अंक-तालिका परीक्षा

प्राधिकारी को अलग से भेजने का हक होगा । परीक्षा प्राधिकारी इस प्रकार भेजी गई अंक-तालिकाओं पर विचार करेगा किन्तु उसे परीक्षाफल की घोषणा इन अंक-तालिकाओं के आधार पर ही करनी होगी ।

(iv) प्रत्येक होम्योपैथी महाविद्यालय परीक्षाओं के संचालन के लिए आंतरिक और बाह्य दोनों परीक्षकों को सभी सुविधाएँ देगा और आंतरिक परीक्षक परीक्षाएँ ली जाने के लिए सभी तैयारी करेगा ।

(v) बाह्य परीक्षक को यह हक होगा कि वह परीक्षा प्राधिकारी को होम्योपैथी महाविद्यालय द्वारा दी गई सुविधाओं में ऐसी कमियों या लुटियों को सूचित करे जो उसने देखी हों या जो उसके मतानुसार विद्यमान रही हों ।

(vi) वह अपनी उक्त सूचना की एक प्रति केन्द्रीय परिषद् को भी ऐसी कार्रवाई की जाने के लिए भेजेगा, जैसी केन्द्रीय परिषद् ठीक समझे ।

पी०एल० बर्मा, सचिव

CENTRAL COUNCIL OF HOMOEOPATHY NOTIFICATION

New Delhi, the 11th May, 1983

No. 7-1/83/CCH.—In exercise of the powers conferred by clauses (i), (j) and (k) of section 33 and sub-section II of Section 20 of the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 of 1973), the Central Council of Homoeopathy, with the previous sanction of the Central Government hereby make the following regulations, namely :—

PART I

Preliminary

1. **Short title and commencement.**—(1) These regulations may be called the Homoeopathy (Degree Course) Regulations, 1983.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Gazette of India.

2. **Definitions.**—In these regulations, unless the context otherwise requires—

(i) "Act" means the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 of 1973) ;

(ii) "Courses" means the Course of study in Homoeopathy, namely :—

(a) D.H.M.S. (Diploma in Homoeopathic Medicine and Surgery) course ; and

(b) B.H.M.S. (Bachelor of Homoeopathic Medical and Surgery) Course ;

(iii) "Diploma" means a Diploma in Homoeopathy as defined in clause (iii) of regulation 2 of the Homoeopathy (Diploma Course) Regulations, 1983 ;

(iv) "Degree" means a Degree in Homoeopathy provided in regulation 3 of these regulations or a

Degree as defined in clause (iv) of regulation 2 of the Homoeopathy (Graded Degree Course) Regulations, 1983;

(v) "Homoeopathic College" means a Homoeopathic College affiliated to a Board or a University and recognised by the Central Council;

(vi) "Inspector" means a Medical Inspector appointed under sub-section (1) of section 17 of the Act;

(vii) "President" means the President of the Central Council;

(viii) "Second Schedule" and "Third Schedule" means the Second Schedule and Third Schedule respectively of the Act;

(ix) "Syllabus" and "Curriculum" means the Syllabus and Curriculum for different Courses of study as specified by the Central Council under these regulations, the Homoeopathy (Diploma Course) Regulations, 1983 and the Homoeopathy (Graded Degree Course) Regulations, 1983;

(x) "Teaching experience" means teaching experience in the subject concerned in a Homoeopathic College or in a Hospital recognised by the Central Council;

(xi) "Visitor" means a Visitor appointed under sub-section (1) of section 18 of the Act.

3. Courses of Study :

(i) The Degree Course of B.H.M.S. (Degree) shall comprise a Course of study consisting of Curriculum and Syllabus provided in these regulations spread over a period of 5½ years, including compulsory Internship of one year duration after passing the Final Degree Examination;

(ii) The Internship shall be undertaken at the Hospital attached to the College and in cases where such Hospitals cannot accommodate all of its students for Internship, such students may undertake their Internship in a Hospital or dispensary run by the Central Government or State Government, or local bodies;

(iii) At the completion of the Internship of the specified period and on the recommendation of the head of the Institution where Internship was undertaken, the concerned State Board or University, as the case may be, shall issue the degree to the successful candidate;

PART III

Admission to Course

4. Minimum qualification.—No candidate shall be admitted to the B.H.M.S. (Degree) Course unless he has—

- (a) passed the Intermediate Science or its equivalent examination with Physics, Chemistry and Biology as his subjects;
- (b) Attained the age of 17 years on or before 31st December of the year of his admission to the first year of the course.

PART IV

The Curriculum

5. Subjects.—Subjects for study and examination of the B.H.M.S. (Degree) Course, shall be as under—

- (i) Anatomy,
- (ii) Physiology,
- (iii) Organon of Medicine,
- (iv) Chronic diseases and Homoeopathic philosophy,
- (v) Fundamentals of psychology and logic,
- (vi) Case-taking and homoeopathic repertorisation,
- (vii) Homoeopathic Pharmacy,
- (viii) Homœopathic materia medica,
- (ix) Pathology, bacteriology and parasitology,
- (x) Social and preventive medicine including health education and family medicine,
- (xi) Forensic Medicine,
- (xii) Practice of Medicine and paediatrics,
- (xiii) Obstetrics and gynaecology,
- (xiv) Surgery including E.N.T. and ophthalmology,
- (xv) Homoeopathic therapeutics, and
- (xvi) History of medicine.

PART V

Syllabus

6. Syllabus for Direct Degree Course.—Following shall be syllabus for B.H.M.S. (Direct Degree) Course :

PREFACE

A direct degree course is ultimately to be the pattern of uniform homoeopathic education in India, though for various reasons the diploma course and the graded degree course have to be continued for some time.

As the direct degree course is now being introduced wherever possible, a good number of degree colleges dotted all over the country may soon be expected. As this course will thus in time set the standard of homoeopathic education and practice in India, it is of the utmost importance that the syllabus expected to fulfil this object should be designed accordingly.

An endeavour has therefore been made in the following syllabus to ensure that the requisite type of education is imparted by the degree colleges to their students.

**FIRST B.H.M.S. EXAMINATION
HOMOEOPATHIC PHARMACY**

Theoretical

1. Introduction.—Homoeopathic Pharmacy its speciality and originality, Hom. Pharmacopoeia.
2. Scope of Homoeopathic Pharmacy in relation to :—
 - (1) Organon of Medicine (Aph 264 to 285 organon of medicine).
 - (2) Materia Medica.
 - (3) National Economy.
3. Weights and measures including Hom. Scales (Deci. Centi. Milli).
4. Homoeopathic pharmaceutical instruments and appliances.
5. Sources of Homoeopathic Drugs, process of collection of drugs substances, identification, purification, preservation and also preservation of potentised drugs.
6. Vehicles—
 - (1) their preparation and uses.
 - (2) purification.
 - (3) determination of proof strength of alcohol.
7. Methods of preparation of drugs from organic and inorganic chemicals, vegetables, animals and animal products, disease products (Nosodes) etc. (Hahnemann's classical and modern methods including merits and demerits).
8. (a) Methods of preparation of mother tinctures, solutions potencies and trituration.
- (b) Potentisation of drugs on :—
 - (i) Decimal scale.
 - (ii) Centesimal scale.
9. Fluxion potency—methods of conversion of trituration into liquid form—straight potency.
10. External application—its scope—modes of preparation and uses, lotion, Liniment, glycerole, ointment.
11. Prescription—its study including abbreviations—principles and mode of prescription writing and its validity.
12. Pharmacology—Drug strength—Hom. Pharmacodynamics—Dynamic Power—Medicine—Posology—Remedy.
13. Brief study of standardisation of drugs and vehicles.
14. General knowledge of legislation in relation to Homoeopathic pharmacy.
15. General laboratory methods solutions, dilution, Decantation, precipitation, filtration, distillation, crystallisation, sublimation, percolation etc.

16. Study of biological/mechanical and/or chemical characteristics of some important drug substances.

17. The technique of Homoeopathic drug proving.

PRACTICAL

1. Identification and uses of Homoeopathic Pharmaceutical instruments and appliances and their cleaning.
2. Identification of important Homoeopathic drugs (vide list attached).
 - (a) Microscopic—
 - (i) At least 30 drugs substances—20 from vegetable kingdom and 10 from minerals and chemicals ;
 - (ii) Collection of 30 drugs substances for her barium ;
 - (iii) Microscopic study of two triturations upto 3X potency.
3. Estimation of moisture constant of one drug substance with water bath.
4. Purity test of ethyl-alcohol, distilled water, sugar of milk including determination of sp. gravity of dist. water and alcohol.
5. Estimation of size of globule—its medication, medication of milk sugar and Dist. water—making of doses.
6. Preparation of dispensing and dilute alcohol solutions and dilutions.
7. Preparations of mother tinctures of 3 poly-chrests.
8. Preparations of triturations of 3 crude drugs upto 3X.
9. Preparations of mother tinctures of drugs which do not conform to the D.S.I.
10. Potentisation of 3 mother tinctures upto 6 decimal scale and 3 centesimal scale.
11. Trituration of 3 drugs 6X and their conversion into liquid potencies.
12. Preparation of external application—one each.
13. Writing of prescriptions and dispensing of the same.
14. Laboratory Methods :—
 - (a) Sublimation.
 - (b) Distillation.
 - (c) Decantation.
 - (d) Filtration.
 - (e) Crystallisation.
 - (f) Percolation.
15. Visit to a Homoeopathic Laboratory to study the manufacture of drugs on a large scale.

LIST OF DRUGS FOR IDENTIFICATION

1. Aconitum Nap.
2. Agaricus M.
3. Antimonium Tart.
4. Apis Mellifica.
5. Argentum Nitric.
6. Arnica Montana.
7. Arsenicum Alb.
8. Aurum Met.
9. Baptisia T.
10. Baryta Carb.
11. Belladonna.
12. Bryonia Alb.
13. Cactus G.
14. Calcarea Carb.
15. Calcarea Phos.
16. Calendula.
17. Camphor.
18. Cantheris.
19. Carbo Vegetabilis.
20. Causticum.
21. Chamomilla.
22. Chelidonium M.
23. China.
24. Cina.
25. Cocculus I.
26. Colchicum A.
27. Colocynthis.
28. Conium M.
29. Cuprum Met.
30. Digitalis P.
31. Drosera.
32. Dulcamara.
33. Glonoine.
34. Graphites.
35. Hepar Sul.
36. Hyoscyamus.
37. Hypericum.
38. Ignatia.
39. Ipecacuanha.
40. Kali Carb.
41. Lachesis.
42. Lycopodium.
43. Mercurius Cor.
44. Mercurius Sol.
45. Mezerium.
46. Natrum Mur.
47. Nitric Acid.
48. Nux Vomica.
49. Opium.
50. Phosphorus.
51. Phosphoric Acid.
52. Platina M.
53. Plumbum M.
54. Pulsatilla.

55. Rhus Tox.
56. Ruta G.
57. Sambucus N.
58. Sanguinaria C.
59. Secale Cor.
60. Sepia.
61. Silicea.
62. Spigelia.
63. Spongia T.
64. Stannum Met.
65. Stramonium.
66. Sulphur.
67. Tarentula Hisp.
68. Thuja O.
69. Vertrum Album.
70. Veratrum Viride.
71. Zincum Met.

ANATOMY AND PHYSIOLOGY

Study of Normal Man in Preclinical Period

Human anatomy is the most difficult of all sciences to study. Man is a conscious mentalised, living being and functions as a whole. Human knowledge has become so vast that for precise comprehension of man as a whole development of different branches of science like anatomy, physiology and psychology was necessary. But such a division is only an expedient, man nevertheless remains indivisible.

Consciousness, life and its phenomena cannot be explained in terms of cell physiology or of quantum mechanics, nor by physiological concepts which in their turn are based on chemico-physical concepts.

Though anatomy and physiology are hitherto being taught as entirely different subjects, a water-tight barrier should not be erected between them, structure (anatomy) and function (physiology) are but correlated aspects and the physio-chemical processes are but an external expression of an inexplicable phenomenon which is life.

So anatomy and physiology should be taught with the following aims :

(i) to provide for the understanding of the morphological, physiological and psychological principles which determine and influence the organism of the living body as a functioning unit ;

(ii) to correlate and interpret the structural organism and normal physiology of the human body and thus to provide the data on which to anticipate disturbances of functions ;

(iii) to enable the student to recognise the anatomical, physiological and psychological basis of the clinical signs and symptoms of disorders due to injury, disease and maldevelopment ;

(iv) Similarly, to give the student to understand the factors involved in the development of pathological

processes and the possible complications which may arise therefrom;

(v) to give the student such knowledge of pre-clinical subjects as will enable him ultimately to employ competently and rationally all the ordinary methods of examination and treatment (including surgery) that may involve such knowledge; and

(vi) for enabling the student to pick out strange, rare and uncommon symptoms from pathognomonic symptoms for individualisation of patients and drugs for the purpose of applying the law of similars in homoeopathic practice.

ANATOMY

Instruction in anatomy should be so planned as to present a general working knowledge of the structure of the human body. The amount of detail which he is required to memorise should be reduced to the minimum. Major emphasis should be laid on functional anatomy of the living subject rather than on the static structures of the cadaver, and on general anatomical positions and broad relations of the viscera, muscles, blood-vessels, nerves and lymphatics. Study of the cadaver is only a means to this end. Students should not be burdened with minute anatomical details which have no clinical significance.

Though dissection of the entire body is essential for the preparation of the student for his clinical studies, the burden of dissection can be reduced and much saving of time can be effected, if considerable reduction of the amount of topographical details is made and the following points are taken into consideration.

1. Only such details as have professional or general educational value for the medical student should be presented to him.

2. The purpose of dissection is not to create technically expert prosector but to give the student an understanding of the body in relation to its function, and the dissection should be designed to achieve this end; for example, ignoring of small and clinically unimportant blood vessels results in such cleaner dissection and a much clearer picture of the main structures and their natural relationships.

3. Much that is at present taught by dissection could be demonstrated as usefully through prepared dissected specimens.

4. Normal radiological anatomy may also form part of practical training. The structure of the body should be presented linking functional aspect.

5. Actual dissection should be preceded by a course of lectures on the general structure of the organ or the system under discussion and then its function. In this way anatomical and physiological knowledge can be presented to students in an integrated form and the instruction of the whole course of anatomy and physiology made more interesting, lively and practical.

6. A good part of the theoretical lectures on anatomy can be transferred to tutorial classes with demonstrations.

A few lectures or demonstrations on the clinical and applied anatomy should be arranged in the later part of the course. They should preferably be given by a clinician and should aim at demonstrating the anatomical basis of physical signs and the value of anatomical knowledge to the clinician.

Seminars and group discussions to be arranged periodically with a view of presenting different subjects in an integrated manner.

Formal class room lectures to be reduced but demonstrations and tutorials to be increased.

There should be joint teaching-cum-demonstration sessions with clinical materials illustrating applied aspect of Anatomy in relation to clinical subjects. This should be arranged once a fortnight and even form part of series of introductory lectures if needed.

There should be joint seminars with the departments of Physiology and Bio-Chemistry and should be organised once a month. There should be a close correlation in the teaching of gross Anatomy, Histology, Embryology and Genetics. The teaching of areas and systems in Anatomy, Physiology including Bio-chemistry should be integrated as far as possible.

THEORETICAL

A complete course of human anatomy with general working knowledge of different anatomical parts of the body. Emphasis should be laid down on the general anatomical positions and broad relations of the viscera, muscles, blood vessels, nerves and lymphatics. Candidates should not be burdened with minute anatomical details of every description which has no clinical significance.

Candidates will be required to recognise anatomical specimen and to identify and answer questions on structures displayed in recent dissections, to be familiar with the bones and their articulations including the vertebrae, the skull and with the manner of ossification of the long bones.

Emphasis will not be laid on minute details except in so far as is necessary to the understanding of or in their application to medicine and surgery. Candidates are expected to know the attachments of muscles sufficiently to understand their actions, but not the precise details of origin and insertion of every muscles. A knowledge of the minor details of the bones of the hand, foot, their articulations and details of the small bones of the skull will not be required.

The curriculum of anatomy should be divided under the following headings :—

I. Gross Anatomy—to be dealt under the following categories :—

(a) Introductory lectures with demonstrations.

(b) Systematic series.

The study to be covered by deductive lectures, lecture, demonstrations, surface and radiological anatomy, by dissection of the cadaver and study of

dissected specimen. Knowledge thus obtained together with corolation of facts should be integrated into living anatomy. Details of topographical relation should be stressed for these parts which are of importance in general practice.

- (i) Superior extremity, inferior extremity, head, neck, throax, abdomen and pelvis to be studied regionally and system by system (special reference to be made to development and its anomalies, regional, innervation, functional groups of muscles in relation to joints or otherwise and Applied Anatomy).
- (ii) Endocrine organs—with special reference to development and applied anatomy.

II. Developmental anatomy—General principles of development and growth and the effect of hereditary and environmental factors to be given by lectures, charts, models and slides.

III. Neuro-anatomy, Gross Anatomy of brain and spinal cord and the main nerve tracts. The peripheral nerves. Cranial nerves their relations, course and distributions.

Autonomic nervous system—Development and anomalies. Applied Anatomy.

The study to be covered by lectures, lecture-demonstrations, dissection of brain and cord, and clinical correlation.

N.B.—The practical study should proceed the study of physiology nervous system. Early correlation—with the clinical course is desirable.

IV. Micro-anatomy (Histology)—Modern conceptions of cell, epithelial tissue, connective tissue, muscular tissue, nervous tissue.

(A) Introductory Lectures—

(a) Modern conception of cell-components and their functions why a cell divides, cell division—types with their signification.

(b) Genetic Individuality.—(i) Elementary genetics—definition, health and diseases, result of interaction between organism and its environments, utility of knowledge from homoeopathic point of view.

- (ii) Mendel's Laws and their significances.
- (iii) Applied genetic.

(B) Developmental Anatomy—15 lectures.

(C) General anatomy & micro-anatomy—15 lectures.

(D) Regional anatomy.

(a) Upper Extremity—15 lectures.

- (i) Skeleton, position and functions of joints.
- (ii) Muscle groups, brachial plexus.

(iii) Arterial supply, venous drainage, neurovascular bundles, lymphatics and lymph nodes, relation of nerves to bones.

(iv) Joints with special emphasis on shoulder, elbow and wrist joints, muscles, producing movement, results of nerve injury.

(v) Radiology of bones and joints, ossification, determination of age.

(vi) Applied anatomy.

(vii) Surface marking of main arteries, nerves.

(b) Lower extremity—15 lectures.

(i) Skeleton, position and functions of joints.

(ii) Muscle groups, lumbar plexus.

(iii) Arterial supply, venous drainage, neurovascular bundles, lymphatics and lymph nodes, relation of nerves to bones.

(iv) Joints with special emphasis on lumbo sacral hip, knee and ankle joints, muscles producing movement, results of nerve injury.

(v) Radiology of bones and joints, ossification, determination of age.

(vi) Applied anatomy.

(vii) Surface marking of main arteries, nerves.

(c) Thorax—15 lectures.

(i) Skeleton of joints of muscles of chest wall—diaphragm, innervation of abdominal and thoracic respiration, difference with age. The mammary gland lymphatic drainage.

(ii) The pleura & lungs.

(iii) Arrangements structures in the mediastinum, heart, coronary arterios, great vessels, trachea, oesophagus, lymph nodes, thymus.

(iv) Radiology of heart, aorta, lungs, bronchogram.

(v) Applied anatomy.

(vi) Surface marking—pleura, lungs, heart—valves of heart, border, arch of aorta, sup. venacava, bifurcation of trachea.

(d) Abdomen and pelvis—25 lectures.

(i) The abdominal wall—skin and muscles, innervation of fascia, peritoneum, blood vessels, lymphatics, autonomic, ganglia and plexuses.

(ii) Stomach, small intestine, caecum, appendix, large intestine.

(iii) Duodenum, pancreas, kidneys, ureters, supra renal.

(iv) Liver and gall bladder.

(v) Pelvis, skeleton and joints, muscles of the pelvis, organs internal and external genitalia in the male and in the female, lumbosacral plexus, vessels, lymphatics, autonomic ganglia and plexuses.

- (vi) Blood vessels and nerve plexuses of abdomen and pelvis, the portal venous system.
- (vii) Applied anatomy of referred pain, portal systemic anastomosis, catheterization of the urinary bladder in the male and female.
- (viii) Surface marking of organs and blood vessels.
- (e) Head and neck—25 lectures.
- (i) Scalp—Innervation, vascular supply middle meningeal artery.
 - (ii) Face-Main Muscles groups-muscles of facial expression, muscles of mastication, innervation of skin and repair muscles, vascular supply, principles of repair scalp and face wrinkles.
 - (iii) The eyelids, eyeball, lacrimal apparatus; the muscles that move the eyeball.
 - (iv) The nasal cavity and nasopharynx, septum, conchae, paranasal sinus, eustachian tube lymphoid masses.
 - (v) Oral cavity and Pharynx.
 - (vi) Larynx and laryngeal part of Pharynx structure (No details) functions, nerves supply, laryngoscopic appearances.
 - (vii) Cervical vertebrae joints of head and neck.
 - (viii) Structures of neck, sternomastoid, brachial plexus, main arteries and veins, disposition of lymph nodes, areas of drainage, phrenic nerve, thyroid gland and its blood supply, para-thyroid the trachea, oesophagus. The position of the Sub-mandibular and sub-lingual salivary glands.
 - (ix) Teeth and dentition.
 - (x) The external middle and internal ear.
 - (xi) Applied anatomy.
 - (xii) Surface Marking.—Parotid gland, middle meningeal artery, thyroid gland, common, internal and external carotid arteries.
- (f) Neuro-anatomy.—10 lectures.
- (i) Meninges—functions of.
 - (ii) Cerebrum—areas of localisation, vascular supply basal ganglion, internal capsule.
 - (iii) Cerebellum—functions.
 - (iv) Pons, medulla, midbrain, cranial nerves, palsies.
 - (v) Cerebro-spinal fluid—formation, circulation, function, absorption.
 - (vi) Cranial nerves, origin, courses (with minimum anatomical detail) areas of distribution.
- (vii) Spinal cord-coverings, segments, relation of segments to vertebral column, spinal nerves, distribution.
- (viii) The sympathetic and parasympathetic nervous system, location, distribution, function.
- (ix) Applied anatomy of lumbar puncture, referred pain, spinal anaesthesia, increased intracranial pressure.

PRACTICAL

Dissection of the whole human body in the course of 1st Months, academic months shall be 160 hrs.

1. Each dissection when completed, must be shown to the demonstrator and permission must be obtained before proceed to the next item.

2. Before allotment of a part, each student must pass the oral test of the bones on the part taken by the demonstrator.

3. There should be printed form of the class of practical anatomy as per guide lines to be followed by every recognised college.

GUIDLINE FOR DISSECTION

Name : _____
Session : _____ Roll No. _____
Year : _____

BRAIN-BULBUS OCULI

Each dissection, when completed, must be shown to one of the Demonstrators and permission must be obtained before proceeding to the next item.

Date of distribution of part:—

Date of completion of part:—

Remarks :

Demonstrator, _____ Professor of Anatomy _____

Brain-Bulbus Oculi			
Item	Items started on	Marks	Examiner
		Dissection	Viva
1. Membranes of the brain and the cisternae			
2. Superficial blood vessels of the brain			

Item	Items started on	Marks	Examiner	Item	Items started on	Marks	Examiner
		Dissection	Viva			Dissection	Viva
3. Superficial anatomy				1.			
Lateral surface Medical				2.			
surface Base of brain				3.			
4. Cerebrum—				4.			
(a) Fissures Sulci and				5.			
Gyri Lobes				6.			
Motor and Sensory				7.			
area				8.			
(b) Corpus callosum;				9.			
lateral ventricle;				10.			
(c) Tela chordae and				11.			
3rd ventricle				12.			
(d) Thalamus and				13.			
corpus striatum				14.			
(e) Commissural, Asso-				15.			
ciation and proje-				16.			
ction fibres							
(f) Rhinon Cephalon							
5. Mid brain—							
Cerebral peduncles							
Corpora quadrigemina							
Optic tract							
6. Mid brain—							
(a) Pons and 4th							
ventricle							
(b) Medulla oblongata							
(c) Cerebellum							
7. Ascending and descending tracts							
8. Cranial topography							
9. External tunics—							
Sclera							
Cornea							
Choroid							
10. Iris, ciliary body—							
ciliary nerves and vessels							
11. Refractive media—							
Aqueous Humour							
Pupil							
Lens and its capsule							
Vitreous humour							
Retina							
Total							
Percentage							

Head and Neck

Roll No. _____

Name :

Session:

Year :

Each dissection, when completed, must be shown to one of the demonstrators and permission must be obtained before proceeding to the next item.

Date of distribution of part:—

Date of Completion of part:—

Remarks

Professor of Anatomy

Demonstrator

182 GI/83—6

11. Parotid region

12. Infratemporal region

- (i) Optic ganglion and chorda tympani
- (ii) Sinus of meninges

13. Mandibular joint

14. Prevertebral region

15. Crano-vertebral and vertebral articulations

16. Mouth and pharynx

1	2	3	4	5
---	---	---	---	---

17. Nose and accessory sinuses
18. Spheno-palatine region-
 - (i) Pterygo-palatine fossa
 - (ii) Pterygo-maxillary fissure
 - (iii) Maxillary nerve and sphenopalatine ganglion
19. Larynx
20. Tongue
21. Auditory apparatus-
 - (i) External ear
 - (ii) Middle ear, mastoid antrum
 - (iii) Internal ear

Total _____
Percentage _____

THORAX

Name : _____
Session : _____ Roll No. _____
Year: _____

Each dissection when completed, must be shown to one of the Demonstrators and permission must be obtained before proceeding to the next item.

Date of distribution of part :

Date of completion of part :

Remarks:

Professor of Anatomy

Demonstrator

Item	Items started on	Marks	Examiner	
1	2	3	4	5

1. Anterior thoracic wall
2. Dissection of intercostal
3. Space and contents
4. Ant. articulation—
 - (i) Sterno Clavicular
 - (ii) Chondrosternal
 - (iii) Intra chondral articulations
5. Pleura-roots of lungs and pulmonary plexus
6. Anterior mediastinum and superior mediastinum
7. Middle mediastinum and pericardium
8. Phrenic and Vagus nerves cardiac plexus
9. Heart

1	2	3	4	5
---	---	---	---	---

10. Posterior mediastinum and its contents
11. Thoracic portion of sympathetic its branches and distribution
12. Posterior thoracic wall-intercostal vessels and nerves
13. Diaphragm
14. Vertebral—Costovertebral articulations
15. Surface anatomy

Total _____
Percentage _____

ABDOMEN

Name : _____
Session : _____ Roll No. _____
Year: _____

Each dissection when completed, must be shown to one of the Demonstrators and permission must be obtained before proceeding to the next item.

Date of distribution of part :

Date of completion of part:

Remarks:

Professor of Anatomy.

Demonstrator	Items	Item started on	Marks	Examiner
1	2	3	4	5

1. Perineum
2. External genitals—

Male
Female
3. Anterior abdominal wall

Spermatic cord
Round Ligament
4. Abdominal cavity—

Positions and relations
of viscera
5. Peritoneum—

Greater sac
Lesser sac
6. Mesenteric vessels
7. Stomach, Celiac Axis, and Portal vein
8. Small intestine (Jejunum and Ileum)
9. Large intestine up to iliac colon
10. Duodenum, pancreas and spleen

1	2	3	4	5	Items	Items started on	Marks	Examiner
					1	2	3	4
11. Liver					1. Superficial dissection of back			
12. Kidney, Suprarenal gland and abdominal wall					2. Pectoral region and axillary fossa			
13. Diaphragm					3. Shoulder and scapular region Acromio—clavicular articulation			
14. Abdominal portion of sympathetic system including coeliac and aortic plexuses.					4. Cubital fossa			
15. Aorta, Inf. Venacava, Common, internal and External Iliac vessels.					5. Front of the arm			
16. Lymphatic system of the abdomen.					6. Back of the arm			
17. Lumbar plexus of nerves and lumbar vessels					7. Front of the forearm			
18. Pelvis—Positions and relations of viscera					8. Palm of the hand—superficial dissection			
19. Hypogastric vessels and their branches.					9. Palm of the hand Deep dissection			
20. Pelvic fascia and Pelvis muscles—pelvis portion of ureter					10. Back of forearm			
21. Sigmoid colon, Rectum, Anal Canal					11. Dorsum of the hand			
22. Urinary bladder, Prostate and urethra					12. Shoulder joint			
23. Ovary, uterus, uterine tubes, vagina					13. Elbow and Radio-ulnar joint			
24. Pelvic nerves					14. Wrist joint and articulations of the hand.			
25. Articulations— Lumbo sacral Sacro illiac Sacro coccygeal Symphysis pubis					Total			
					Percentage			

SUPERIOR EXTREMITY

Name :

Session:

Roll No. ---

Year:

Each dissection when completed, must be shown to one of the Demonstrators, and permission must be obtained before proceeding to the next item.

Date of distribution of part:

Date of completion of part:

Remarks

Professor of Anatomy

INFERIOR EXTREMITY

Name :

Session :

Roll No. _____

Year :

Each dissection when completed, must be shown to one of the Demonstrators and permission must be obtained before proceeding to the next item.

Date of distribution of part :—

Date of completion of part :—

Remarks:—

Demonstrator

Professor of Anatomy

Items		Marks	Examiner	
1	2	3	4	5
1. Superficial dissection of sole				
2. Gluteal region				
3. Popliteal fossa				
4. Back of thigh				

5.	Superficial dissection of whole of the front of the thigh Cutaneous nerves Cutaneous vessels Deep fascia	
6.	Deep dissection— (a) Femoral sheath and Femoral hernia (b) Adductor region (c) Adductor canal (d) Quadriceps muscle	
7.	Anterior tibiofibular region, Dorsum of foot	
8.	Perineal region	
9.	Post tibiofibular region Superficial and middle compartment	
10.	Deep dissection of sole	
11.	Hip joint	
12.	Knee joint	
13.	Tibiofibular and joints	
14.	Articulations of the foot including the arches	
	Total	
	Percentage	

The written papers in Anatomy shall be distributed as follows:—

Paper I — Upper extremity, head, face, neck and brain,

Paper II — Thorax, abdomen, pelvis and lower extremity

PHYSIOLOGY

The purpose of a course in physiology is to teach the functions, processes and inter-relationship of the different organs and systems of the normal human organism as a necessary introduction to their disturbance in disease and to equip the student with normal standards of reference for use while diagnosing and treating deviations from the normal. To a homoeopath the human organism is an integrated whole of body, life and mind; though life includes all the chemico-physical processes it transcends them. There can be no symptoms of disease without vital force animating the human organism and it is primarily the vital force which is deranged in disease. Physiology should taught from the stand-point of description of vital phenomena and the chemico-physical processes underlying them in health.

There should be close co-operation between the various departments while teaching the different systems. There should be joint courses between the two departments of anatomy and physiology so that there is maximum co-ordination in the teaching of these subjects.

Seminars should be arranged periodically and lecturers of anatomy, physiology and bio-chemistry should bring home the point to the students that the integrated approach is more meaningful. For example, gross and minute structure will be dealt

with by the anatomist while the role of subcellular particles in metabolic processes and the method to assess them may be explained by the bio-chemist and towards the end the physiologist may dealt in an integrated manner with behaviour of the cell as a unit, co-ordinating the characteristic bio-chemical and structural components sub-serving specific functions. Students should be encouraged to participate in the seminars and present the practical subjects in an integrated manner.

THEORETICAL

(1) Introductions

Fundamental phenomena of life. The cell and its differentiation. Tissues and organs of the body.

(2) Bio-chemical principles

Elementary constituents of protoplasm. Chemistry of proteins, carbohydrates and lipids. Enzymes.

(3) Bio-physical principles

Units of concentration of solutions, ions, electrolytes and non-electrolytes, filtration, diffusion, ultrafiltration, dialysis, surface tension, Absorption, hydrostatic, osmotic equilibrium, colloid, acid, base concentration H.

(4) Nerve muscle physiology

Excitation process in a nerve and its propagation changes undergone by a nerve on stimulation. Polarisation phenomena in nerve. Electromechanics, Reaction of degeneration, Neuromuscular transmission. Different types of muscles in the body. Change on excitation and nature of the contractile process. Physiology of muscular exercise. Rigor mortis.

(5) Blood composition

Regulations of blood volume and its determination, specific gravity of blood, reaction of blood and its regulation. Composition and function of blood plasma. Plasma protein and their function. Bone marrow, origin, composition, fat, function of the formed element of blood. Chemistry of haemoglobin and its compounds and derivatives, coagulation of blood. Haemolysis, blood group.

(6) Cardio-vascular system

Structure and properties of cardiac muscle, cardiac cycle, action of valves, heart sounds, apex beat, nutrition of heart and coronary circulation, Electro-cardiogram, cardiac output. Origin and propagation of cardiac impulse. Nervous regulation of heart, cardiac reflexes, course and circulation of blood, structure of arteries, capillaries and veins, peculiarities of cerebral, pulmonary, hepatic, portal and renal circulation. Time of complete circulation, velocity of blood flow. Pulse, arterial and venous, innervation of blood vessels and control of circulation. Blood pressure and its regulation. Control of capillary circulation.

(7) Reticulo Endothelial system and lymph
Reticulo endothelial system (R.E. system),
spleen lymphatic glands. Tissue fluids and
lymph, oedema.

(8) Respiratory system.

Anatomy and minute structure of respiratory organs. Mechanism of respiratory movement, spirometry, chemistry of respiration. Composition of inspired, expired and alveolar air. Respiratory quotient. Basal metabolism. Gases in blood and their tension. Transport of O₂ and CO₂ in blood. Mechanism of external and internal respiration, control of respiration. Cheynes-stokes respiration. Apnoea, dyspnoea, anoxia, cyanosis, asphyxia, effect of high and low atmospheric pressure, acclimatisation, Mountain sickness, caisson disease, artificial respiration, effect of respiration on circulation.

(9) Digestive system

Metabolism, nutrition and dietetics, normal diet, vitamins. Milk its properties. The digestive organs and their structure and function, various digestive juices, mechanism and functions. Liver, movement of alimentary canal. Defecation, digestion and absorption of the food stuff, and their metabolism. Biological value of protein. Bloodsugar and its regulation. Mineral Metabolism and metabolism during starvation. Nutrition of an individual.

(10) The sense organs

General features, classification, sensation, Sensory Organs and sensory pathways :

- (a) Vision.—Anatomy of the eye. Errors of refraction and their correction. Mechanism of accommodation, structure and functions of coats of eye ball. Ocular reflexes. Visual field. Visual pathway. Colour vision, Colour blindness. Binocular vision.
- (b) Hearing.—Structures of auditory apparatus, conduction of sound waves. Helmholtz theory. Cochlear response. Vestibular apparatus.
- (c) Taste and smell.—Structure and function of the receptor organs.
- (d) Cutaneous and deep sensation.—Structure and function and receptors.

(11) Voice and speech

Anatomy of larynx, Mechanism of production of voice and speech.

(12) Endocrine Organs

(13) Reproduction

Primary and secondary sex organs and secondary sex character. Mammary gland and Prostate. Placenta and its function. Foetal respiration and circulation.

(14) Excretory system

Kidney—formation and chemical composition

of urine, structure and functions of kidney. Constituents of urine, normal and abnormal. Volume of urine, physiology of micturition. Renal efficiency tests.

(15) Inegumentary system

Structure and functions of skin, formation, secretion, composition of sweat and sebum. Body temperature and its regulation.

(16) Nervous system

Evolution and history of nervous system. Spinal cord and reflexes and its properties. Control of excitatory and inhibitory states. Somatic sensory receptors and pathways. Thalamus, Cerebral Cortex. Motor and associated areas. Pyramidal and extrapyramidal pathways, basal ganglia. Posture and locomotion. Sensory and motor. Motor point in man, reticular formation. EEG sleep, autonomic nervous system. Hypothalamas and limbic system. Conditional reflexes, cerebellum.

PHYSIOLOGY (Practical)

- (1) Urine-examination of normal and abnormal constituents of urinary sediments. Quantitative examination for sugar, urea, albumin, acetone and bile.
- (2) R.B.C. & W.B.C. total count making and staining blood-film and differential count of W.B.C. coagulation and bleeding time, Hb. estimation, fragility and sedimentation rate of R.B.C.s.
- (3) Identification and use of common physiological instruments and appliances.
- (4) Identification of histological specimen of tissues and organs viz, Liver, Kidney, lungs, thyroid, pancreas, spleen, trachea, oesophagus, stomach, tongue, intestine, large intestine, testes, ovary, bone, adipose tissue, spinal cord, suprarenal gland, parotid gland, anterior pituitary, salivary glands, skin, parathyroid gland, cerebellum, cerebral cortex, cardiac muscle.

The written papers in physiology shall be distributed as follows :—

Paper—I

Elements of Bio-Physics, Histology, Blood and lymph, Cardiovascular system, Reticulo-endothelial system, spleen. Respiration, Excretion of urine, skin, regulation of body temperature, sense organs.

Paper—II

Endocrine organs, nervous system, nerve muscles physiology. Digestive system and metabolism, Biochemistry of protein, carbohydrate and lipid, Enzymes. Nutrition.

Practical Examination

Full Marks—100

Marks

(1) Examination of physical and chemical constituents of normal and abnormal urine (qualitative).	20
(2) Enumeration of total cell count of Blood (R.B.C. or W.B.C.) or differential count of peripheral blood or estimation of percentage of Hb.	15
(3) Viva-voce on instruments and apparatus	15
(4) Identification of two Histological slides	10
(5) Experimental physiology	15
(6) Laboratory Note-Book	10
(7) Viva-voce on experiments	15

PSYCHOLOGY

Introduction to Normal Psychology

- (a) Definition of psychology as a science and its difference from other science.
- (b) Conception of the mind.
- (c) Mesmer and his theory. Hypnotism structure of consciousness.
- (d) Freud and his theory-Dynamics of the unconscious Development of the Libido.
- (e) Other contemporary schools of Psychology.
- (f) Relation between mind and body in health and disease.
- (g) Perception. Imagination. Ideation. Intelligence. Memory.
- (h) Cognition. Conation. Affect. Instinct. Sentiment. Behaviour.

HOMOEOPATHIC MATERIA MEDICA

Homoeopathic materia medica is differently constructed as compared to other material medicas. Homoeopathy considers that study of the action of drugs on individual parts or systems of the body or on animals or their isolated organs is only a partial study of life processes under such action and that it does not lead us to a full appreciation of the action of the medicinal agent; the drug agent as a whole is lost sight of.

2. Essential and complete knowledge of the drug action as a whole can be supplied only by qualitative synoptic drug experiments on healthy persons and this alone can make it possible to view all the scattered data in relation to the psycho-somatic whole of a person; and it is just such a person as a whole to whom the knowledge of drug action is to be applied.

3. The homoeopathic *materia medica* consists of schematic arrangement of symptoms produced by each drug incorporating no theories or explanations about their interpretation or inter-relationship. Each drug should be studied synthetically, analytically and comparatively, and this alone would enable a homoeopathic student to study each drug individually and as a whole and help him to be a good prescriber.

4. Polychrests and the most commonly indicated drugs for every day ailments should be taken up first so that in the clinical classes or outdoor duties the students become familiar with their applications. They should be thoroughly dealt with, explaining all comparisons and relationship. Students should be conversant with their sphere of action and family relationship.

The less common and rare drugs should be taught in outline, emphasising only their most salient features and symptoms. Rare drugs should be dealt with later.

5. Tutorials must be introduced so that students in small numbers can be in close touch with teachers and can be helped to study and understand *materia medica* in relation to its application in the treatment of the sick.

6. While teaching therapeutics an attempt should be made to recall the *materia medica* so that indications for drugs in a clinical condition can directly flow out from the provings of the drugs concerned. The student should be encouraged to apply the resources of the vast *materia medica* in any sickness and not limit himself to memorise a few drugs for a particular disease. This Hahnemannian approach will not only help him in understanding the proper perspective of symptoms as applied and their curative value in sickness but will even lighten his burden as far as formal examinations are concerned. Otherwise the present trend produces the allopathic approach to treatment of diseases and it contradictory to the teaching of organon.

Application of *materia medica* should be demonstrated from cases in the outdoor and hospital wards.

Lectures on comparative *materia medica* and therapeutics as well as tutorials should be as far as possible integrated with lectures on clinical medicine in the various departments.

7. For the teaching of drugs the college should keep herbarium sheets and other specimens for demonstration to the students. Lectures should be made interesting and slides of plants and materials may be projected.

8.(A) Introductory lectures : Teaching of the Homoeopathic *materia medica* should include :

- (i) nature and scope of homoeopathic *materia medica*.
- (ii) sources of homoeopathic *materia medica*, and
- (iii) different ways of studying the *materia medica*.

(B) The drugs are to be taught under the following heads :

- (i) common name, natural order, habitat, part used, preparation.
- (ii) sources of drug proving.
- (iii) symptomatology of the drug emphasising the characteristic symptoms and modalities.
- (iv) comparative study of drugs.
- (v) complementary, inimical, antidotal and concordant remedies.
- (vi) therapeutic applications (applied materia medica).

(C) A study of 12 tissue remedies according to Schussler's Biochemic System of Medicine.

APPENDIX I

LIST OF DRUGS INCLUDED IN THE SYLLABUS OF MATERIA MEDICA FOR THE 1ST B.H.M.S. EXAMINATION

1. Abrotanum
2. Aconitum Nap.
3. Aesculus Hip.
4. Aethusa Cyn.
5. Alium Cepa.
6. Aloes Socotrina
7. Ammonium Carb
8. Antimonium Crud
9. Antimonium Tart
10. Apis Mellifica
11. Argentum Met.
12. Argentum Nit.
13. Arnica Montana.
14. Arsenicum Alb.
15. Arum Triph.
16. Aurum Met.
17. Baptisia Tin.
18. Baryta Carb
19. Belladonna
20. Berberis Vul.
21. Borax
22. Bryonia Alb.
23. Calcarea Carb.
24. Calendula
25. Carbo Veg.
26. Causticum
27. Chamomilla
28. Cina
29. Cichona Off
30. Colchicum Autm.
31. Colocynth
32. Drosera
33. Dulcamara
34. Euphrasia
35. Gelsemium
36. Graphites
37. Hepar Sulph.

38. Helleborus
39. Hyoscyamus N.
40. Ignatia
41. Ipecac
42. Kali Bich
43. Kali Carb.
44. Lachesis
45. Ledum Pal
46. Lycopodium
47. Mercurius Cor.
48. Mercurius Sol.
49. Niteric Acid
50. Nux. Vomica
51. Podophyllum
52. Pulsatilla
53. Rhus Tox.
54. Secale Cor.
55. Spongia Tosta
56. Sulphur
57. Thuja Oc.
58. Veratrum Alb.
59. Calcarea Fluor
60. Calcarea Phos.
61. Calcarea Sulph.
62. Ferrum Phos
63. Kali Mur.
64. Kali Phos.
65. Kali Sulph.
66. Magnesia Phos
67. Natrum Mur.
68. Natrum Phos.
69. Natrum Sulph
70. Silicea

APPENDIX III SYLLABUS OF MATERIA MEDICA FOR III & IV B.H.M.S. EXAMINATION

In addition to the list of drugs (Appendix I & II) for the I & II B.H.M.S. examinations the following additional drugs are included in the syllabus of Materia Medica for the III & IV B.H.M.S. examinations.

1. Abies Can.
2. Abies Nigra.
3. Acalypha Indica
4. Actea Spicata
5. Adonis Vernalis
6. Adrenalin
7. Anthraxium
8. Antimonium Ars.
9. Artemisia Vulgaris
10. Asafoetida
11. Asterias Rubena
12. Avena Sativa
13. Bacillimum
14. Baryta Mur.
15. Bellis Perennis
16. Benzoic Acid

17. *Blatta Orientalis*
 18. *Bufo Rana*
 19. *Caladium*
 20. *Cannabis Ind.*
 21. *Cannabis Sat.*
 22. *Capsicum*
 23. *Carbo Animalis*
 24. *Carbolic Acid*
 25. *Cardus Marianus*
 26. *Carsinosin*
 27. *Caulophyllum*
 28. *Cedron*
 29. *Ceanothus*
 30. *Chininum Ars*
 31. *Cholesterium*
 32. *Cicutta virosa*
 33. *Clematis*
 34. *Coca*
 35. *Cocculus Ind.*
 36. *Coffea Crud*
 37. *Collinsonia*
 38. *Condurango*
 39. *Corallium*
 40. *Craæcægus*
 41. *Crocus Sat.*
 42. *Crotalus Hor.*
 43. *Croton Tig.*
 44. *Cuprum Met.*
 45. *Cyclamen*
 46. *Dioscorea Villosa*
 47. *Diphtherinum*
 48. *Equisetum*
 49. *Erigeron*
 50. *Eupatroides Perfol.*
 51. *Flouric Acid*
 52. *Glonoinæ*
 53. *Helonias*
 54. *Hydrastis Can.*
 55. *Hydrocotyle*
 56. *Hypericum*
 57. *Iodium*
 58. *Kalmia Lat.*
 59. *Lac Caninum*
 60. *Lac Def.*
 61. *Lillium Tig.*
 62. *Lithium Carb.*
 63. *Lobelia Inflata*
 64. *Lyssin*
 65. *Magnesia Carb.*
 66. *Magnesia Mur.*
 67. *Malandrinum*
 68. *Medorrhinum*
 69. *Mephitis*
 70. *Melilotus A.*
 71. *Menyanthes*
 72. *Mercurius Cynatus*
 73. *Mercurius Dulcis*
 74. *Mercurius Sol.*
 75. *Millefolium*
 76. *Mezereum*
 77. *Moschus*
 78. *Murex*
 79. *Muriatic Acid*
 80. *Naja T.*
 81. *Onosmodium*
 82. *Oxalic Acid*
 83. *Passiflora*
 84. *Petroleum*
 85. *Phosphoric Acid*
 86. *Physostigma*
 87. *Picric Acid*
 88. *Plumbum Met.*
 89. *Psorinum*
 90. *Pyrogenium*
 91. *Radium Bro.*
 92. *Ranunculus Bulb*
 93. *Raphanus*
 94. *Ratanhia*
 95. *Rheum*
 96. *Rhododendron*
 97. *Rumex Cr.*
 98. *Ruta G.*
 99. *Sabadilla*
 100. *Sabal Ser.*
 101. *Sabina*
 102. *Sambucus Nigra*
 103. *Sanguinaria Can*
 104. *Sanicula*
 105. *Sarsaparilla*
 106. *Squilla*
 107. *Spigelia*
 108. *Stannum Met.*
 109. *Staphysagria*
 110. *Sticta Pul*
 111. *Selenium*
 112. *Stramonium*
 113. *Sulphuric Acid*
 114. *Symphytum*
 115. *Syphilinum*
 116. *Syzygium Jam.*
 117. *Tabacum*
 118. *Taraxacum*
 119. *Tarentula C.*
 120. *Terebinthina*
 121. *Theridion*
 122. *Thälpi Bursa*
 123. *Thyroidinum*
 124. *Trollium Pendulum*
 125. *Unica Urens*
 126. *Urtigo M.*
 127. *Vaccinium*
 128. *Valeriana*
 129. *Variolinum*
 130. *Verafrum Viride*
 131. *Vinca Minor*

- 132. Vipera
- 133. Viburnum Opulus
- 134. X-Ray
- 135. Zincum Met.

APPENDIX II

SYLLABUS OF MATERIA MEDICA FOR THE II. B.H.M.S. EXAMINATION

In addition to the list of 70 drugs for the first B.H.M.S. Examination, (Appendix I) the following additional drugs are included in the syllabus of Materia Medica for the II B.H.M.S. examination.

EXAMINATION

- 1. Acetic Acid
- 2. Actea Racemosa
- 3. Agaricus Muscarius
- 4. Agnus Castus
- 5. Alumina
- 6. Ambra Grisea
- 7. Ammonium Mur.
- 8. Anacardium Ori.
- 9. Apocynum Can.
- 10. Arsenicum Iod.
- 11. Bismuth
- 12. Bromium
- 13. Bovista
- 14. Cactus G.
- 15. Calcaria Ars.
- 16. Camphora
- 17. Cantheris
- 18. Chelidonium Maj.
- 19. Conium Mac.
- 20. Digitalis P.
- 21. Ferrum Met.
- 22. Kali Brom.
- 23. Kreosotum
- 24. Natrum Carb.
- 25. Nux. Moschata
- 26. Opium
- 27. Petroleum
- 28. Phosphorus
- 29. Phytolacca
- 30. Platina Met
- 31. Sepia.

ORGANON AND PRINCIPLES OF HOMOEOPATHIC PHILOSOPHY

I. II. & III B.H.M.S. EXAMINATIONS

Hahnemann's Organon of medicine is the high water mark of medical philosophy. It is an original contribution in the field of medicine in a codified form. A study of Organon as well as of the history of homoeopathy and its founder's life story will show that homoeopathy is a product of application of the inductive logical method of reasoning to the solution of one of the greatest problems of humanity namely the treatment and cure of the sick. A thorough

acquaintance with the fundamental principles of logic, both deductive and inductive is therefore essential. The Organon should accordingly be taught in such manner as to make clear to the students the implications of the logical principle by which homoeopathy was worked out and build up and with which a homoeopathic physician has to conduct his daily work with ease and facility in treating every concrete individual case.

The practical portions should be thoroughly understood and remembered for guidance in practical work as a physician.

I. B.H.M.S. Examination

- (1) Introductory lectures 10 lectures.

Subjects :

What is homoeopathy ?

It is not merely a special form of therapeutics, but a complete system of medicine with the distinct approach to life, health, disease, remedy and cure.

- Its out and out logical and objective basis and approach.
- Homoeopathy is nothing but an objective and rational system of medicine.
- Homoeopathy is thoroughly scientific in the approach and methods.
- Based on observed facts and data and on inductive and deductive logic inseparably related with observed facts and data.
- Distinct approach of Homoeopathy to all the pre-clinical para-clinical and clinical subjects.
- Preliminary idea about all the para-clinical and pre-clinical subjects. Their mutual relations, and relation with the whole living organism.
- Importance of learning the essentials of subjects for efficient applications of the principles of homoeopathy for the purpose of cure and health.
- Distinctive essential features of the dynamic pharmacology (proving) and pharmacy of Homoeopathy.

- (2) Hahnemann's life and pioneers of Homoeopathy and their contributions.

- (3) Hahnemann's Organon of Medicine—aphorism 1 to 70.

II B.H.M.S. Examination

- (1) Hahnemann's Organon of Medicine should be completed during the II B.H.M.S. course though the examination may be limited to Aphorism 1 to 145.
- (2) Introduction to Organon of Medicine (5th and 6th Editions).
- (3) Homoeopathic philosophy (a) Kent's lectures in Homoeopathic philosophy,

- (b) Stuart Close lectures and Essays on homoeopathic philosophy (*Genius of Homoeopathy*) (c) Art of cure by Homoeopathy—H. Roberts (d) Science of therapeutics—Dunham. During the lectures on Homoeopathic philosophy, the following terms should be elucidated :—
- (i) The scope of homoeopathy.
 - (ii) The logic of homoeopathy.
 - (iii) Life, Health, Disease and Indisposition.
 - (vi) Susceptibility, reaction and immunity.
 - (v) General pathology of Homoeopathic theory of acute and chronic miasms.
 - (vi) Homoeopathic Philosophy.
 - (vii) Potentisation and infinitesimal dose and the drug and the drug potential.
 - (viii) Examination of the patient from the Homoeopathic point of view.
 - (ix) Significance and implications of totality of symptoms.
 - (x) The value of symptoms.
 - (xi) The Homoeopathic aggravation.
 - (xii) Prognosis after observing the action of the remedy.
 - (xiii) The second prescription.
 - (xiv) Difficult and incurable cases—palliation.
- (4) Introductory chapters of Huges's Principles and practice of Homoeopathy. In their introductory lectures to organon the professors are requested to impress upon the mind of the students the implications of the logical principles of which homoeopathy was built and worked out; and the history of the development of medicine in the West and Hahnemann's contribution to it in order to arrive at a right assessment of the place of Homoeopathy in all its aspects in the field of medicine and life of Hahnemann.
- III. B.H.M.S. Examination**
- (1) Hahnemann's Organon of Medicine (5th & 6th Editions).
 - (2) History of homoeopathic medicine—as it existed during Hahnemann's time, early life of Hahnemann; his disgust with the existing system of treatment; his discovery of law of similars; history of the late life of Hahnemann. Introduction of Homoeopathy in various countries. Pioneers of Homoeopathy and their contributions. Development of Homoeopathy upto the present day. The present trends in the development of Homoeopathy on other systems of medicine.
 - (3) Homoeopathic philosophy.
 - (4) Hahnemann's on chronic Diseases.

- Topicwise Study of Organon
- A. Lectures on doctrinal part (Aphorism 1—70)
- (a) Aim of physician and highest ideal cure Aph 1 & 2.
 - (b) Knowledge of a physician—Aph 3 & 4.
 - (c) Knowledge of disease which supplies the indication—Aph. 5 to 15.
 - (d) Knowledge of medicines—Aph 19 to 21.
 - (e) Evaluation of Homoeopathic method from other methods of treatment—Aph 22 to 69.
 - (f) Summary—three conditions for cure—Aph. 70.
- B. Lectures on practical part of organon is to be divided into and taught under the following subjects :—
- (a) That is necessary to be known in order to cure the diseases and case taking method—Aph 71 to 104.
 - (b) The pathogenetic powers of medicine i.e. drug proving or how to acquire knowledge of medicine—Aph 105—145.
 - (c) How to choose the right medicine—Aph. 147, 148, 149, 150, 153, 155.
 - (d) The right dose—Aph. 157, 160, 161, 162, 163, 164, 169, 171, 173.
 - (e) Local disease—Aph. 186, 187 190, 191, 196, 197, 199, 201, 202, 203.
 - (f) Chronic diseases—Aph. 204, 206, 208.
 - (g) Mental diseases Aph. 200 to 230.
 - (h) Intermittent diseases—Aph. 231, 232, 236, 238, 240 to 242.
 - (i) Diet regimen and the modes of employing medicines—Aph. 245, 248, 252, 253, 256, 262, 263, 269, 270, 272, 275, 276, 280, 286, 289, 290, 291.

PRACTICAL

Practical application of knowledge of Organon :—

Clinical lectures both in an out patients departments examination of the patient from homoeopathic point of view :—

- (a) Disease determination
- (b) Disease individualisation.
- (c) Evaluation of symptoms
- (d) Gradation of symptoms
- (e) Selection of medicine
and potency and repetition of dose.

The value of symptoms

- (f) Disease aggravation or Homoeopathic Aggravation.

- (g) Miasmatic diagnosis.
- (h) Second prescription.
- (i) Prognosis after observing the action of the remedy.

III. B.H.M.S. Organon Examinations

At the III B.H.M.S. examination the written papers in Organon and Principles of Homoeopathy Philosophy shall be distributed as follows :—

Paper I—Introduction to organon (5th and 6th Editions)—Aphorism 1—294

Paper II—(i) History of Homoeopathic Medicine.
(ii) Homoeopathic Philosophy.
(iii) Chronic Diseases.

PATHOLOGY BACTERIOLOGY AND PARASITOLOGY

The teaching of pathology and bacteriology has to be done very cautiously and judiciously, while allopathy associates the pathology of tissues and micro-organisms with disease conditions and considers bacteria as conditioned causes of diseases, homoeopathy regards disease as purely a dynamic disturbance of the vital force expressed as altered sensations and functions which may or may not ultimate in gross tissue changes. The tissue changes are not therefore an essential part of the disease per se and are not accordingly in homoeopathy the object of treatment by medication.

2. Since the discoveries of Louis Pasteur and Robert Koch the medical world has come to believe in the simple dogma "kill the germs and cure the disease". But subsequent experience has revealed that there is an elusive factor called 'susceptibility' of the patient which is behind infection and actual outbreak of disease. As homoeopathy is mainly concerned with reactions of the human organism to different morbid factors, microbial or otherwise, the role of bacteria or viruses in the production of disease is therefore in homoeopathy quite secondary.

3. Knowledge of bacteriology is nevertheless necessary for a complete homoeopathic physician; but it is for purposes other than therapeutics such as for diagnosis, prognosis, prevention of disease and general management. Similarly knowledge of pathology is necessary for disease determination, prognosis, for discrimination between symptoms of the patient and symptoms of the disease and for adjusting the dose and potency of indicate homoeopathic remedy.

4. Only broad basic training in pathology, free from specialist bias, should however be imparted to students. Teachers of pathology should never lose sight of the fact that they are training medical practitioners, especially homoeopathic practitioners, and not technicians and specialists in pathology. The living patient, and not the corpus, should be the central theme in the teaching of this subject.

5. The purpose of the instruction in pathology is to enable the student to correlate subjective symptoms with the objective ones to interpret clinical symptoms

and their inter-relationship on the basis of underlying pathology.

Introduction : Scope of pathology—old school—new school (Homoeopathic). How to study pathology.

THEORETICAL

1. BACTERIOLOGY :

Morphology, biology, sterilisation, chemotherapy, principles of artificial media, infection, defence reaction, immunity, hypersensitivity, skin tests, systematic study of bacterial habits, importance—morphological, cultural, bio-chemical, serological and toxic behaviour of the common pathogenic and non-pathogenic species. Pathologic changes produced by diseases—bacteria and their laboratory diagnosis. Staphylococci, streptococci, diplococci, Neisseria, Mycobacterium tuberculosis (Types) micobacterium leprae, names and differentiation of spirochaetes from pathogenic mycobacteria, corynebacterium diphtherae. Aerobic spore bearing bacteria-bacillus anthracis, anaerobes, general and special features of the pathogens. Names of some important non-pathogens. Gram negative intestinal bacteria classification, identification of the pathogen salmonella, vibrio bacterium, pasteurella, general idea about haemophiles, pseudomonas, brucella, rickettsia, proteus, spirochaetes—general idea, details of treponema pallidum and leptospiraictero haemorrhagiae.

Viruses-general characters, classification of disease, immunological measures, against some important viruses disease, e.g. varicella, Rabies, Bacteriophage.

2. PARASITOLOGY :

Protozoa-classification names of important rhizopoda, ent. histolytica, morphology, pathogenesis and pathogenicity, diagnosis, differences from ent. coli sporozoa species of plasmodia life history and pathogenesis differentiation of species.

Mastigophora—general broad morphological features, classification, pathogenesis, vectors, pathology of Kalaazar important features source disease due to balantidium coli.

Helminths—definition of certain terms, simple classification differences between nematodes, cestodes and trematodes. Broad differentiating morphological features and broad life history and pathogenesis of important species of Cestodes and Nematodes-infecting liver, lungs, intestines and blood-general life differences between schistosomes and other trematodes.

3. Pathology :

(a) Principles of general pathology :

Injury, inflammation and repair, degenerations, cloudy swelling and post-mortem degeneration. Principles of fixation. Fatty changes, Lipoid degeneration, tumours Hyaline, mucoid and myloid degenerations, Necrosis and gangrene. Disturbances of pigment, calcium and uric acid metabolism. Avitaminosis. Anæmias. Disorders of growth metaplasia, unaplasia, atrophy, hypertrophy, erysipeloidous. Neoplasm classification benign and malignant, spread, cytological

factors, experimental carcinogenesis theories, circulatory disturbances, clothing, ischaemia, thrombosis, embolism, infarction, hyperaemia, oedema, shock.

(b) Pathology and special organs :

Morbid anatomy (Microscopic) in common disorders.

(c) Clinical and chemical pathology :

Blood—collection for different purposes. Estimation of haemoglobin, total count of R.B.Cs., platelets, M.C.H., M.C.V., M.C.H.C. significance, differential leucocyte count. Malaria-parasites, leishmania, trypanosomes in peri-ipheral blood, marrow or spleen puncture material, Development of R.B.C. and W.B.C. Leukaemia. Erythrocyte sedimentation rate, blood culture. Aldhyde and Chopra's test. Bleeding and coagulation time Prothrombin time.

Blood groups, Estimation of blood sugar. Sugar tolerance test. Liver function tests, specially bilirubin, vandenbergh's reaction, icterus index, fractional meal test.

Urine—estimation of urea, urea clearance test, water disease, urinary deposits, faeces, different ovarian differentiation bacillary dysentery. Amoebic desentary. Examination of throat swab, sputum, C.S.F. ascitic and pleural fluids.

Practical

Clinical and Chemical Pathology :

Estimation of haemoglobin (by acidometry)—Count of R.B.Cs. and W.B.Cs. staining of thin and thick films, differential counts and parasites.

Erythrocyte sedimentation rate, urine, physical, chemical microscopical, quantity of albumin and sugar, faeces—physical chemical (occult blood) and microscopical for ova and protozoa.

Methods of sterilisation, preparation of a media, use of microscope. Gram and acid fast stains. Motility preparation. Gram positive and negative cocci and bacilli. Special stains for corynebacterium-gram and acid fast stains of pus and sputum.

Haconkeys plate—sugar reactions-gram stain and motility of gram negative intestinal bacteria, widal and demonstration of pasturella and of spirochaetes by dark field illumination—Fentans's strain-Lovaditt's stain. Demonstration of Methods of nacobiosis.

Morbid Histology :

Practical training in methods of fixation, embedding, cutting and staining of paraffin and frozen sections. Grey hepatization, acute appendicitis, chronic appendicitis septic liver abscess. Granulation tissue, tuberculosis of lung, portal cirrhosis, fatty liver, malaciae liver atheroma, papilloma, fibro-adenoma, fibromyoma, squamous cell and basal cell carcinomas, adenocarcinoma, scirrhouss carcinoma, encephaloid carcinoma, secondary carcinoma in lymph gland, round and spindle—called sarcoma.

FORENSIC MEDICINE AND TOXICOLOGY

The subject is of practical importance to the students of homoeopathic medicine as homoeopathic

physicians are to be employed by Government in areas where they may have to handle medico-legal cases, perform autopsies, apart from giving evidence in such cases. The training in forensic medicine at present conducted is inadequate to meet these needs.

The course should consist of a series of lectures and demonstrations including—

1. Legal Procedure :

Definition of Medical Jurisprudence, courts and their jurisdiction.

2. Medical ethics :

Law relating to medical registration and medical relation between practitioner and the State. The Central Council of Homoeopathy Act, 1973 and the Code of Ethics under it, the practitioners and the patients, Malpractices covering professional secrecy, the practitioner and the various legislations (Acts) Provincial and Union such as Workman's compensation Act, Public Health Act, Injuries Act, Child Marriage Registration Act, Borstal Schools Act, Medical Termination of Pregnancy Act, Lunacy Act, Indian Evidence Act etc.

3. Forensic Medicine :

Examination and identification of persons living and dead ; Parts, Bones, stains etc. health : Medico-legal ; Post Mortem signs, stages and results ; putrefaction, mummification ; saponification, forms of death, causes, agencies, onset etc. Assaults, wounds, injuries and death by violence. Asphyxial death, blood examination, blood stains, seminal stains ; burns, scalds, lighting stroke etc. Starvation, pregnancy, delivery, abortion, Infanticide, sexual crimes, Insanity in relation to the State life and accident insurance.

Toxicology

A separate course of lectures dealing poisoning in general, the symptoms and treatments of various poisons, post-mortem appearance, and test should be given, study of the following poisons :—

Mineral Acid, corrosive sublimate arsenic and its compound alcohol, opium and its alkaloids, carbolic acid, carbon monoxide, carbon dioxide, Kerosene oil, cannabis indica, cocaine, belladonna, strychnine and nux vomica, aconite, oleander, snake poisoning, prussic acid, lead poisoning.

4. Medico legal post-mortem :

Recording post mortem appearance, forwarding materials to chemical examiner ; Interpretation of laboratory and chemical examiner's findings. Students who are attending a course of lecture in forensic medicine should avail themselves of all possible opportunities of attending medico-legal post-mortems conducted by the professors of forensic medicine. It is expected that each student should attend at least 10 post-mortems.

5. Demonstration :

- (1) Weapons,
- (2) Organic & Inorganic poisons,

- (3) Poisonous plants,
- (4) Charts, diagram, models, X-ray films etc. of medico-legal interest.

PREVENTIVE AND SOCIAL MEDICINE & FAMILY WELFARE

(Including Health Education and Family Medicine)

Instruction in this course should be given in the third year of medical studies by lectures, demonstrations and field studies. This subject is of utmost importance, and throughout the period of medical studies the attention of the student should be directed to the importance of preventive medicine and the measures for the promotion of positive health.

His function is not limited merely to prescribing homoeopathic medicines for curative purposes but he has a wider role to play in the community. He has to be well conversant with the national health problems both of rural as well as urban areas, so that he can be assigned responsibilities to play an effective role not only in the field of curative but also of preventive and social medicine including family planning.

1. Introduction to preventive and social medicine concept, man and society ; aim and scope of preventive and social medicine, social causes of disease and social problems of the sick. relation of economic factors and environment in health and disease.

2. Physiological hygiene—

Food and nutrition—food in relation to health and disease. Balanced diets. Nutritional deficiencies and nutritional survey. Food processing, pasteurisation of milk. Adulteration of food and food inspection.

Food poisoning.

(b) Air, light and sunshine.

(c) Effect of climate—Humidity temperature, pressure and other meteorological conditions—comfort zone, effect of over crowding.

(d) Personal hygiene—(Cleanliness, rest, sleep, work) Physical exercise and training care of health in topics.

3. Environmental sanitation :

(a) Definition and importance.

(b) Atmospheric pollution—purification of air, air sterilisation. Air borne diseases.

(c) Water supplies—sources and uses, impurities and purification. Public water supplies in urban and rural areas. Standards of drinking water, water borne diseases.

(d) Conservancy—Methods in villages, towns and cities, septic tanks, dry earth latrines—water closets. Disposal of sewage, disposal of the deceased, disposal of refuse, incineration.

(e) Sanitation of fairs and festivals.

(f) Disinfection—disinfectants, deodorants, anti-septics germicides. Methods of disinfection and sterilisation.

(g) Insects—Insecticides and disinfection—Insects in relation to disease. Insect control.

(h) Protozoal and helminthic disease—Life cycle of protozoa and helminths, their prevention.

5. Medical statistics :

Principles and elements of vital statistics.

6. Preventive medicine :

(a) General principles of prevention and control of communicable diseases. Plague, cholera, small pox, diphtheria, leprosy, tuberculosis, malaria, kala-zar, filariasis, common viral diseases e.g. common cold, measles, chicken pox, poliomyelitis, infective hepatitis, helminthic infections, enteric fever and dysenteries, also animal diseases transmissible to man. Their description and methods of preventive spread by contact, by droplet infection by environmental vehicles, (water, soil, food, insects, animals, foundries etc.) homoeopathic point of view regarding prophylaxis and vaccination.

Natural history of diseases.

7. Maternal and child health, school health services health education, mental hygiene—elementary principles ; school medicine its aim and methods.

8. Family Planning—Definition, channels of communication,, family planning programme, knowledge, attitudes regarding contraceptive practices. Population and growth control.

9. Public health administration and international health relation.

N.B.—Field demonstration—water purification plant, infectious diseases hospitals etc.

SURGERY INCLUDING HOMOEOPATHIC THERAPEUTICS

Where medicine fails surgery begins. Affection of external parts requiring mechanical skill properly belong to surgery; but frequently when the injury is so extensive or violent as to evoke dynamic reaction in the organism, dynamic treatment with remedies is necessary.

Surgery removes the end products of disease ; but pre and post operative treatment is essential to correct the basic dyscrasia and prevent sequelae or complications.

A large number of conditions being amenable to internal medication in homoeopathy, the scope of the latter is much wider and that of surgery is to that extent limited. But as a supplement to medicine, surgery has definite place in homoeopathy and should be taught accordingly.

- A. A course of systematic instructions in the principles of surgery.
- B. During the first three months of the clinical period when the students will not be in charge of beds, they will be given instructions of fundamentals of clinical examination including physical signs, the uses of common

- instruments, asepsis and antiseptics, dressing of wounds etc.
- C. Practical instructions in surgical method including physiotherapy.
- D. Practical instructions in minor operative surgery on the living.
- E. Instruction in the following subjects :
- (i) Radiology and electro-therapeutics and their application to surgery.
 - (ii) Venereal diseases.
 - (iii) Orthopaedics.
 - (iv) Dental diseases.
 - (v) Surgical diseases of infancy and childhood.
- F. As a matter of convenience, it is suggested that instructions may be given in the following manner during the two years of clinical course in surgery.

II. B.H.M.S.

1. General :

Applied anatomy and applied physiology, general surgical procedure. Inflammation. Infection-non-specific infections, specific infections, suppuration, bacteriology of surgical diseases, immunity, injuries, contusions, wounds, haemorrhage, shock, burns and scalds, tumours and cysts, injuries and diseases of skin and subcutaneous tissues, ulceration and gangrene, diseases of the blood vessels and lymphatic system, injuries of bones, injuries of joints, injuries of limbs. Injuries of the pelvis, diseases and tumours of bone and cartilage, diseases of joints, clinical manifestations of diseases of individual joints. Deformities of limbs. Amputation. Artificial limbs. Injuries and diseases of nerves, muscles, tendons, bursae.

2. General diseases.

3. Dental Surgery.

4. Lecture demonstrations on bandages and other surgical appliances.

III. B.H.M.S.

1. General :

Injuries and diseases of the scalp and skull, brain and its membrane, face, lips, mouth, jaws, tongue, salivary glands, neck, thyroid, parathyroid and thymus, breast, chest and thoracic viscera, spine, abdominal parietes and peritonium, stomach, duodenum, liver, gall bladder and bile ducts, pancreas and spleen, intestines rectum and anal canal. Intestinal obstruction, hernia, injuries and diseases of kidney, ureter, bladder, urethra and genitalia. Diseases of the suprarenal and the autonomic nervous system.

2. Otorhinolaryngology (E.N.T.) :

Knowledge of the common diseases and accidents of ear, nose and throat including tracheo-bronchial

tree and oesophagus with a knowledge of anatomy, physiology, pathology, treatment and simple operative measures.

3. Ophthalmology :

Clinical examination of the eye—subjective and objective elementary anatomy of the eye, Common diseases of the lids, lacrimal apparatus, conjunctivitis, cornea, sclera, iris, ciliary body and lens, glaucoma, orbital cellulitis, exophthalmos, Endophthalmos, Panophthalmitis, common diseases of the retina and the optic nerve, associated with general conditions. Injuries of the eye lids and eye ball. Elementary refraction of the eye. Squint Ophthalmoscopy, Common operations of the eye and its appendages.

4. Lecture demonstrations on X-ray.

5. Surgical diseases of infancy and childhood.

Note :

1. Throughout the whole period of the study, the attention of the student should be directed by the teachers of this subject to the importance of its preventive aspects.

2. Instructions in these branches of medicine should be directed to the attainment of sufficient knowledge to ensure familiarity with the common conditions, their recognition and homoeopathic treatment.

3. Every student shall prepare and submit 20 complete case histories, 10 each in the II & III B.H.M.S. classes respectively.

The written papers in Surgery shall be distributed as follows :—

Paper I

General Surgery :

Inflammation, specific and non-specific infections, haemorrhage, shock, burns, ulcer and gangrene. Tumours and cysts. Injuries and diseases of nervous, muscles, tendons and bursa, diseases of lymph, vascular system including spleen—

Head and neck surgery including surgery of thyroid, breast and congenital anomalies.

Abdominal surgery including gastrointestinal system. Bone and joint surgery. Injuries and diseases of spine.

Deformities of limbs.

Thoracic surgery and Homoeopathic therapeutics

Paper II

Otorhinolaryngology, general diseases, ophthalmology. Dental and Homoeopathic therapeutics and scope of surgery in Homoeopathy.

OBSTETRICS GYNAECOLOGY AND INFANT HYGIENE INCLUDING HOMOEOPATHIC THERAPEUTICS

Homoeopathy adopts the same attitude towards these subjects as it does towards medicine and surgery. But while dealing with obstetrical and gynaecological

cases, a homoeopathic physician must be trained in special clinical methods of investigation for diagnosing local conditions and discriminating cases, where surgical intervention either as a life-saving measure for removing mechanical obstacles is necessary.

The best time to eradicate familial dyscrasias in a woman or to purify the foetus of such dyscrasias which it may inherit during pregnancy; and this should be specially stressed.

Students should also be instructed in the case of the new-born. The fact that the mother and child from a single biological unit and that this peculiar close psychological relationship persists for at least the first two years of the child's life should be particularly emphasised.

A course of systematic instructions in the principles and practice of obstetrics and gynaecology and infant hygiene, including the applied anatomy and physiology of pregnancy and labour.

II. B.H.M.S. Course

Obstetrics.—Applied anatomy, development of the ovum. The foetus and appendages, pregnancy—normal pregnancy, prenatal care, introduction to abnormal pregnancy. Labour-normal, introduction to abnormal labour. Puerperium: normal puerperium; Post-natal care.

Gynaecology.—Applied anatomy and physiology, gynaecological examination. Developmental anomalies of the female generative organs; sex-hormones and disorders of function, menstrual anomalies; displacement.

Infant Hygiene.—Care of the new-born.

III. B.H.M.S. Course

Obstetrics.—Pregnancy-abnormal pregnancy, abortions, molar pregnancy, extra-uterine pregnancy disease of placenta and membranes, toxæmia of pregnancy. Antepartum haemorrhage. Disorders of genital tract retroversion, prolapso, tumours etc. Multiple pregnancies. Protracted gestation. Common disorders associated with pregnancy, labour, abnormal presentation and position, twins, prolapse of the cord and limbs. Abnormalities in the action of the uterus. Abnormal conditions of the soft parts. Contracted pelvis. Obstructed labour. Complications of the third stage of labour. Injuries of birth canal. Common obstetrical operation. Puerperium, abnormal puerperium. Infection. Other common disorders

Gynaecology—Inflammation, ulceration and traumatic lesions of the female genital organs. New growth, common gynaecological operations and radiotherapy.

Infant Hygiene.—Breast feeding—artificial feeding. Management of prematurity, asphyxia, birth injuries and common disorders of the new-born.

Note :

1. Throughout the whole period of the study the attention of the student should be directed by the

teachers of this subject to the importance of its preventive aspects.

2. Instructions in this branch of medicine should be directed to the attainment of sufficient knowledge to ensure familiarity with the common conditions, their recognition and treatment.

3. Every student shall prepare and submit 20 complete case histories, 10 each in the II and III B.H.M.S. classes respectively.

The written papers in Obstetrics and Gynaecology shall be distributed as follows :—

Paper I.—Obstetrics new born, infant hygiene homoeopathic therapeutics.

Paper II.—Gynaecology and Homoeopathic therapeutics.

MEDICINE INCLUDING HOMOEOPATHIC THERAPEUTICS

Homoeopathy has a distinct approach to disease. It recognises diseases neither by its prominent symptoms nor by those of any organ or part of the body. It treats the patient as a whole and the totality of the symptoms exhibited by him represents his disease. Merely the name of the condition from which he suffers most is thus of no significance to a homoeopath.

The basic principles of homoeopathy that it treats the patient and not his disease should be constantly impressed in the minds of the students, and it is only when this approach is firmly inculcated in them that they will be true homoeopaths.

Medicine is essentially a practical science and can be more learnt at the bed-side than in a class room. Care should therefore be taken to impart an intensive clinical training to the students during the later part of their study in the college.

- A. A course of systematic instructions in the principles and practice of medicine.
- B. During the first three months of the clinical period when the students will not be in charge of beds they will be given instructions on elementary methods of clinical examination including physical signs, the use of the common instruments like stethoscope, ophthalmoscope, etc.
- C. Instruction in Homoeopathic therapeutics and prescribing.
- D. As a matter of convenience, it is suggested that instructions may be given in the following manner during the II, III and IV B.H.M.S. classes in medicine.

II B.H.M.S.

Applied Anatomy and Applied physiology.

Diseases of the respiratory system.

Diseases of the digestive system and peritoneum.

Diseases of metabolism and deficiency diseases.

Diseases of blood, spleen and lymph glands.

Pulmonary tuberculosis.

Disorders of endocrine system.

Applied materia medica/homoeopathic therapeutics.

III & IV B.H.M.S.

Infectious diseases:

Diseases of the cardio-vascular system.

Diseases of the genito-urinary system.

Diseases of the locomotor system.

Diseases of skin including leprosy.

Psychological medicine.

Tropical diseases.

Diseases of infants and children.

Applied materia medica/homoeopathic therapeutics.

Note :

1. Throughout the whole period of the study the attention of the student should be directed by the teachers of this subject to the importance of its preventive aspects.

2. Instructions in these branches of medicine should be directed to the attainment of sufficient knowledge to ensure familiarity with the common conditions, their recognition and treatment.

3. Every student shall prepare and submit 20 complete case histories, 10 each in III and IV B.H.M.S. classes.

The written papers in Medicine shall be distributed as follows :—

Paper I :

Infectious diseases, Disorders of endocrine system, diseases of metabolism and deficiency diseases. Diseases of the digestive system and peritoneum. Diseases of respiratory system, diseases of blood, spleen and lymph glands and tropical diseases, Homoeopathic Therapeutics.

Paper II :

Diseases of locomotor system, diseases of cardiovascular system, diseases of urino-genital system, diseases of children, diseases of nervous system, psychological medicine, common skin diseases, Homoeopathic therapeutics.

HOMOEOPATHIC REPERTORY

Homoeopathic materia medica is an encyclopedia of symptoms. No mind can memorise all the symptoms of all the drug together with their characteristic gradation. The repertory is an index, a catalogue of the symptoms of the materia medica, neatly arranged in a practical form, and also indicating the relative gradation of drugs, and it greatly facilitates quick selection of the indicated remedy. It is impossible to practice homoeopathy without the aid of repertoires and the best repertory is the fullest. Homoeopathic materia medica and repertory are thus like twins.

It is possible to obtain the needed correspondence between drugs and disease conditions in a variety of ways and degrees and there are therefore different types of repertoires, each with its own distinctive advantages in finding the simillimum.

Case taking :

Difficulties of taking a chronic case. Recording of cases and usefulness of record keeping.

Totality of symptoms. Prescribing symptoms; uncommon peculiar and characteristic symptoms. General and particular symptoms. Eliminating symptoms. Analysis of the case uncommon and common symptoms. Gradation and evaluation of symptoms. Importance of mental symptoms. Kinds of sources of general symptoms. Concomitant symptoms.

1. History of repertoires.
2. Types of repertoires.
3. Demonstration of 3 cases worked on Boenninghausen.
4. Kent's repertory—advanced study with case demonstration.
5. Boger's Boenninghausen repertory—his contribution to repertory.
6. Card repertory with demonstration of 5 cases, and advantages of Card repertoires. Theoretical lectures with demonstrations.

PRACTICAL

Student are to repertoires :

- (i) 15 short cases on Kent.
- (ii) 10 chronic (long cases on Kent).
- (iii) 5 cases to be cross checked.

PART VI**Examination****FIRST B.H.M.S. EXAMINATION**

7. Admission to examination, scheme of examination, etc.—(i) Any undergraduate may be admitted to the First B.H.M.S. examination provided that he has

regularly attended the following courses of instructions in the subjects of the examination, theoretical and practical for not less than one and half years at a Homoeopathic College to the satisfaction of the head of such College.

The Courses of minimum number of lectures, demonstrations/practical/clinical classes/seminars etc. in the subjects shall be as shown below :—

Subjects	Theoretical	Number of lectures/ Demonstrations/ practical/tutorial classes.
*Introduction including	150 } *100 }	250 Hrs. 50 Hrs.
Materia Medical & Homoeopathic Philosophy	200 Hrs.	450 Hrs.
Anatomy	250 Hrs.	400 Hrs.
Physiology including Biochemistry	50 Hrs.	100 Hrs.
Homoeopathic Pharmacy		

*Students should be given introductory lectures on history of medicine in general with special reference to the emergence of Homoeopathy, contribution made by Hahnemann to medicine in general life of Hahnemann, the history of the development of Homoeopathy in India, various schools of thought in Homoeopathy and their critical evaluation, comparative study of fundamentals of various systems of medicine, introduction of basic medical science like Anatomy, Physiology, Pathology etc. their inter-relationship and relevance to the clinical subjects, importance of biochemistry and pathology in homoeopathic practice (as an illustration, a little exposure to the clinical materials) the outlines of homoeopathic philosophy, study of man as a whole both in health and disease, introduction to the philosophy of materia medica and its study with illustration by a few drug-pictures of importance commonly used drugs, integrated approach towards the medical, surgical and gynaecological diseases, acquaintance with pharmacological action of some of the commonly used modern drugs so as to give them idea about the iatrogenic disease caused by those modern drugs, an introduction to biostatistics, a brief study of logic, psychology and psychiatry, the role of a physician in the changing society, national health and family welfare needs and programmes of the country.

Greater emphasis should be laid on teaching of Homoeopathic Materia Medica with the help of drug pictures of important drugs and on the Homoeopathic Philosophy.

The First B.H.M.S. examination shall be held at 182 GI/83-8

the end of 18 months of First B.H.M.S. Course.

(ii) The examination shall be written, oral and practical.

(a) The examination in Homoeopathic pharmacy shall consist of one theoretical paper, one practical examination and one oral examination.

(b) The examination in anatomy shall consist of two theoretical papers, one practical examination and one oral examination.

(c) The examination in physiology shall consist of two theoretical papers, one practical examination and one oral examination.

(d) The examination in Materia Medica and Homoeopathic Philosophy shall consist of one theoretical paper and one oral examination.

Three hours shall be allowed for each theoretical paper in each subject.

(iii) A candidate securing 75% or above marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination in the first attempt.

(iv) In order to pass the first B.H.M.S. Examination a candidate must pass in all subjects of the examination.

(v) Pass marks in all subjects both homoeopathic and allied medical subjects shall be 50% in each part (written, oral and practical).

(vi) Full marks for each subject and the minimum number of marks required for passing are as follows :—

Subjects	Written		Oral		Practical		Total	
	Full Marks	Pass Marks						
Pharmacy	100	50	50	25	50	25	200	100
Anatomy	200	100	100	50	100	50	400	200
Physiology & Biochemistry	200	100	100	50	100	50	400	200
Materia Medical & Homœopathic Philosophy (20 Polychrest drugs will be expected from Appendix I, In Organon Aphorism 1—145)	100	50	50	25	200	100

SECOND B.H.M.S. EXAMINATION

8. (i) No candidate shall be admitted to the II B.H.M.S. examination unless :—

- (a) He has passed the First B.H.M.S. examination at least one year previously ; and
- (b) has regularly attended the following courses of instructions, theoretical and practical in

the subjects of the examination over a period of at least one year in a recognised Homœopathic College subsequent to his passing the First B.H.M.S. examination to the satisfaction of the head of the College.

(ii) Courses of the minimum number of lectures, demonstrations and practical/clinical classes in the subjects shall be shown as below :—

Subjects	Theoretical	Practical/clinical/ tutorial classes
Pathology, bacteriology and parasitology	150	50
Forensic medicine & Toxicology	50	20
Social and preventive medicine (including health education and family medicine)	150	100
Materia Medica	50	70
Organon and Homœopathic Philosophy	125	100

(iii) The Second B.H.M.S. Examination shall be held at the end of 2½ years of B.H.M.S. Course.

(iv) The examination shall be written, oral, practical and/or clinical as provided hereinafter, three hours being allowed for each paper.

(v) The examination in pathology, bacteriology and parasitology shall consist of one theoretical paper, one practical examination and one oral examination including questions of microscope and microscopic specimens.

(vi) The examination in social and preventive medicine including health education and family medicine shall consist of one theoretical paper, one oral examination and one spotting and identification of specimens.

(vii) The examination in forensic medicine and toxicology shall consist of one theoretical paper one oral examination and one identification and spotting of specimens.

(viii) The examination in Homœopathic Materia Medica shall consist of one theoretical paper, one practical and one oral examination.

(ix) The examination in organon shall consist of one theoretical paper, one oral and practical examination.

(x) The candidate securing 75 per cent or above marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination in the first attempt.

(xi) In order to pass the Second B.H.M.S. examination, a candidate shall have passed in all subjects or the examination.

(xii) Pass marks in all subjects, Homœopathic and allied medical subjects shall be 50% in each part (written, oral and practical).

(xiii) Full marks for such subjects and the minimum number of marks required for passing are as follows :—

Subject	Written		Oral		Practical		Total	
	Full Marks	Pass Marks						
Pathology	100	50	50	25	50	25	200	100
Forensic Medicine & Toxicology	100	50	50	25	50	25	200	100
Social and Preventive Medicine (including education and family medicine)	100	50	50	25	50	25	200	100
Materia Medica	100	50	50	25	50	25	200	100
Organon & Homœopathic Philosophy	100	50	50	25	50	25	200	100

THIRD B.H.M.S. EXAMINATION

9. (i) No candidate shall be admitted to the Third B.H.M.S. examination unless :

- (a) he has passed the Second B.H.M.S. examination at least one year previously ; and
- (b) has regularly attended the following courses of instructions, theoretical and practical in

the subjects of examination over a period of at least two years in a Homoeopathic College subsequent to his passing the First B.H.M.S. examination to the satisfaction of the head of the College.

(ii) The Courses of minimum number of lectures, demonstrations and practical/clinical classes in the subjects shall be as shown below :—

Subjects	Theoretical	Practical/clinical/tutorial classes
1. Surgery, including E.N.T., Eye, Dental and Homoeopathic Therapeutics	200 (in two years)	150—Two terms of 3 months each in surgical ward & OPD.
2. Obstetrics and Gynaecology, infant hygiene and Homoeo. therapeutics	200 (in two years)	150—Two terms of 3 months homoeopathic therapeutics each in Obs. and Gyn. ward and OPD.
3. Materia Medica	200 (in two years)	75
4. Organon of Philosophy	250 (in two years)	100

(iii) The Third B.H.M.S. examination shall be held at the end of 3½ years of B.H.M.S. course.

(iv) The examination shall be written, oral, practical and/or clinical as provided hereinafter, three hours being allowed for each paper.

(v) The examination in surgery shall consist of two theoretical papers, one oral examination and one clinical examination not less than one hour being allowed to each candidate for the examination of and report on his cases with special reference to the scope of Homoeopathic therapeutics vis-a-vis the necessity of surgical treatment in the particular case.

(vi) A practical examination in which questions on the use of surgical instruments and other appliances shall form special part.

(vii) The examination in obstetrics, gynaecology and infant hygiene including diseases of new-born shall consist of two theoretical papers, one oral examination including questions on pathological specimens, models and X-ray films including question on instruments and appliances and one clinical examination of not less than one hour being allowed to the candidate for the examination and report on his cases (one obstetric and gynaecological case) with special reference to both nosological and therapeutic diagnosis from Homoeopathic point of view.

(viii) The examination in Materia Medica shall consist of one theoretical paper, one oral examination and one bedside practical examination of 2 short cases not less than half an hour being allowed for examinations of and report on each case.

(ix) The examination in organon shall consist of two theoretical papers, one oral examination and one bed-side practical examination of one long case in the application of the tenets of the organon in case taking evaluation of symptoms and guidelines of treatment not less than 2 hours being allowed for examinations of an report of each case.

(x) A candidate securing 75 per cent or above marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination in first attempt.

(xi) In order to pass Third B.H.M.S. examination a candidate shall have passed in all subjects of the examination.

(xii) Pass marks in all subjects both homoeopathic and allied medical subjects shall be 50% in each part (written, oral and practical).

(xiii) Full marks for each subject and minimum number of marks required for passing are as follows :—

Subject	Written		Oral		Practical		Total	
	Full Marks	Pass Marks						
Surgery	200	100	100	50	100	50	400	200
Obstetric & Gynaecology	200	100	100	50	100	50	400	200
Organon and Homoeopathic Philosophy	200	100	100	50	100	50	400	200
Materia Medica	100	50	100	50	100	50	300	150

FOURTH B.H.M.S. EXAMINATION

10. (i) No candidate shall be admitted to the Fourth B.H.M.S. examination unless :—

- (a) he has passed the Third B.H.M.S. examination at least one year previously ; and
- (b) has regularly attended the following courses of instructions, theoretical and practical in

the subject of the examination over a period of at least three years in a recognised Homoeopathic College subsequent to his passing the First B.H.M.S. examination to the satisfaction of the head of the College.

(ii) Courses of the minimum number of lectures, demonstrations and practical/clinical classes in the subjects shall be as shown below :—

Subjects	Theoretical	Practical/clinical/tutorial classes
1. Practice of medicine	250 (in 3 yrs.)	400 (3 terms of 3 months each in homoeopathic ward & OPD including children mental and skin, diseases depts.)
Children diseases	40	
Mental diseases and	40	
Skin diseases	20	
including homoeopathic therapeutics		
2. Homoeopathic Materia Medica	200 (in one yr.)	125
3. Repertory	100 (in 3 yrs.)	150

(iii) The Fourth B.H.M.S. examination shall be held at the end of 4½ years of B.H.M.S. Course.

(iv) The examination shall be written, oral, practical or clinical as provided hereinafter, three hours being allowed for each paper.

(v) The examination in medicine, (including children, mental and skin) shall consist of two papers, one oral examination and one bed-side practical examination in case taking of two short cases with a view to determining both nosological and therapeutic diagnosis from the Homoeopathic point of view. Time allotted shall be half an hour for each case.

(vi) The examination in Materia Medica shall consist of two theoretical papers, one oral examination and one bed-side practical examination, not less than two hours being allowed for examination and report on his case.

(vii) The examination in Repertory shall consist of one theoretical paper, one oral examination and one practical examination in two cases of repertorial work. Time allotted shall be half an hour for each case.

(viii) A candidate securing 75 per cent or above marks in any of the subjects shall be declared to receive honours in that subject provided he has passed the examination in first attempt.

(ix) In order to pass Third B.H.M.S. examination a candidate shall have passed in all subjects of the examination.

(x) Pass marks in all subjects, both homoeopathic and allied medical subjects shall be 50 per cent in each subject.

(xi) Full marks for each subject and minimum number of marks required for passing are as follows :—

Subject	Written		Oral		Practical		Total	
	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks	Full Marks	Pass Marks
Medicine	200	100	100	50	100	50	400	200
Homoeopathic Materia Medica	200	100	100	50	100	50	400	200
Repertory	100	50	50	25	50	25	200	100

11. Results and readmission to examination.—(i) Every candidate for admission to an examination shall 21 days before the date fixed for the commencement of the examination send to the authority concerned his application in the prescribed form alongwith the examination fee.

(ii) As soon as possible after the examination the examining body shall publish a list of successful candidates arranged in the following manner :—

- (a) the names and roll numbers of the first ten candidates in order of merit, and

(b) the roll numbers of others arranged serially.

(iii) Every candidate on passing shall receive a certificate in the form prescribed by the examining body concerned.

(iv) A candidate who appears at the examination but fails to pass in a subject or subjects may be admitted to a supplementary examination in the subject or subjects of that part of the examination in which he has failed after six weeks from the publication of result of the first examination on payment of the pres-

cribed fee alongwith an application in the prescribed form.

(v) If a candidate obtains pass marks in the subject or subjects at the supplementary examination he shall be declared to have passed at the examination as a whole.

(vi) If such a candidate fails to pass in the subject or subjects at the supplementary examination he may appear in that subject or subjects again at the next annual examination on production of a certificate (in addition to the certificate required under the regulations) to the effect that he had attended, to the satisfaction of the Principal, a further course of study during the next academic year in the subject or subjects in which he had failed, provided that all the parts of the examination shall be completed within four chances (including the supplementary one) from the date when the complete examination came into force for the first time.

(vii) If a candidate fails to pass in all the subjects within the prescribed four chances, he shall be required to prosecute a further course of study in all the subjects and in all parts for one year to the satisfaction of the head of the college and appear for examination in all the subjects.

Provided that if a student appearing for the IV B.H.M.S. examination has only one subject to pass at the end of prescribed chances, he shall be allowed to appear at the next examination in that particular subject and shall complete the examination with this special chance.

(viii) All examinations shall ordinarily be held on such dates, time and places as the examining body may determine.

(ix) The examining body may, under exceptional circumstances, partially or wholly cancel any examination conducted by it under intimation to the Central Council of Homoeopathy and arrange for conducting re-examination in those subjects within a period of thirty days from the date of such cancellation.

12. Examiners.—(i) No person other than the holder of a Diploma obtained after 4 years of study or a Degree in Homoeopathy or a person possessing qualification included in the Third Schedule shall be appointed as an internal or external examiner or paper-setter for the conduct of a professional examination for the B.H.M.S. (Degree) any course.

Provided that—

(a) no such person shall be appointed as an internal examiner unless he has at least three years' teaching experience in the subject;

(b) no person below the rank of Reader/Assistant Professor in the subject of a Degree level institution shall be appointed as an internal examiner;

(c) no person shall be appointed as an external examiner in any allied medical subject unless

he possesses a recognised medical qualification as required for appointment to a relative teaching post in accordance with Annexure B, of the Homoeopathy (Minimum standard of Education) Regulation, 1983;

(d) external examiners shall be appointed only from the teaching staff of recognised Homoeopathic College and Colleges of Modern Medicine;

(e) not more than one-third of the total number of external examiners shall be from amongst practitioners in Homoeopathy or Modern Medicine who, in the opinion of the examining body are practitioners of repute and who have obtained a Homoeopathic qualification or a medical qualification recognised under the Indian Medical Council Act, 1956;

(f) persons in Government employment may also be considered for appointment as external examiners provided they possess a medical qualification as specified in sub-regulation (e) above;

(g) a paper-setter may be appointed as an internal or external examiner.

(ii) The examining body may appoint a single moderator or moderators not exceeding three in number for the purpose of moderating question papers.

(iii) Oral and practical examinations shall as a rule be conducted by the respective internal and external examiners with mutual co-operation. They shall each have 50 per cent of the maximum marks out of which they shall allot marks to the candidates appearing at the examination according to their performance and the marks-sheet so prepared shall be signed by both the examiners. Either of the examiners shall have the right to prepare sign and send mark-sheets separately to the examining body together with his comments. The examining body shall take due note of such comments but it shall declare results on the basis of the marks-sheets.

(iv) Every Homoeopathic College shall provide all facilities to the internal and external examiners for the conduct of examinations, and the internal examiners shall make all preparations for holding the examinations.

(v) The external examiner shall have the right to communicate to the examining body his views and observations about any shortcomings or deficiencies in the facilities provided by the Homoeopathic College.

(vi) He shall also submit a copy of his communication to the Central Council for such action as the Central Council may consider fit.

Dr. P. L. VERMA, Secy.
Central Council of Homoeopathy.

